नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला

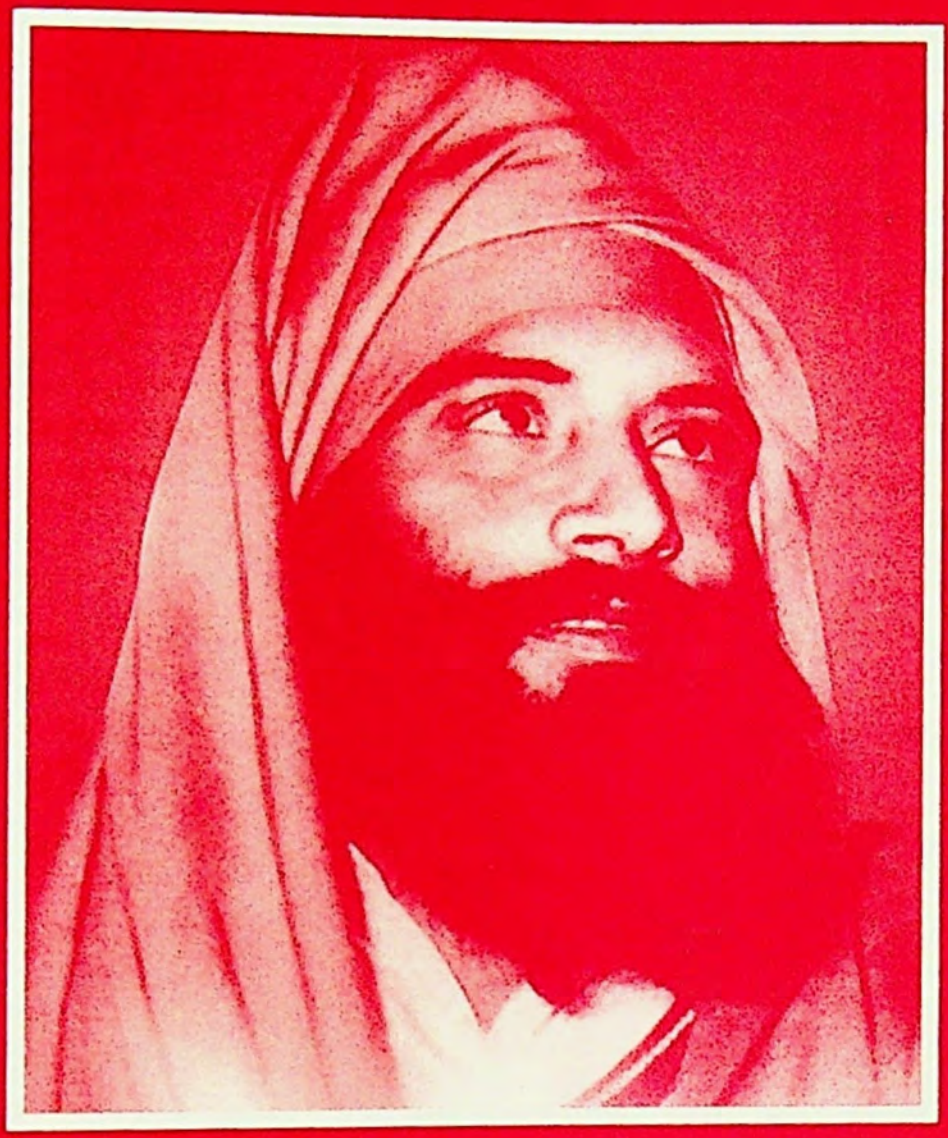

जीवनी

सतगुरू महाराज दर्शन दास जी

महाराज तरलोचन दास जी

धन दर्शन

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला

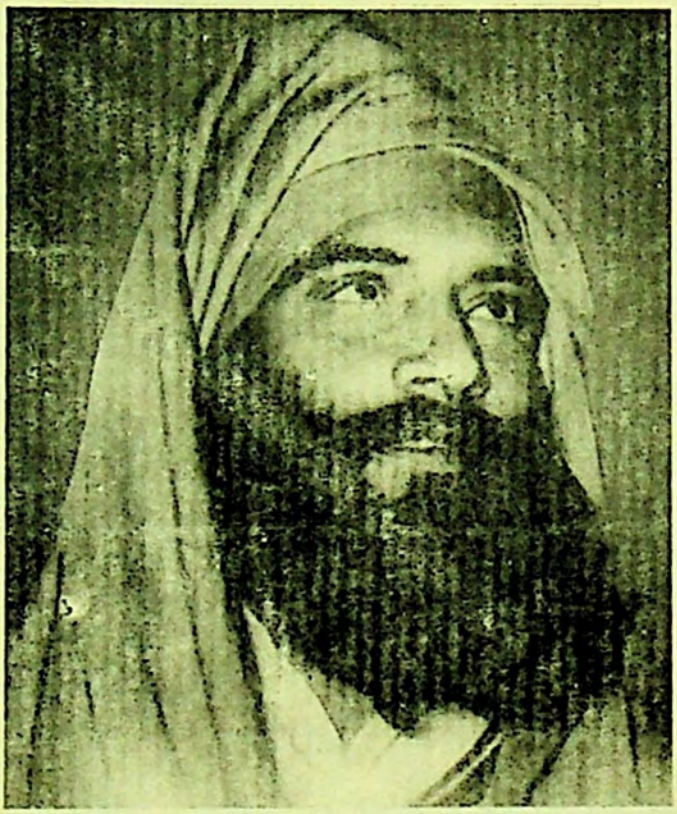

जीवनी:

सतगुरु महाराज दर्शन दास जी

प्रकाशक एवम् वितरक

सचखण्ड नानक धाम

इन्द्रापुरी, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण फरवरी 2008
दूसरा संस्करण फरवरी 2010
तीसरा संस्करण फरवरी 2011

जीवनी:
सतगुरु महाराज दर्शन दास जी

विषय-सूची

भूमिका 5

भाग-प्रथम

जीवन:
सतगुरु महाराज दर्शन दास जी 8

भाग-द्वितीय

रहमत के सागर से.....

कुएँ में गिरी भैंस को निकालना 58
परी को मृत्यु लोक से मुक्ति 60
अनाज के संग्रह पात्र को वरदान 63
टंकी में फूंक मार कर मोटर साइकिल चलाना 65
ससुराल में सेवकों को खाना खिलाना 67
सरबजीत के स्थान पर स्वयं हाजरी भरना 69
रुह का पलटाना 72
मुर्दे को जीवन दान 74
जन्म-मरण से मुक्ति 77
बॉब को अपाहिज होने से बचाना 80
जार्ज बाबा जी का दु:ख काटना 82
पूर्ण महापुरुष के रुप में मिलना 84

पानी से गाड़ी चलाना	87
अँगुली के इशारे से पैट्रोल डालना	89
प्रत्यक्ष प्रमाण	90
अन्तर्यामी	92
मार्ग दर्शक	97
अनाथों के नाथ	102
परीक्षा से एक दिन पहले प्रश्न पत्र का दिखाना	104
अन्तर की आवाज को जानने वाले	107
आकाश मण्डल से प्रसाद का मिलना	109
स्टोव के बहाने दुःख दूर करना	111
औलाद का सुख मिला	115
सेवा करवा कर हमारा मुकद्दर बदलना	117
मुसीबत में आर्थिक मदद करना	123
झूठ बोलने की सज़ा	127
रूमाल से डैडी का दर्द ठीक किया	129
घर का सामान गिन कर बता देना	132
अपनी मशहूरी से परहेज करना	141

भूमिका

लम्बे समय से संगत की ओर से यह माँग की जा रही थी कि एक ऐसी पुस्तक तैयार की जाए जिसमें सतगुरु महाराज दर्शन दास जी के जीवन का वर्णन किया गया हो और सतगुरु महाराज दर्शन दास जी ने अपने जीवन में जो बेअन्त लीलाएं कीं, उन्हें लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाए। इसी माँग को पूर्ण करने के लिए महाराज तरलोचन दर्शन दास जी ने उद्यम किया जिसके परिणाम स्वरूप "जीवन वृतांत: सतगुरु महाराज दर्शन दास जी" नामक यह पुस्तक संगत को समर्पित है।

सतगुरु महाराज दर्शन दास जी का यह जीवन वृतांत उनके जन्म से ले कर देहावसान तक का विवरण मात्र नहीं है अपितु यह उनके 34 वर्षो के जीवन के वे अनमोल क्षण हैं जो उन्होंने लोगों की भलाई व सरबत के भले के लिए समर्पित किए तथा अपने जीवन के एक एक पल का त्याग किया।

इस पुस्तक के प्रथम भाग में हुजूर महाराज तरलोचन दर्शन दास जी ने यह वर्णन किया है कि सतगुरू महाराज दर्शन दास जी परमात्मा के घर से आई शक्ति थे तथा उनका इस धरती पर आने का एक खास मकसद था। इसी मकसद के अधीन उन्होंने सचखण्ड नानक धाम की स्थापना की। सतगुरु महाराज दर्शन दास जी ने "दास धर्म" की स्थापना कर व "यशवन्ती निराधार धाम पहला" के रुप में वाणी की रचना कर अपने महापुरुष होने का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है।

परन्तु ऐसे पूर्ण महापुरुष की पहचान करना साधारण जीवों के लिए सम्भव नहीं है क्योंकि साधारण जीवों की बुद्धि तो केवल

सांसारिक सोचों तक ही सीमित होती है। पूर्ण महापुरुष इस सांसारिक सोच को समाप्त करके जीवों में ईश्वरीय सोच पैदा करते हैं और उन्हें ईश्वरीय मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। इसलिए वह ऐसी लीलाएं अथवा कौतुक करते हैं ताकि हमें यह पता चल जाए कि वह ईश्वर का ही रुप हैं तथा विषय विकारों में सड़ रही जीवात्माओं को सुधार कर ईश्वरीय मार्ग पर चलाने का मकसद लेकर वे धरती पर आए हैं। सतगुरु महाराज दर्शन दास जी ने अपने जीवन के 34 वर्षों में इतनी लीलाएं कीं, इतने कौतुक किए व इतनी रहमत बाँटी कि यदि उन्हें प्रकाशित किया जाए तो अनेक ग्रन्थ तैयार हो सकते हैं। हुजूर महाराज तरलोचन दर्शन दास जी ने सतगुरु महाराज दर्शन दास जी की रहमतों के अथाह सागर में से कुछ मोती दृष्टांतों के रूप में एकत्रित किए हैं। ये दृष्टांत सेवकों की आप बीती घटनाएँ व अपने मुर्शिद की कभी न भूलने वाली यादें हैं जो अब तक उन्होंने अपने दिल में सम्भाल कर रखी हैं। यही दृष्टांत पाठकों के समक्ष लिखित रुप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

जिन सेवकों ने यह दृष्टांत हुजूर महाराज तरलोचन दर्शन दास जी के समक्ष सुना कर इस पुस्तक को तैयार करने में सहयोग दिया है हम उन सेवकों के अति आभारी हैं। इन दृष्टांतों का वर्णन करने में यदि कोई भूल हो गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं।

अन्त में समस्त साध संगत के चरणों में निवेदन है कि यदि सतगुरु महाराज दर्शन दास जी की कोई रहमत उन्हें प्राप्त हुई हो या महाराज जी का कोई कौतुक उन्होंने देखा हो तो वे सम्पादक मंडल से सम्पर्क करें ताकि भविष्य में उसे पुस्तक के आगामी अंकों में सम्मलित किया जा सके।

-दास परमजीत-

-सम्पादक-

सचखण्ड नानक धाम

भाग प्रथम

जीवनी:
सत्गुरु महाराज दर्शन दास जी

8

ईश्वरीय शक्तियाँ प्रत्येक युग में भिन्न-भिन्न रूप धारण करके धरती पर अवतरित हुई हैं और ईश्वरीय संदेश बाँटती रही हैं। कलयुग में भी ये शक्तियाँ सन्त-महात्माओं के रूप में प्रकट हुई। इन महापुरुषों ने अलग-अलग देशों में, अलग-अलग समय में तथा भिन्न-भिन्न भाषाओं में लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया। इसी प्रकार पंजाब के बटाला शहर में जाट ब्राह्मण परिवार में एक ईश्वरीय शक्ति हुजूर महाराज दर्शन दास जी के रूप में प्रकट हुई।

-श्री जगन्नाथ जी व श्रीमती चन्नण देई जी-

बटाला शहर में श्री जगन्नाथ जी अपनी पत्नी श्रीमती चन्नण देई जी के साथ सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। दोनों ही जीव धार्मिक विचारों वाले थे। जहाँ कहीं भी कोई साधू या सन्त

प्रवचन कर रहे होते तो श्री जगन्नाथ जी वहाँ अवश्य जाते और यदि अवसर मिलता तो वे साधू-सन्तों से अध्यात्मिक मनन भी करते। श्री जगन्नाथ जी हलवाई का काम करते थे और वे दूर-दूर के गाँवों में शादियों में पकवान बनाने के लिए जाते थे। श्री जगन्नाथ जी की यह खास खूबी थी कि वे जिस शादी में पकवान बनाने जाते तो वहाँ जिस बहु-बेटी की शादी होती उसे शगुन के तौर पर कुछ रुपए-पैसे अवश्य देते थे। यहाँ तक कि यदि उन्हें रास्ते में भी कोई डोली जाती हुई मिलती तो वे उसे रुकवा कर दूल्हन को शगुन के रूप में कुछ रुपए या पैसे अवश्य देते। यदि कोई जरुरतमन्द उनसे सहायता माँगने आता तो वे उसकी हर सम्भव मदद अवश्य करते थे और मदद करके कभी एहसान नहीं जताते थे। उनका यह स्वभाव अन्त तक रहा। दूसरी ओर पूजा-पाठ करना, मुहल्ले में कहीं भी भजन-कीर्तन हो तो उस में भाग लेना और घर आए साधुओं की सेवा करना श्रीमती चन्नण देई जी के जीवन का अहम हिस्सा बन चुका था। अपने पिछले जन्मों की भक्ति से अनजान दोनों जीव सद्कर्म कमाने में लगे हुए थे। ईश्वरीय शक्तियाँ भी उन लोगों के घरों में ही प्रकट होती हैं जिनके कर्म बहुत ही उत्तम हों।

एक बार की बात है कि रुपये के लेन-देन के सिलसिले में श्री जगन्नाथ जी को आगरा जाना पड़ा। जब वे आगरा से वापस आ रहे थे तो उनके कानों में एक आवाज़ पड़ी,"भगत जी, भगत जी।" जब उन्होंने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई तो देखा कि सड़क की दूसरी ओर एक महात्मा जी बैठे थे और उन्हे इशारे से अपने पास बुला रहे थे। श्री जगन्नाथ जी सड़क पार करके उस महात्मा के

पास पहुँचे व हाथ जोड़कर नमस्कार किया। नमस्कार करके वे महात्मा के चरणों के पास बैठ गए। महात्मा ने आशीर्वाद देकर कहा कि मैं आपके मस्तक का नूर देखकर आपके भविष्य के बारे में आपको कुछ जानकारी देना चाहता हूँ। मेरे ज्ञान के अनुसार आपके प्रारब्ध व पूर्व जन्मों की भक्ति के कारण आपके घर में बहुत बड़ी ईश्वरीय शक्ति प्रकट होने वाली है जिसका समय निकट आ गया है। वह शक्ति सर्व-कला समर्थ होगी जो दुनिया का भला करेगी और चहुँ ओर उसकी जय-जयकार गूँजेगी। वह आपका नाम रोशन करेगा। आगे महात्मा जी ने कहा कि आप उस बच्चे को कभी भी झिड़की मत देना और न ही किसी का जूठा खिलाना। यदि मेरे भाग्य में हुआ तो मैं भी उसके दर्शनार्थ आपके घर आऊँगा। इतना सुनकर श्री जगन्नाथ जी ने अपनी नेक कमाई में से कुछ पैसे निकालकर उस महात्मा के चरणों में अर्पण किए और नमस्कार कर अपने परिवार की सुख-शान्ति व उन्नति का आशीर्वाद माँगकर घर जाने की आज्ञा ली और वापिस घर की ओर चल पड़े।

जब घर पहुँचे तो महात्मा की कही हुई सारी बातें उन्होंने अपनी पत्नी को भी बताई। उनकी बात सुनकर श्रीमती चन्नण देई ने कहा कि उस महात्मा की बातों में मुझे सच्चाई नज़र आती है क्योंकि जबसे मैं गर्भवती हुई हूँ तब से ही मुझे अपने पलंघ के सामने वाली दीवार पर रोजाना दैवीय शक्तियों के दर्शन होते हैं और यह शक्तियाँ मुझसे कहती हैं कि देवी अपनी झोली फैलाओ, हमने तुम्हें खैर डालनी है। अब दोनों जीव सोच में पड़ गए कि यह हमारे साथ क्या घटित हो रहा है? अब पति-पत्नी खूब नाम

सुमिरन की कमाई करने लगे।

समय गुज़रता गया और उनके घर में खुशी का अवसर आया। 7 दिसम्बर, 1953 के दिन माता चन्नण देई जी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह बच्चा देखने में साधारण बच्चा नहीं था। उसका मुख-मंडल आलौकिक नूर से प्रकाशमान था और सिर पर जटाएँ थी। बच्चे का यह अनोखा रूप देख कर माता-पिता के दिमाग में उस महात्मा के कहे हुए वचन गूँजने लगे। महात्मा के कहे अनुसार बालक ईश्वर का नूर ही प्रकट हुआ और माता-पिता ने उसका नाम दर्शन रखा। दोनों जीव ईश्वर की रज़ा मान कर उस बालक का लालन-पालन करने में जुट गए। बालक दर्शन के बाद उनके घर में दो पुत्रीयों का जन्म हुआ। बड़ी लड़की का नाम उन्होंने दर्शना और छोटी का नाम सत्या रखा।

समय बीतता गया और बालक दर्शन पाँच वर्ष का हो गया। माता-पिता भी बच्चों की देख-भाल में इतने व्यस्त हो गए कि उस महात्मा के वचन उनके दिमाग से निकल गए। परन्तु आलौकिक शक्तियाँ पर्दे में कैसे रह सकती हैं? जब बालक दर्शन पाँच वर्ष का हुआ तो एक अद्भुत कौतुक घटित हुआ। बालक दर्शन घर के बाहर खड़े थे व माता जी भी पास ही बैठी थी। गली में से गुज़र रही एक साधुओं की टोली बालक दर्शन के पास पहुँची और उनके चरणों पर माथा टेक दिया। माता जी यह देख कर बहुत ही हैरान हुई। उन्होंने अपने स्वभाव के अनुसार साधुओं को पैसे या आटा आदि की भेंट देनी चाही तो साधु कहने लगे, "देवी, हमें तुमसे कुछ नहीं चाहिए, हम जो लेने आए थे वह हमें मिल गया है।" फिर उन्होंने कहा कि जिसने तेरे घर में जन्म लिया है

वह परमात्मा के घर से आई बहुत बड़ी शक्ति है इसकी सम्भाल करना तथा इसे प्रेमपूर्वक पालना। माता जी को ऐसा लगा जैसे आकाश-मंडल से देवता गण उनके पुत्र की चरण धूल लेने आये हों। इस घटना ने माता-पिता को फिर से विचार मग्न कर दिया कि हमारे साथ यह क्या घटित हो रहा है? समय-समय पर ऐसे कई और कौतुक होते रहे जिनसे माता-पिता को यह आभास होता रहा कि उनका पुत्र कोई साधारण बालक नहीं है। बालक दर्शन का स्वभाव भी साधारण बच्चों जैसा नहीं था। माता-पिता के समक्ष वह कोई भी ज़िद न करते जो माता जी बना देती, खा लेते, जो पहनने को मिलता, पहन लेते।

-बालक दर्शन-

जब बालक दर्शन पाँच वर्ष के हुए तो आपको प्रारम्भिक शिक्षा के लिए आपके माता-पिता ने घर के सामने ही सरकारी स्कूल में दाखिल करवा दिया। पढ़ने में आप बहुत मेधावी थे। एक बार जो पढ़ लेते आप कभी न भूलते।

एक दिन सुबह के समय आप घर की छत पर पतंग उड़ा रहे थे कि आप के सिर पर चोट लगने से गहरा घाव हो गया। काफी खून बह गया परन्तु आपने अपने माता-पिता को कुछ भी न बताया व चुपचाप दर्द सहन कर लिया। शाम के समय जब आप

अपने ताया जी के घर जानवरों के लिए चारा कुतरने के लिए गए तो ताया जी ने आपके सिर का ज़ख्म देख लिया और आपको अचली गेट स्थित एक डाक्टर के पास ले गये। डाक्टर ने जब आपके सिर का ज़ख्म देखा तो हैरान होकर पूछा, "बेटा, तुम इतनी छोटी सी आयु में इतना दर्द कैसे सहन कर गये?" आपने बड़ी ही मासूमियत से कहा कि मेरे माता-पिता बहुत गरीब हैं, मैं नहीं चाहता था कि मेरे इलाज के लिए उनके पैसे खर्च हों। यह चोट मेरी गलती से ही मुझे लगी है इसलिए मैंने यह दर्द सहन किया। दूसरी बात यह है डाक्टर साहिब! यह दर्द तो कुछ भी नहीं है भविष्य में पता नहीं दुनिया के कितने बड़े बड़े दुःख मुझे इस शरीर पर सहन करने पड़ेंगे। आप की बातें सुन कर डाक्टर को ऐसा लगा कि यह कोई साधारण बालक नहीं है वरन् कोई अद्भुत शक्ति है।

अब बालक दर्शन की आयु 14 वर्ष की हो गई। चेहरे पर एक अनोखा जलाल, आँखों में अजीब सी कशिश, ऊँचा लम्बा कद और फौलाद सा डील डौल। पिता जगन्नाथ जी को कुश्ती का बहुत शौक था और यही शौक उन्होंने बालक दर्शन में भी पैदा कर दिया। बालक दर्शन सुबह जल्दी उठ कर शरीर की मालिश करके कुश्ती का अभ्यास करते। फिर घर में जो पशु रखे थे उनके चारे के लिए खेत में से चारा काट कर लाना, ताया जी के घर जा कर चारा मशीन में कुतरना आपकी दैनिक दिनचर्या थी। इतना परिश्रम करने के कारण आपका शरीर काफी तगड़ा हो गया था।

एक दिन की बात है कि आप खेत में चारा काट रहे थे। उस दिन चारा कुछ अधिक ही काट लिया जिससे गठरी काफी बड़ी हो

गई। जिस समय आप गठरी बाँध रहे थे उस समय श्वेत कपड़ों में घोड़े पर सवार ईश्वरीय शक्ति आपके पास आकर खड़ी हो गई। आपने नज़रें उठाकर उनकी ओर न देखा और चुपचाप गठरी उठाने लगे। घुड़सवार ने आवाज़ दी, "पुत्र, गठरी उठाने में हम तुम्हारी कुछ सहायता करें?" अपने शर्मीले स्वभाव के कारण आप कुछ भी न बोले और जोर लगा कर गठरी सिर पर उठा ली। दो कदम की दूरी पर ही कुछ ईंटें पड़ी थीं जिनसे ठोकर लगने के कारण आप गिर पड़े। एक ईंट आपकी पसलियों में ऐसी लगी कि उसका दर्द आप जीवनभर महसूस करते रहे। आप कहा करते थे कि यह ईश्वर का आदेश न मानने की निशानी है।

आपके गिरते ही वह ईश्वरीय शक्ति घोड़े से उतर कर आपके पास आई और कहने लगी, "चलो पुत्र, गठरी उठाओ! हम तुम्हें गठरी उठवाते हैं।" तब उस आलौकिक शक्ति ने हाथ लगा कर वह गठरी आपके सिर पर रखवा दी और पीठ पर दायें हाथ से थपकी मार कर कहा, "बेटा, तुम चारे की गठरी उठवाने से संकोच कर रहे हो हमने तो तुमसे इस जगत की गठरी उठवानी है और तुमसे दुनिया में ईश्वर के कार्य करवाने हैं।" यह वचन और दोनों हाथों से आशीर्वाद देकर वह शक्ति अलोप हो गई।

जब आप घर पहुँचे तो आपके चेहरे पर भय के कारण एक अजीब सा बदलाव साफ झलक रहा था। आप ने चारे की गठरी घर में घुसते ही एक ओर फैंकी और पिछले कमरे में, जिस में तूड़ी पड़ी थी, जाकर लेट गए। यह देख कर माता जी घबरा गईं कि पता नहीं दर्शन को क्या हो गया है? बिना कुछ कहे पिछले कमरे में जाकर क्यों लेट गया? जब माता जी आपके पास आईं तो पाया

कि आपका शरीर बुखार से तप रहा था। माता जी ने जल्दी से दूध गर्म करके उस में शुद्ध घी डाल कर आप को पीने को दिया। आप पूरा दिन उसी कमरे में लेटे रहे। शाम को जब पिता जी आए तो माता जी ने सारी बात उनके समक्ष रखी कि पता नहीं दर्शन को क्या हुआ है सुबह चारे की गठरी लाने के बाद सीधा पिछले कमरे में जाकर लेट गया है। पता नहीं क्या बात है? पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ। पिता जी ने भी जब आपके पास आकर पूछा तो आप बिना कोई जवाब दिए लेटे रहे। दो दिन बाद आपकी हालत में कुछ सुधार हुआ पर उस घटना के बारे में आपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया।

इसी तरह तीन साल और निकल गए और आपकी आयु 17 वर्ष की हो गई। उस समय आप नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। पढ़ाई के साथ-साथ आपने अपने पड़ोसी इंद्रजीत के साथ आलू बेचने का धन्धा कर लिया। जब आप आलू बेचने गए तो सारे आलू मुफ्त में ही बाँट कर आ गए। घर पहुँचे तो पिता जी ने पूछा कि इतनी जल्दी सारे आलू बेच आये तो आपने बड़ी मासूमियत के साथ कहा कि जब मैंने आलू पैसे के साथ बेचे तो किसी ने नहीं खरीदे और जब मैंने यह आवाज़ दी कि मुफ्त में ले जाओ तो सारे आलू फटाफट बिक गए।

एक दिन आपने अपने पिता जी से कहा, " पिता जी, पढ़ाई में अब मेरा मन नहीं लगता, मैं कोई नौकरी करना चाहता हूँ।" अपने पुत्र का यह विचार सुनकर पिता जी ने कहा, " ठीक है, यदि तुम पढ़ना नहीं चाहते तो ऐसा करो कि हमारी दुकान के करीब एक और दुकान है जो मैंने तुम्हारे लिए ही खरीद कर रखी है तुम

वहीं पर कोई काम शुरू कर लो।" पिता जी की यह बात सुनकर आपने अपने मन की बात उनके सामने रखी कि मैं दुकान नहीं करना चाहता अपितु जलंधर में अपनी मासी जी के यहाँ जाकर कोई नौकरी करना चाहता हूँ। माता-पिता ने आपस में सलाह की और अपने पुत्र की इच्छा का सम्मान करते हुए आपको व आपकी देखभाल के लिए बहन दर्शना को जलंधर भेज दिया। जलंधर के बस्ती शेख इलाके में आपकी मासी जी रहते थे। यहाँ आकर आप एक फैक्ट्री में नौकरी करने लगे। परन्तु बुजुर्गों का कथन है,"जिसका काम उसी को साजे" अर्थात् जो जिस काम के लिए पैदा होता है उसे वही काम शोभा देता है। जिसका जन्म ईश्वर की नौकरी करने के लिए हुआ हो भला वह संसार की नौकरी कैसे कर सकता है?

अब वह समय आ गया कि बालक दर्शन वह काम करे जिन्हें करने के लिए ईश्वर ने उन्हें धरती पर भेजा था। वह भाग्यशाली समय था, सन् 1971 की रक्षा बन्धन और पूर्णिमा का पवित्र दिन। उस दिन आप बड़े खुश थे और ठहाके मार-मार कर हँस रहे थे। बहन दर्शना जी से राखी बंधवा कर आप साइकिल लेकर नौकरी पर चले गए। वहाँ आपको आकाशवाणी हुई," तुम्हें जिस काम के लिए भेजा गया है वह काम करो।" आकाशवाणी को सुनकर आप की ऐसी काया-कल्प हुई कि आप उल्टे पाँव वापस घर आ गए और ऊपर चौबारे पर जाकर खाट पर उल्टे लेट गए। घर के सभी लोग हैरान हो गए। जब उन्होंने आपके पास आकर आपको देखा तो आपका रंग लाल हो गया था और पूरा शरीर

बुखार से तप रहा था। घर वालों ने जब आपको उठाने की कोशिश की तो आपके साथ ही साथ खाट भी उठ गई जैसे खाट आपके शरीर के साथ ही चिपक गई हो। फिर डाक्टर को बुलाया गया परन्तु उसकी भी कुछ समझ में न आया। यह सोचकर कि कहीं कोई भूत-प्रेत का साया न हो घरवाले झाड़-फूँक करने वालों को बुला लाए। जब उनका भी कोई जोर न चला तो नजदीक ही रहने वाले एक माता के भक्त को बुलाया गया परन्तु उसका भी कोई जोर न चला तो उसने मासी जी से कहा कि माता जी, इस पर भूत-प्रेत का कोई चक्कर नहीं है। आप किसी भ्रम में न पड़ें यह बिल्कुल ठीक है। इनके पीछे कोई ईश्वरीय शक्ति है क्योंकि जब भी मैं इनकी ओर ध्यान देता हूँ तो मुझे ईश्वरीय शक्तियों का पहरा नजर आता है। मैं तो माता का एक अदना-सा भक्त हूँ, यह मेरे तो क्या किसी के भी वश की बात नहीं है। आप किसी को भी मत बुलाओ। इनको आराम करने दो। यह अपने आप ही उठेंगे और आपको सब कुछ बताएंगे। भक्त जी जाते हुए मासी जी को इतना कह गए।

ऐसा ही हुआ। थोड़ी देर बाद आप उठकर बैठ गए। उस समय आपकी आँखों में से आलौकिक नूर झलक रहा था और चेहरा एकदम लाल सुर्ख हो गया था। आपका यह रूप देखकर सभी घबरा गए क्योंकि आपका ऐसा रूप किसी ने भी पहले नहीं देखा था। आपने वहाँ मौजूद लोगों को आदेश देना शुरू कर दिया। कभी कहते कि हमारे लिए चाय बनाओ तो कभी कहते कि हमारे कपड़े लेकर आओ। ऐसा लग रहा था कि आपके अन्दर कोई

शक्ति बोल रही हो। वहाँ खड़े लोग घबरा कर आपकी माँगें पूरी करने लगे और फिर आप एकदम वैराग्य में आ गए और आपकी आँखों में से अश्रुधारा बह निकली और आप कहने लगे, "मुझे अपने अन्तर में कोई शक्ति नज़र आ रही है जो मुझे ईश्वरीय काम करने का आदेश दे रही है।" फिर आपने बहन दर्शना और मासी जी को एकांत में ले जाकर कहा कि जो मालिक मुझे आदेश दे रहा है आप लोग उसकी आज्ञा मान कर मेरे साथ उसकी सेवा में जुट जाओ। यहाँ संगत के मेले लगेंगे। दूर-दराज़ से चलकर आई संगत की सेवा करके आप भी अपना जीवन सफल कर लो। फिर आप वहाँ मौजूद लोगों के दिल की बातें बताने लग गए। उनके दिल में जो भी विचार या प्रश्न थे, आपने सभी बता दिए। उसके बाद तो यह स्थिति हो गई कि जो भी आपके पास आता आप उससे यह नहीं पूछते थे कि आप किस लिए आए हो बल्कि अन्तर्यामी होकर उसके दिल की बात बता कर उसे कुछ कहने का अवसर ही न देते थे।

-हुजूर बाबा दर्शन दास जी-

दो दिनों के अन्दर ही मासी जी के घर बस्ती शेख में मेले लगने शुरू हो गए। दूर-दूर से संगत आने लगी और मासी जी के घर हर समय ईश्वरीय सेवा व सुमिरन का वातावरण बना

रहता। आप स्वयं भी दिन रात सुमिरन में लीन रहते और संगत को भी नाम शब्द देने लगे। ईश्वर का प्रचार करने हेतू आप ईश्वर के बारे में सब कुछ स्पष्ट बताने लगे। यहाँ तक कि जो गुप्त शक्तियाँ आपके पीछे काम कर रहीं थी उनके प्रत्यक्ष दर्शन लोगों को करवाने लगे। आपके ईश्वरीय कौतुकों व ईश्वरीय रहमतों की चर्चा दूर-दूर तक फैलने लगी। साध-संगत ने आपको "हुजूर बाबा जी" के नाम से निवाज़ना शुरू कर दिया।

दूसरी ओर, जब आपकी मासी जी द्वारा भेजा गया संदेश आपके माता-पिता के पास बटाला पहुँचा कि आपका पुत्र तो हुजूर बाबा जी बनकर लोगों की दु:ख तकलीफें दूर करने लग गया है तो उन्हें बड़ी चिंता हुई और साथ ही साथ वे सारी घटनाएँ जैसे कि माता जी को शक्तियों के दर्शन होना, पुत्र के जन्म से पहले महात्मा जी द्वारा की गई भविष्यवाणी, साधुओं का बालक दर्शन को माथा टेकना सब कुछ एक फिल्म की भाँति उनकी आँखों के सामने आने लगा। ये घटनाएँ बार-बार माता-पिता को उनके पुत्र का किसी आलौकिक शक्ति से सम्बन्ध होने का संकेत देती रहीं परन्तु फिर भी इन्सान होने के नाते माता-पिता के लिए इस सत्य को स्वीकार करना बहुत कठिन था और इन्सानी सोच के तहत दोनों अपने पुत्र को इस हालत से बाहर निकालने का उपाय सोचने लगे। इसी सोच के तहत माता जी अपने गुरु आनन्दपुर वाले सन्तों की चरण धूल जो कि उन्होंने अपने घर में बरकत व खुशहाली के लिए रखी हुई थी, लेकर जलंधर के लिए रवाना हो गई कि चरण धूल को माथे पर लगाने से या मुँह में डालने से

शायद मेरा पुत्र ठीक हो जाएगा। पिता जी बटाला इसलिए ठहर गए कि वह किसी बड़े साधू को साथ लेकर दूसरे दिन जलन्धर पहुँचेंगे।

उधर जलन्धर में हुजूर बाबा जी संगत के साथ बैठे हुए थे। माता जी की बटाला से लेकर जलन्धर तक की यात्रा का पूरा वृतांत आप संगत को सुना रहे थे कि हमारे माता जी बटाला में बस में बैठ गए हैं। अब वह जलन्धर पहुँच गये हैं और घर की ओर आ रहे हैं। वह गली में पहुँच गये हैं और अब वह घर के दरवाज़े के आगे खड़े हैं। फिर आपने दरवाज़ा खोलने का आदेश दिया। जब दरवाज़ा खोला गया तो सामने माता जी खड़े थे। माता जी ने देखा कि सामने संगत बैठी हुई है और आप एक तख्त पर आलथी-पालथी मार कर बैठे हैं। माता जी पास आए और आपको गले लगाने के लिए आगे बढ़ने लगे तो आपने कहा,"अम्मा जी, आ गए हो? जो चरण धूल आप हमारे लिए लेकर आए हो वह हमें दे दो।" यह सुनकर माता जी के तो जैसे पैरों के नीचे से ज़मीन ही खिसक गई। माता जी ने पूछा कि आपको कैसे पता? इस पर आपने कहा,"अम्मा जी, बहुत विचार करने की आवश्यकता नहीं है हमें सब ज्ञात है। ऐसा करो आप अन्दर जाकर बैठो हम अभी आते हैं।" इतना कह कर आप फिर संगत की ओर मुखातिब हो गए।

उधर बटाला में पिता जी रात के समय बिस्तर पर लेटे हुए सोने का प्रयत्न कर रहे थे कि सामने वही ईश्वरीय शक्ति सफेद कपड़ों में घोड़े पर सवार होकर प्रत्यक्ष रूप में प्रगट हो गई। पिता जी ने देखा कि हुजूर बाबा दर्शन दास जी उनके चरणों में बैठे हैं

और उस शक्ति ने उनके सिर पर हाथ रखा हुआ है। उस शक्ति ने पिता जी से कहा कि आपने तो केवल इस बच्चे को जन्म देना था। अब यह बालक हमारा है और हमारे काम करेगा। धरती पर इसका जन्म ही हमारे काम करने के लिए हुआ है। इतना कह कर वह शक्ति अलोप हो गई। पिता जी को अंदेशा हो गया कि यह कोई छोटी बात नहीं है बल्कि ईश्वर की ओर से कोई इशारा हुआ है। दूसरे दिन सवेरे ईश्वर की रज़ा मानकर बिना साधू के ही पिता जी जलन्धर की ओर रवाना हो गए। पिता जी की यात्रा का भी सारा हाल हुजूर बाबा जी ब्यान करने लगे। जिस समय पिता जी घर के दरवाजे पर पहुँचे तो आप ने कहा, "पिता जी, आ गए आप? बड़े साधू को साथ लेकर नहीं आए?" पिता जी एकदम हैरान हो गए। फिर आपने कहा, "पिता जी, जो कुछ भी आपने रात में देखा है वही सत्य है उस पर यकीन करो।"

इसके बाद माता-पिता जी की बाबा दर्शन के रूप में उस ईश्वरीय शक्ति से गोष्ठी हुई जिसमें उस शक्ति ने सारे ईश्वरीय भेद उनको खोल कर बताए और उन्हें यह यकीन दिलवाया कि बालक दर्शन ने ईश्वरीय प्रयोजन के तहत ही धरती पर जन्म लिया है और अब वह ईश्वरीय शक्ति इन में प्रकट होकर अपने कार्य करेगी। पिता जगन्नाथ जी गूढ़ ज्ञानी थे। सन्तों-साधुओं की संगत करके उन्हें काफी ज्ञान हो चुका था। ईश्वरीय शक्ति के साथ गोष्ठी के दौरान पिता जी ने तीन वचन माँगने का विचार व्यक्त किया। पहला वचन यह कि बाबा दर्शन भगवे वस्त्र धारण नहीं करेंगे। हाथ में कमंडल व चिमटा पकड़ कर दर दर भिक्षा माँगने वाले साधू नहीं होंगे बल्कि दुनिया में बाँटने वाले सन्त

होंगे। हुजूर बाबा जी ने कहा कि आप चाहते हो कि यह इसी रूप में काम करें तो पिता जी ने सहमति जताई और ईश्वरीय शक्ति ने उनकी यह विनती स्वीकार कर ली। पिता जी ने दूसरे वचन में यह माँगा कि यह हमारा इकलौता पुत्र है और अपनी वंश वृद्धि के लिए हम चाहते हैं कि आप मेरे पुत्र को गृहस्थ जीवन जीने की आज्ञा प्रदान करें। यह ब्रह्मचारी बन कर योगियों की भाँति वनों में नहीं भटकेंगे बल्कि एक गृहस्थ जीवन जीयेंगे और इनका अपना परिवार होगा। इस वचन को लेकर दोनों में काफी गोष्ठी हुई। ईश्वरीय शक्ति ने कहा कि इस के स्थान पर आप कोई और वचन माँग लो परन्तु पिता जी नहीं माने। अंतत: उस शक्ति ने सहमति जताते हुए कहा कि हमें आपका यह वचन भी स्वीकार है। पर सन्त-महात्माओं को दुनिया की कोई भी शक्ति बेड़ियों में नहीं बाँध सकती। सन्त तो बहते दरिया की तरह दुनिया के लिए स्थान-स्थान पर जाकर ईश्वरीय रहमतें बाँटते आए हैं और बांटते रहेंगे। फिर बालक दर्शन को सम्बोधन करके कहने लगे कि इनका जीवन भी ऐसा ही होगा, वंश वृद्धि तो होगी परन्तु बंधन की बेड़ियाँ नहीं पड़ेंगी। पिता जी ने तीसरा वचन यह माँगा कि जो भी दु:खी, जरूरतमंद या गर्ज़मंद इनके दर पर आए वह कभी भी खाली हाथ न लौटे। जहाँ भी इनका स्थान हो वहाँ से कोई भी लंगर प्रसाद के बिना न जाए। उस शक्ति ने पिता जी का तीसरा वचन भी मंजूर कर लिया और कहा कि हमने आपके तीनों वचन मान लिए हैं अब यह बालक हमारा हो गया है और अब हमें इससे अपने काम करवाने हैं।

इसके बाद वहाँ दूर-दूर से संगत आने लगी और हुजूर बाबा

जी ने उन्हें ईश्वरीय कृपा के भण्डार वितरित करने शुरू कर दिए। दूर-दूर तक आपकी प्रशंसा फैलने लगी कि जलन्धर में एक बाबा जी हैं जिनके पास कोई ईश्वरीय शक्ति है और जो भी उनके दर पर कोई आस-मुराद लेकर जाता है वह कभी खाली वापस नहीं जाता। आपकी इतनी प्रशंसा सुनकर कई साधू, फकीर व तंत्र विद्याओं वाले आपकी परख लेने के लिए आते पर उनकी एक न चलती बल्कि उन्हें मुँह की खानी पड़ती। एक बार की बात है कि एक साधू भगवे वस्त्र धारण करके आपके दरबार में आया और सबसे पीछे बैठकर कुछ मंत्र पढ़ने लगा। आप गद्दी पर बिराजमान थे व सब कुछ जानते थे। आपने उसे अपने पास बुलाया और सामने बिठाकर कहा, "भाई लगा ले जितना जोर लगाना है। झोले में और भी जो माला-मंत्र लेकर आया है वह भी निकाल कर आज़मा ले।" साधू ने झोले में से माला निकाली और जोर-जोर से मंत्र पढ़ने लगा। आपने अपनी निगाह से एकटक उस माला को देखा तो वह माला टूट गई। उस माला के मनके दूर-दूर बिखर गये। वह साधू घबरा कर आपके चरणों में गिर पड़ा। आप ने कहा, "उस मालिक ने तुझे ये शक्तियाँ दुनिया का भला करने के लिए दी थी परन्तु तुम इनका गलत स्थान पर इस्तेमाल करने लगे इसलिए आज से मालिक ने तेरी सारी शक्तियाँ समाप्त कर दी हैं।" साधू बहुत रोया और माफी माँगने लगा। हुजूर बाबा जी ने उसे समझाते हुए कहा, "यदि तुने अभी भी अच्छे काम नहीं किए और बुरे रास्ते पर ही चलता रहा तो भूत-पिशाच की योनि में पैदा होकर चौरासी के चक्कर में भटकता रहेगा। यदि इससे छुटकारा चाहता है तो अच्छा मार्ग पकड़ ले और आज से ही नेक कार्य करना आरम्भ कर दे।"

लगभग डेढ़ साल जलन्धर में संगत की सेवा करने के बाद हुजूर बाबा जी बटाला आ गए और वहाँ की संगत को निहाल करना शुरू कर दिया। आपका घर छोटा ही था और संगत की तादाद दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही थी। संगत को अब एक खुली जगह की जरूरत महसूस होने लगी तो आपने पिता जी के साथ सलाह-मशवरा करके घर से थोड़ी दूर ही खेतों की ओर जमीन खरीद कर अपना डेरा बनाया। यह वही स्थान था जहाँ चारा काटते समय आपको ईश्वरीय शक्ति के दर्शन हुए थे और आज वहाँ भव्य सचखण्ड नानक धाम, बटाला डेरा बना हुआ है।

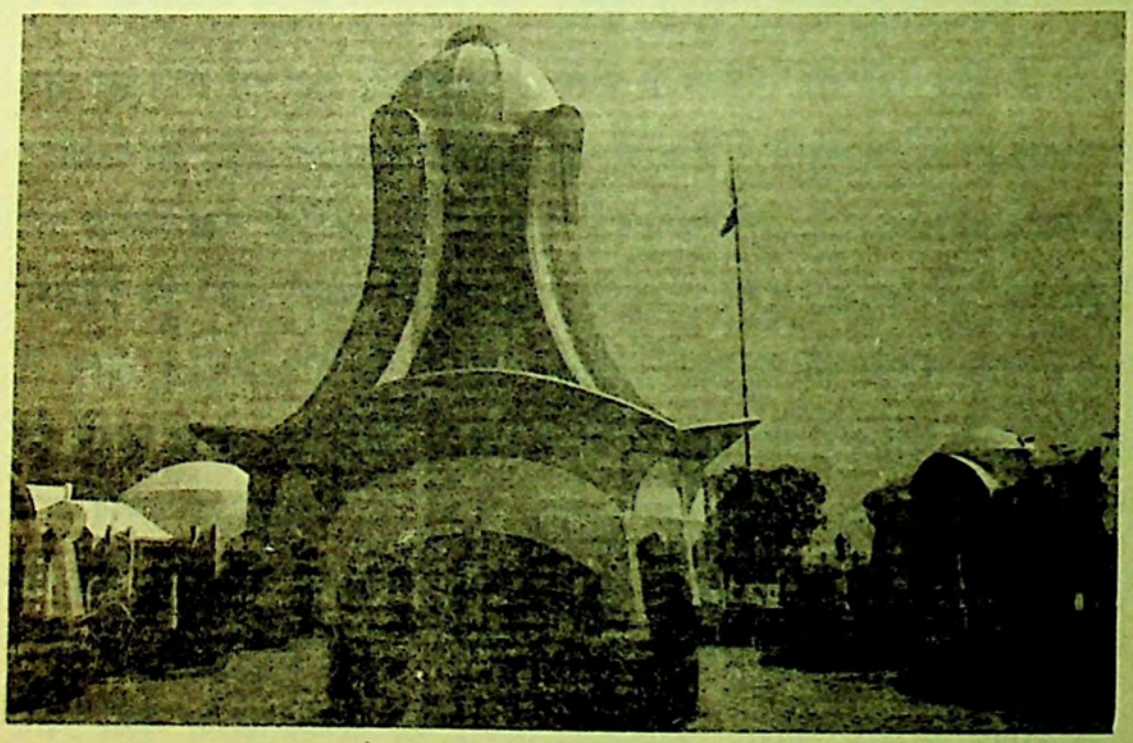

-सचखण्ड नानक धाम, बटाला-

जहाँ-जहाँ हुजूर बाबा जी की संगत थी, हुजूर स्वयं वहाँ जाकर उन्हें ईश्वर के साथ जोड़ते। इस तरह आप कभी जलंधर,

कपूरथला या लुधियाना आदि शहरों में जाते और सेवकों के घर घर जाकर कीर्तन व सत्संग करते। कपूरथला में बलदेव राज नामक सेवक के घर आप जाते और वहाँ दो दिन ठहरते। दिन रात कीर्तन सत्संग करते संगत को निहाल करते और साथ ही संगत के दुःख-दर्द सुनकर उन पर कृपा रहमत भी करते। इस तरह कपूरथला में काफी संगत हो गई थी। एक दिन आपकी संगत में श्री अमरनाथ सेठी जी, जो कि पटवारी थे व उनकी पत्नी करतार देई शामिल हुई। उनका बड़ा पुत्र श्री राजिन्द्र सेठी ठीक नहीं रहता था, उन्हीं के बारे में बात करने के लिए वह हुजूर बाबा जी के पास आए थे। संगत की तादाद काफी थी और बारी आने में कई बार दो दो घण्टे लग जाते थे पर करतार देई जी को बहुत इंतज़ार नहीं करना पड़ा। हुजूर बाबा जी ने उन्हें आवाज़ देकर बुला लिया। करतार देई जी ने हुजूर बाबा जी के चरणों में नमस्कार किया पर बोले कुछ नहीं। हुजूर बाबा जी कहने लगे, "माता जी, आप अपने बड़े बेटे के बारे में बात करने के लिए आए हो जो कि काफी समय से ठीक नहीं रहता।" करतार देई जी अभी भी कुछ नहीं बोले और चुपचाप खड़े रहे। आप फिर बोले, "माता जी, उसे किए कराये का नुक्स है, यही कारण है कि वह ठीक नहीं रहता। बाकी आपको ब्यास वाले महाराज सावन सिंह जी से नाम की बख्शिश हुई है इसलिए उनकी कृपा आप पर बहुत है। आपको कुछ नहीं हो सकता आप भ्रमित न हों। आपका बेटा ठीक हो जाएगा।" आपके वचन सुनकर बीबी करतार देई जी बहुत ही हैरान हुई कि बिना कुछ बोले, बिना कुछ बताए ही आप ने सब कुछ ब्यान कर दिया। जब वह घर पहुँची तो बार-बार यही कह रही थी कि बाबा जी बहुत ही पहुँचे हुए हैं। फिर माता जी

अपने छोटे पुत्र हीरा लाल व पुत्री बीबी ऊषा को भी हुजूर बाबा जी के पास लेकर गई और उन्हें भी आशीर्वाद दिलवाया। उनका बड़ा बेटा, जिनके बारे में बात करने के लिए वह बाबा जी के पास गई थी व उनका मंझला बेटा प्रेम नाथ, दोनों जम्मू में रहते थे। थोड़े दिन बाद जब प्रेम नाथ जी कपूरथला आए तो उन्हें हीरा लाल जी ने हुजूर बाबा जी के दर्शन करने के लिए कहा। रास्ते में प्रेम नाथ जी ने कहा कि गुरु तो हमने बना लिया है (उन्होंने महाराज चरण सिंह जी से नाम दान लिया हुआ था।) अब हुजूर बाबा जी से कहना है कि यार बनाना है तो बना लो। जब दोनों आप जी के पास पहुँचे तो नमस्कार करके संगत में पीछे ही बैठ गए। उस दिन संगत काफी थी इसलिए उनके दिमाग में आया कि आज शायद ही उनकी बात हुजूर बाबा जी से हो पाए। थोड़ी देर बाद उन्होंने सोचा कि अब हमें चलना चाहिए। जब वह उठकर चलने लगे तो हुजूर बाबा जी ने आवाज दी,"भाई, श्रद्धा लेकर आए हो तो श्रद्धा लेकर जाओ।" दोनों आगे पहुँचे और हुजूर बाबा जी के चरणों में माथा टेका तो आप कहने लगे," जब घर से चले थे तो हमें यार बनाने के लिए आए थे। अब बिना यार बनाए ही जा रहे हो? आप तो हमारे पुराने मित्र हो।" प्रेम नाथ जी सोच में पड़ गए कि बिना बताए ही हुजूर बाबा जी को यह सब कुछ कैसे पता चल गया? इस तरह उनके मन में हुजूर बाबा जी के प्रति श्रद्धा और बढ़ गई। अब करतार देई जी व उनके बच्चों का हुजूर बाबा जी के पास आना जाना बढ़ गया।

इस परिवार में से श्री अमरनाथ सेठी जी अभी हुजूर बाबा जी के पास नहीं आए थे क्योंकि उनकी श्रद्धा अपने गुरु महाराज

सावन सिंह जी के प्रति बहुत थी। एक दिन की बात है कि अपने नित्य के नियम अनुसार वह अपनी दुकान में नाम सुमिरन में लीन थे। भक्ति के बाद अरदास करते हुए वह अपने सतगुरू के स्वरूप से अपनी घरेलू परेशानियों के बारे में बातचीत कर रहे थे। उस समय उन्हे इशारा हुआ कि जहाँ आपका परिवार जाता है आप भी उन्हीं सन्त-महात्मा के पास जाओ। वह आपकी दुनियावी मुश्किलों को हल करेंगे। श्री अमरनाथ जी उसी समय दुकान से घर पहुँचे और अपने परिवार से कहने लगे कि मैं हुजूर बाबा जी के पास जा रहा हूँ। आप तैयारी करो मैं उनके चरण अपने घर में डलवाना चाहता हूँ। इतना कह कर वह हुजूर बाबा जी के पास पहुँचे और जाकर चुपचाप पीछे बैठ गए। उस समय भी हर बार की तरह काफी संगत मौजूद थी और हुजूर बाबा जी स्नान करने की तैयारी कर रहे थे। आप जी संगत में आकर कहने लगे कि बाऊ जी (श्री अमरनाथ जी को सभी बाऊ जी ही कहा करते थे।) हमें अपने घर ले जाने के लिए आए हैं इसलिए आज हम इनके घर जाएंगे। आप जी स्नान करके तैयार हुए और बाऊ जी के घर की ओर चल पड़े। आप आगे-आगे थे और बाऊ जी व सारी संगत पीछे-पीछे थी। सब बाऊ जी के घर पहुँच गए। यहीं आपने सत्संग किया, संगत के साथ बातचीत की, लंगर ग्रहण किया और सारी रात कीर्तन किया। प्रात: पाँच बजे आप बलदेव राज के घर वापस आ गए और अपने आप को एक कमरे में बंद कर लिया। काफी समय बाद आप जब बाहर निकले तो उस समय आप ने जो वचन किए उन्हे सुनकर पहले तो सभी बहुत हैरान हुए परन्तु बाद में सबको बहुत ही प्रसन्नता का अनुभव हुआ। हुजूर बाबा जी ने कहा कि बाऊ जी की सुपुत्री बीबी ऊषा जी के साथ हमारे संजोग

हैं और आपने उसी समय बाऊ जी के घर संदेश भेजा कि हमें हमारे मालिक का आदेश हुआ है, हमें आज्ञा तो नहीं थी परन्तु माता-पिता की इच्छा को मुख्य रखते हुए हम इस रिश्ते को स्वीकार कर रहे हैं क्योंकि हमारे व बीबी ऊषा के संजोग धुर-धाम के हैं। जब बाऊ जी के घर यह संदेश पहुँचा तो वह बहुत हैरान हुए कि हुजूर बाबा जी यह क्या कह रहे हैं? वह उसी समय हुजूर के पास पहुँचे और निवेदन किया कि हुजूर बाबा जी, आप ठहरे सन्त-फकीर और हम हैं सांसारिक जीव, हमारा आपका मेल कैसे हो सकता है? तो आपने जवाब दिया कि यह जो कुछ भी हो रहा है उस मालिक के हुक्म के अनुसार ही हो रहा है। यह धुर-धाम के लेख हैं। हुजूर के इन वचनों को सुनकर उस परिवार ने मालिक के हुक्म की पालना करते हुए उसी समय अपनी सुपुत्री बीबी ऊषा की सगाई हुजूर बाबा जी के साथ तय कर दी तथा एक मिठाई का डिब्बा व 51 रुपये हुजूर बाबा जी की झोली में अपर्ण कर दिएं। जब हुजूर बटाला घर वापस आये तो माता जी को कहने लगे, "लो अम्मा जी, हमने आपकी तमन्ना पूर्ण कर दी है।" यह कह कर आपने सारी बात माता-पिता को बताई। पहले तो उन्हें यकीन ही न हुआ परन्तु जब पता चला कि यह बात वाकई सत्य है तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, उनके तो जैसे पाँव ही जमीन पर नहीं टिक रहे थे। इसके बाद दोनों परिवारों का मेल जोल शुरू हो गया। यह बात जून 1973 की है, उस समय हुजूर बाबा जी केवल 19 वर्ष के थे। सगाई के बाद बीबी ऊषा रानी को समय-समय पर देवी-देवताओं के दर्शन होने शुरू हो गए जिसके बारे में बीबी ऊषा रानी जी ने अपने माता-पिता से बात की। माता-पिता ने इस बारे में हुजूर बाबा जी को सूचना दी तो आपने फर्माया कि

कोई बात नहीं, दैवीय शक्तियाँ बीबी ऊषा रानी को आगाह कर रही हैं कि अब वह अपना अधिकांश समय ईश्वर के ध्यान में लगाये।

तीन वर्ष बाद 4 मार्च 1976 वाले दिन आप बारात लेकर बटाला से कपूरथला पहुँचे। लड़की वालों ने बारात के स्वागत में कोई कसर न छोड़ी। घर के करीब ही एक मन्दिर था जहाँ बारात को ठहराया गया। वहाँ से बारात विवाह की रस्में पूर्ण करने के लिए सेठी परिवार के घर पहुँची। जय-माला की रस्म हुई और तारों की छाँव में बेदी के फेरे हुए। पूरे रीति रिवाज़ के अनुसार बड़ी धूम धाम से विवाह संपन्न हुआ। दूर-दराज़ से संगत अपने सतगुरु के विवाह में शामिल होने के लिए पहुँची थी। संगत इन अनमोल पलों को ऐतिहासिक यादगार बना कर अपनी आँखों में सदा के लिए बसा लेना चाहती थी क्योंकि उनकी आँखें इन ऐतिहासिक पलों की गवाह बन चुकी थीं। माता-पिता की तो खुशी का जैसे कोई ठिकाना ही न था।

विवाह के दो साल बाद माता-पिता की खुशी को तब चार चाँद लग गए जब हुजूर के घर एक पुत्र ने जन्म लिया। 8 जनवरी 1978, दिन इतवार अमृतवेला के समय लगभग 2:55 मिनट पर माता ऊषा जी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उस समय बाबा जी डेरे में संगत के साथ बैठे हुए थे। हुजूर के घर के सामने एक मिस्त्री रहा करता था, वह साइकिल लेकर हुजूर बाबा जी को यह खुश खबरी देने के लिए डेरे की ओर रवाना हो गया। उधर हुजूर बाबा जी कीर्तन बाणी करके उठे ही थे और नलके पर हाथ पैर धो रहे थे। मिस्त्री साइकिल लेकर अभी दरवाजे में घुसा ही था कि आपने

बिना पीछे मुड़े ही, बिना पीछे देखे ही वचन कर दिया, "तरलोचन भक्त आ गया।" मिस्त्री हैरान हो गया कि अभी तो मैंने कुछ कहा भी नहीं, मैं तो अभी सोच ही रहा था कि बधाई दूँगा और बाबा जी ने पहले ही कह दिया कि तरलोचन भक्त आ गया है। इस तरह आपने अपने सुपुत्र का नामकरण भी कर दिया। जब बाबा

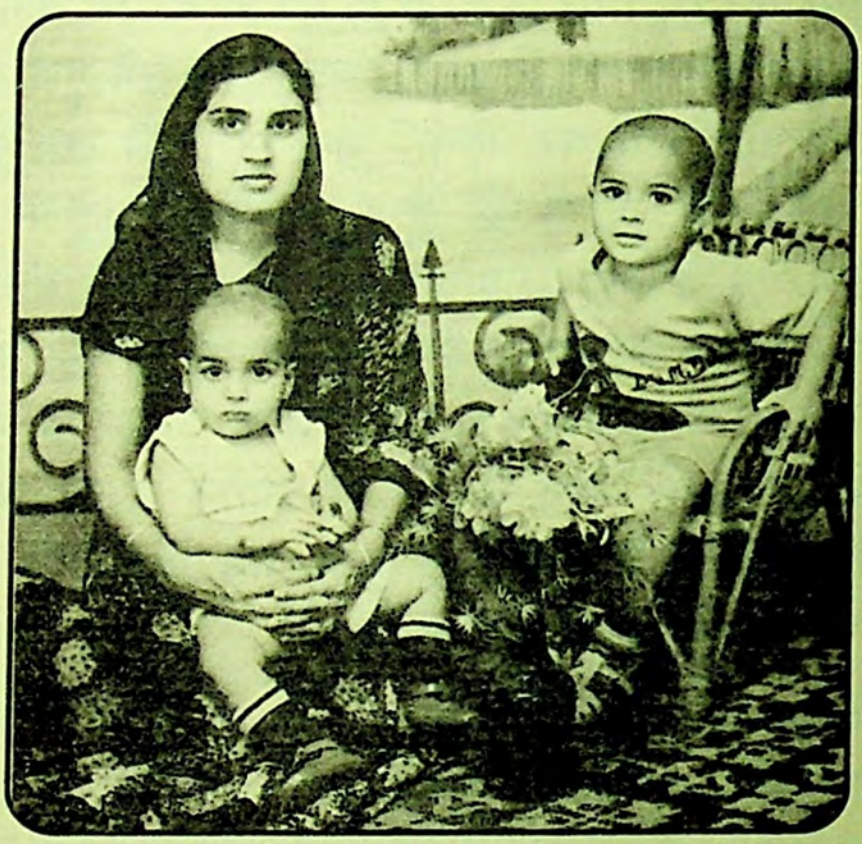

-माता ऊषा जी, बालक तरलोचन और बालक ध्यानू के साथ-

जी घर पहुँचे तो ऊषा माता जी ने बालक को आप की गोद में देकर कहा कि बाबा जी, बालक को आशीर्वाद दीजिए कि यह बड़ा होकर डाक्टर बने और परिवार का नाम रोशन करे। बाबा जी ने कहा कि बीबा, यह तो धुर-धाम से ही सन्त आया है और यह तो संगत की सेवा ही करेगा। फिर हुजूर बाबा जी ने बच्चे को भरपूर प्यार किया सिर पर हाथ फेरा और बच्चे के कान में शब्द पढ़ा और

मालिक का धन्यवाद किया।

लगभग डेढ़ साल बाद 2 अगस्त 1979 के दिन आप के घर एक और पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम आपने ध्यानू रखा। ऐसे आपने अपने माता-पिता को दिए हुए वंश वृद्धि के वचन को पूर्ण किया।

हुजूर बाबा जी के पास ईश्वरीय शक्ति व रहमत के साथ-साथ अपनी भक्ति भी जुड़ने लगी थी जो आपने महीनों भोरे काट-काट कर हासिल की थी और उससे आपने कई कौतुक भी किए।

एक बीबी जिसका नाम नरिंदर कौर था, उसके विवाह को 18 वर्ष बीत चुके थे परन्तु उसकी गोद अभी खाली ही थी। उसने बड़े बड़े डाक्टरों से इलाज करवाया परन्तु डाक्टरों ने उसे कह दिया कि उसके घर औलाद नहीं हो सकती। आप की यश-कीर्ति सुनकर वह बीबी डेरे में आई और आपके प्रति पूर्ण श्रद्धा व विश्वास के साथ बटाला डेरा साहिब में तन-मन से सेवा में जुट गई। दिन रात वह सेवा में लगी रहती। एक दिन पिता जगन्नाथ ने उस बीबी की ओर इशारा करते हुए आपसे कहा कि उसकी आस मुराद पूरी करें। आपने कहा कि पिता जी, इस बीबी के कर्मों में औलाद का सुख नहीं है। पिता जी ने फिर कहा कि बाबा जी, आपके घर में किस चीज़ की कमी है? आप तो सब कुछ दे सकते हो। यह सुनकर आप कुछ नहीं बोले और चुप कर गए। आपने उस बीबी को सम्बोधित किया कि बीबा हमारे ज्योति दिवस (15 अगस्त) पर तीन दिवसीय भण्डारा मनाया जा रहा है। तुम्हें दिन रात बर्तन मांजने की सेवा करनी पड़ेगी, क्या तुम कर सकती हो? उस

बीबी ने सहमति में सिर हिलाया और आप के वचन के अनुसार लगातार तीन दिन तक दिन रात बर्तन मांजने की सेवा करती रही। भण्डारे के बाद हुजूर ने उस बीबी को अपने पास बुलाकर यह वचन किया कि तेरी सेवा मालिक के घर में कबूल हो गई है, जाओ तुम्हारी मुराद पूरी होगी। उसी वर्ष उस बीबी के घर 18 वर्ष के बाद एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम उसने दास दविन्द्र रखा। इस कौतुक के बाद उसकी आपके प्रति आस्था और दृढ़ हो गई और वह बढ़-चढ़ कर गुरु घर की सेवा करने लगी। इसके लगभग एक वर्ष बाद की बात है कि बीबी नरिंदर कौर व दास परमजीत (दोनों बटाला निवासी) गुरु घर में सेवा कर रहीं थी। प्रभात का समय था और हुजूर दिल्ली से बटाला डेरे पहुँचे और आकर पिता जी के पास बैठ गए। पिता जी से बातचीत करते हुए आपने उन बीबीओं की ओर देखकर कहा कि बीबीओ, क्या जोड़ियाँ माँगती हो? जाओ मालिक मुराद पूरी करेगा। इस वचन के एक वर्ष के भीतर ही दोनों के घर में एक-एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बाबा जी की रहमत ही थी कि जिसके कर्मों में औलाद का सुख नहीं था उसके घर में 18 वर्ष बाद दो पुत्रों का जन्म हुआ।

इसी प्रकार आपने कई और कौतुक भी किए जैसे कि पैट्रोल के स्थान पर पानी से गाड़ी चला दी। ऐसे वचन दे दिए कि तुम्हारे अनाज के भण्डार कभी भी समाप्त न होंगे। लोग भण्डार में से अनाज निकाल-निकाल कर खाते रहे परन्तु भण्डार खाली नहीं हुआ। लोगों को वर दे कर गरीब से अमीर बना दिया। बुरे लोगों को ईश्वर की राह पर चला कर अच्छा बना दिया। जो भी एक

बार आपके दर पर आता फिर उसकी जुबान से आपकी तारीफ ही निकलती थी। वह आपका गुणगान करते न थकता था। आपकी ईश्वरीय रहमतों के कारण संगत ने आपके प्रति प्रेम प्रकट करते हुए आपको हुजूर महाराज जी का खिताब दे दिया।

संगत के दुःख-रोग दूर करने के उद्देश्य से आपने डेरे में एक नलका स्थापित किया और वचन दे दिया कि यह ईश्वरीय गंगा का जल है जो संगत की सेवा के लिए धरती पर उतारा गया है। जो भी इस जल को पियेगा उसके शारीरिक रोग दूर हो जाएंगे। डेरे में सुबह से लेकर शाम तक संगत का आना जाना लगा रहता था। सुबह से ही लंगर पकना शुरू हो जाता था। संगत लंगर का प्रसाद ग्रहण करती और सत्संग सुनकर निहाल होती। हुजूर महाराज जी ने बाबा कर्म सिंह व पिता जी की ड्यूटी लगा दी कि वह आई हुई संगत का पूरा पूरा ख्याल रखें।

एक दिन की बात है कि संक्रांति के भण्डारे पर संगत दूर दूर से डेरे में हुजूर के दर्शन करने के लिए पहुँची हुई थी। डेरे में बड़ी चहल-पहल थी। उस दिन एक साधू भी आपकी शक्ति की परख लेने के लिए आया हुआ था। आप अभी डेरे नहीं पहुँचे थे। साधू ने सेवकों से कहा कि मैं आपके गुरु के दर्शनार्थ आया हूँ मुझे उनके दर्शन करवाओ। सेवकों ने कहा कि अभी हुजूर महाराज जी आये नहीं हैं। आप पहले डेरे के नियमों के अनुसार लंगर का प्रसाद ग्रहण कर लीजिए, इतनी देर में हुजूर महाराज जी भी आ जाएंगे तो आप दर्शन कर लेना। उस साधू ने सेवकों से कहा कि यदि आप मुझे लंगर खिलाना ही चाहते हो तो पहले मेरा यह कमंडल खीर से भर दो। उस दिन भण्डारा होने के कारण लंगर में खीर का

प्रसाद भी बना हुआ था। एक सेवक ने उसके कमंडल में खीर डालनी शुरू की। परन्तु हैरानी की बात यह हुई कि लगभग डेढ़ बाल्टी खीर उस कमंडल में डाल दी गई परन्तु कमंडल न भरा। इस पर सेवकों को समझ में आया कि हो न हो यह साधू कोई खेल खेल रहा है। सेवकों ने इसकी सूचना पिता जगन्नाथ जी व बाबा कर्म सिंह जी को दी। इस पर पिता जी ने एक सेवक को फटाफट घर की ओर दौड़ाया और उस सेवक ने घर जाकर सारी बात हुजूर महाराज जी को बताई। घर पर बैठे ही हुजूर ने संदेश लेकर आए सेवक के हाथ बाबा कर्म सिंह जी को आदेश भिजवाया कि नाम शब्द का ध्यान करके उस साधू के कमंडल में एक कटोरी खीर डाल दें। हुजूर के आदेशानुसार बाबा जी ने नाम सुमिरन करते हुए एक कटोरी खीर की उस साधू के कमंडल में डाल दी जिससे न केवल कमंडल भर गया बल्कि खीर कमंडल में से बाहर गिरने लगी। यह देखकर वह साधू बाबा जी के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा कि इस कमंडल को आज तक कोई भी भर नहीं पाया है। आप सचमुच ही बहुत बड़ी शक्ति के स्वामी हो जो इस कमंडल को आपने भर दिया है। बाबा जी ने कहा कि मैं किसी शक्ति का स्वामी नहीं हूँ अपितु अपने मालिक का एक अदना-सा सेवक हूँ और उनके आदेश का पालन कर रहा हूँ। यह सुनकर साधू ने कहा कि ज़िस का सेवक इतनी शक्ति रखता है वह स्वयं कितनी ताकत का मालिक होगा? मैं उनके दर्शन अवश्य करना चाहुँगा। उसका यह संदेश हुजूर तक पहुँचाया गया तो हुजूर महाराज जी ने दर्शन देने से यह कह कर इंकार कर दिया कि वह हमारी परख लेने के लिए ही आया था। अब उसको हमारी शक्ति की परख हो गई है इसलिए हम उसे दर्शन नहीं देंगे। यदि उसने हमारे दर्शन कर लिए

तो वह अन्धा हो जाएगा। उसके भाग्य में हमारे दर्शन नहीं हैं। इस तरह आप अपने दर पर आने वालों के दिल की भावना के अनुसार ही उसकी झोली में खैर डालते थे। जीव जो मुराद या इच्छा लेकर आपके दर पर आता था आप उसके अनुसार ही उसे पूरा करते थे।

जैसे कि आप पहले भी ब्यान कर चुके थे कि सन्त-महात्मा तो बहते दरिया की भाँति होते हैं उन्हें कोई बंधन बाँध नहीं सकता। सन्त स्वरूप होने के कारण आप भी कैसे किसी एक स्थान पर ज्यादा समय रूक सकते थे? सो आपने पंजाब से दिल्ली की ओर रूख किया और शाहदरा (दिल्ली) आ गए। शाहदरा आकर आपने घर घर जाकर सत्संग करना आरम्भ किया। दूर-दूर से संगत आपके सत्संग सुनने व अपने दु:ख-दर्द दूर करवाने आपके पास आने लगी। टीन के खाली डिब्बे के साथ जब आप कीर्तन करते तो हारमोनियम व तबले के बिना संगीत व रूहानियत का ऐसा माहौल बनता कि कीर्तन सुन कर संगत को सुरूर चढ़ जाता और वह अपनी सुध-बुध खो कर मस्ती में झूमने लगती। जब दिल्ली में संगत की तादाद बढ़ने लगी तो आपने सोचा कि अब यहाँ भी संगत की सहूलियत के लिए एक स्थान बनाना चाहिए। अपने एक सेवक दास गुप्ता जी के सहयोग से आपने शाहदरा से कुछ ही दूर लोनी क्षेत्र के इन्द्रापुरी इलाके में सन् 1977 में दूसरे सचखण्ड नानक धाम, लोनी की स्थापना की। उस समय लोनी की जमीन बिल्कुल बंजर थी। चहुँ ओर डेढ़-डेढ़ फुट का केवल कल्लर ही कल्लर था। पानी भी एकदम खारा था और जमीन पर चारों ओर साँप व बिच्छू घूमा करते थे। हुजूर ने जल का शब्द बनाया

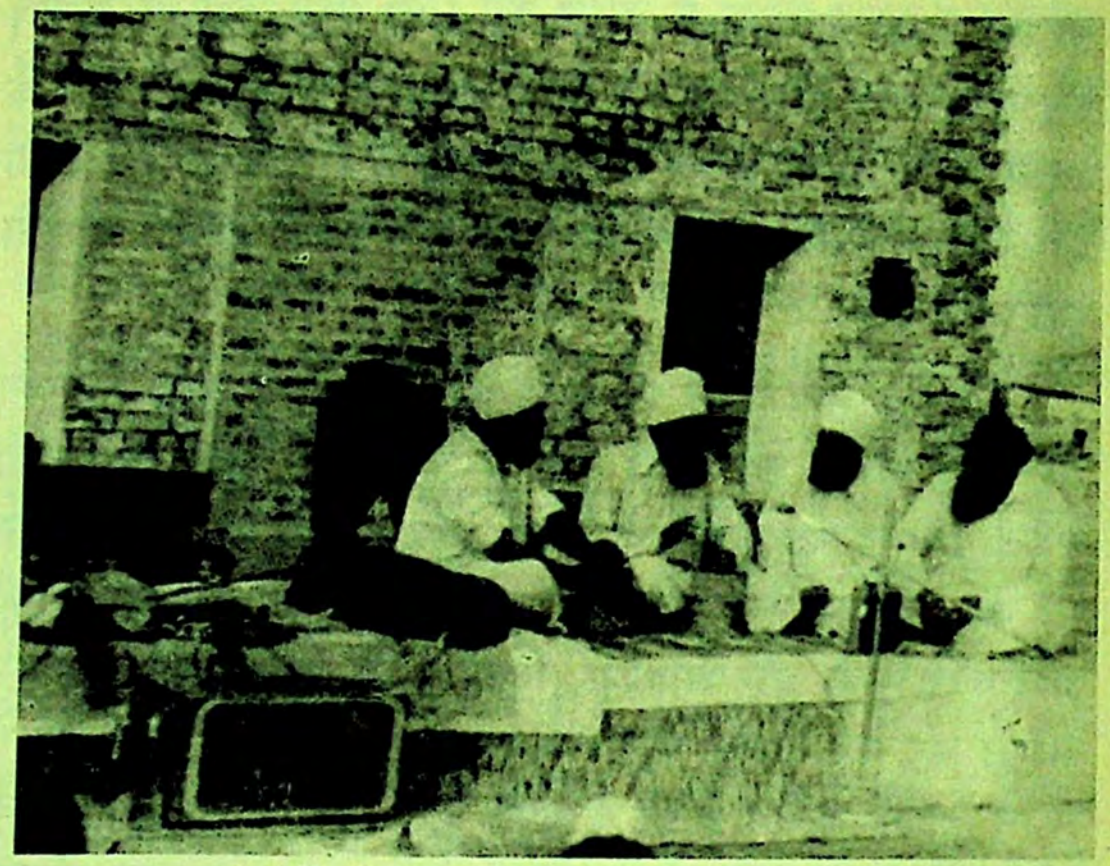

-लोनी डेरे में टीन के खाली डिब्बे से कीर्तन करते हुए
महाराज दर्शन दास जी (बाएं से दूसरे)-

और वचन दिया कि इस जमीन पर जहाँ भी खुदाई करोगे वहाँ से पानी मीठा ही निकलेगा। आपने अपनी ताकत व सुमिरन और कीर्तन सत्संग से उस बंजर जमीन को कुछ ही समय में उपजाऊ बना दिया। आप अपने कुछ सेवकों के साथ रोज़ाना डेरे में आते और खूब सेवा करते। आप के पास एक तसला हुआ करता था जिससे आप सेवा करते और लंगर के समय उसी को धो मांज कर उसमें सब्जी बनाते, फिर सब्जी दूसरे बर्तन में डालकर उसी तसले को उल्टा कर उस पर रोटी सेकते व उसी तसले से आप कीर्तन भी करते। रात दिन लोनी में या तो सेवा होती या कीर्तन होता। संगत कीर्तन में इतना मस्त हो जाती की न धूप का पता चलता न

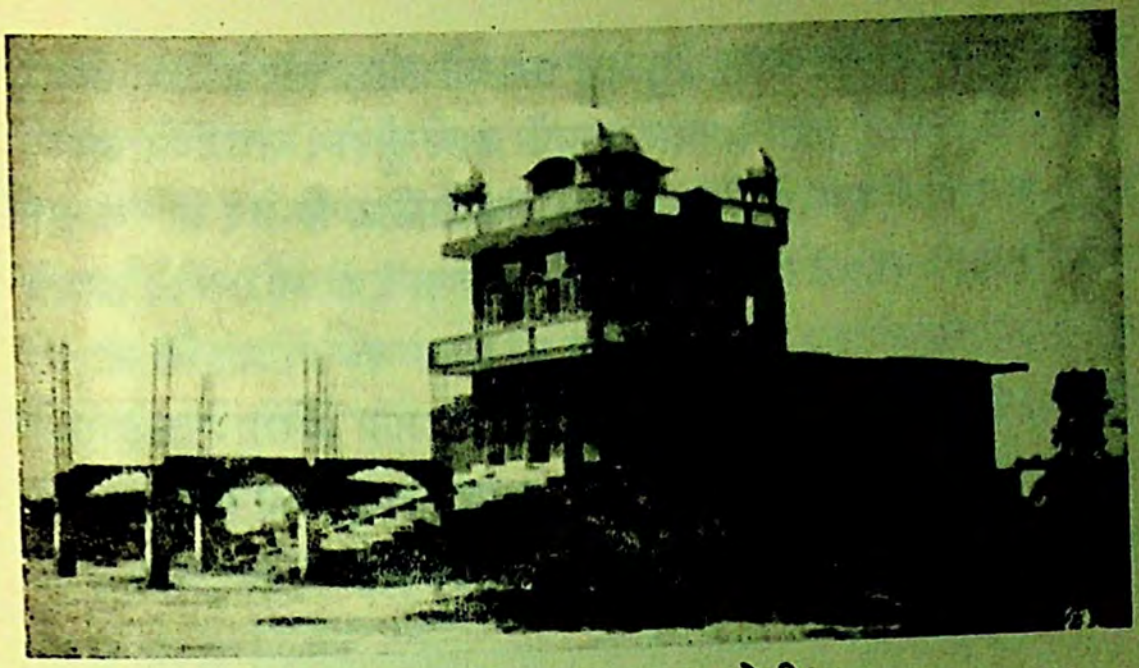

-सचखण्ड नानक धाम, लोनी-

छाँव का। यहाँ तक कि बारिश में भी संगत उसी प्रकार मस्ती में झूमती रहती। धीरे-धीरे डेरे के निर्माण का कार्य होता रहा और फिर हुजूर स्वयं डेरे में ही आकर रहने लगे। संगत का हुजूर के साथ प्यार बढ़ता गया और संगत भी बढ़-चढ़कर डेरे में आने लगी। लोनी में भी आपने कई कौतुक किए जिनके कारण लोग आपको लोनी वाले बाबा जी के नाम से जानने लगे।

आपकी रहमतों की खुशबू देश की हदों को पार करके विदेशों तक भी पहुँच गई। विदेशों से भी संगत लोनी वाले बाबा जी के दर्शन करने के लिए आने लगी। संगत के इन जीवों की विनती स्वीकार करते हुए 23 दिसम्बर 1979 को आपने इंग्लैण्ड की धरती पर पहली बार कदम रखा। आपकी यह पहली विदेश यात्रा थी जो केवल 10 दिन की ही रही और आप 3 जनवरी 1980 वाले दिन वापिस लोनी आ गए। उसी वर्ष 16 फरवरी 1980 के दिन आपने लोनी में "दास धर्म" की स्थापना की और यह आवाज़

दी कि हमारे शरीर से मत जुड़ो। हम जो चीज़ देने के लिए ईश्वर के घर से आए हैं वह है नाम, उसके साथ जुड़ो। उस दिन आपने साध-संगत के भले के लिए गुरु नानक साहिब के घर से "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला" की माँग की। आपने संगत को इस ताकत के साथ जोड़ा और यह वचन दिया कि जो भी दोपहर 2 बजे से 2.15 बजे तक इसका जाप करेगा उसके सारे दुनियावी कार्य सम्पूर्ण होंगे। यह कलयुग का मुखवाक् है जिस में मालिक की शक्ति स्वयं कार्य कर रही है। आप का यह वचन आज

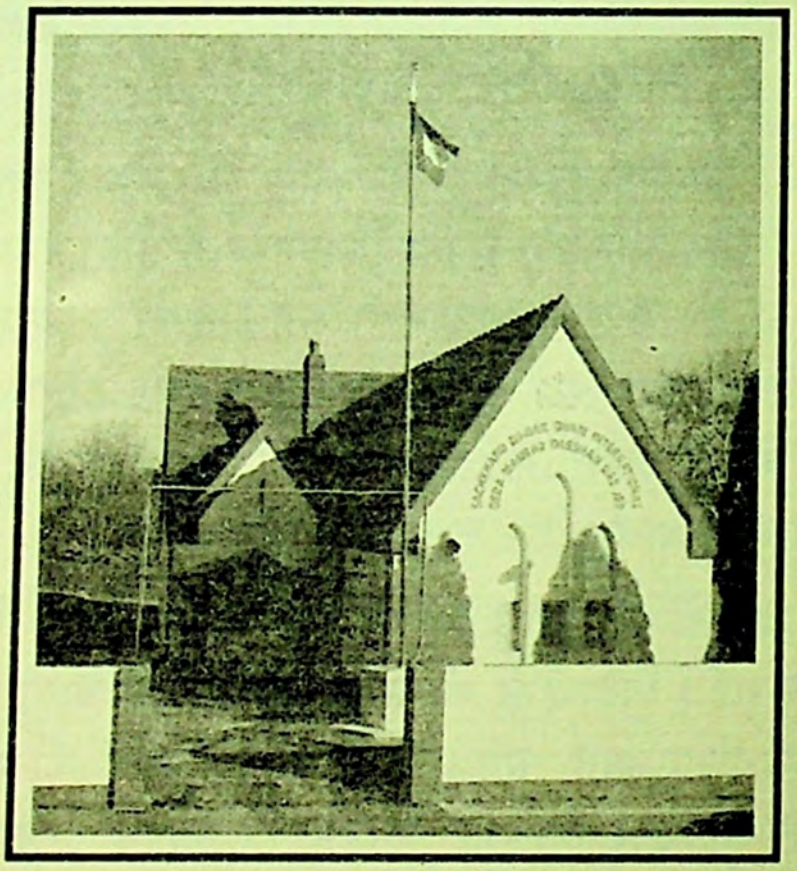

-सचखण्ड नानक धाम, बर्मिंग़म(इंग्लैण्ड)-

भी संगत में काम कर रहा है।

उसके बाद आप कई बार इंग्लैण्ड गए और आपके सत्संग

सुनकर काफी संगत आपके साथ जुड़ गई। फिर आपने 1 सितम्बर 1982 को इंग्लैंड में तीसरे सचखण्ड नानक धाम, बर्मिंघम डेरे की स्थापना की। इंग्लैण्ड में किसी सन्त द्वारा स्थापित किया गया यह पहला डेरा था। इस प्रकार आपने इंग्लैण्ड की धरती को भाग्यवान बनाया और वहाँ की संगत पर भी अपनी कृपा की बरसात की। गोरे व काले लोगों को भी आपने नाम की बख्शिश की और उन्हें अपने चरणों के साथ जोड़कर उनका भी जीवन सँवारा।

आपको अपने देश हिंदुस्तान से बहुत प्रेम था। देश प्रेम का जज़्बा आपके अन्दर भरपूर था। यही कारण है कि एक बार जब कुछ अलगाववादियों ने इंग्लैण्ड में यह फर्मान जारी किया कि 6 अक्तूबर 1984 वाले दिन ग्रेवज़ैंड में हिंदुस्तान के तिरंगे को जलाया जाएगा तो उस समय आपने हिंदुस्तान से ही इंग्लैण्ड के अपने सेवकों को आदेश दिया कि इस कृत्य का विरोध करें और यह ताकीद की कि किसी भी कीमत पर तिरंगा जलाया नहीं जाना चाहिए। वहाँ जाकर आप बड़े प्रेमपूर्वक व नम्रता से उन्हें समझायें और उन्हें ऐसा करने से रोकें। किसी भी प्रकार का कोई लड़ाई झगड़ा नहीं करना है। हुजूर महाराज जी के आदेश अनुसार लगभग 400 सेवक ग्रेवज़ैंड पहुँचे। 'नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला' के मुखवाक् का उच्चारण करते हुए उन्होंने अलगाववादियों को तिरंगा न जलाने की अपील की। परन्तु उन लोगों ने एक न सुनी उल्टे सेवकों पर ईंट पत्थरों की बरसात कर दी। सचखण्ड नानक धाम में हुजूर ने लड़ाई की शिक्षा नहीं दी बल्कि सदा ही झुकने का, नम्रता का संदेश दिया इसीलिए सेवक वहाँ शाँत रहे और अपने गुरू का आदेश मान कर सब कुछ हँस

कर सहन कर लिया। सेवकों ने हाथ जोड़कर फिर से तिरंगा न जलाने का अनुरोध किया। अंतत: सेवकों का यह प्यार व नम्रता भरा प्रयत्न रंग लाया और उस दिन तिरंगा जलने से बच गया।

इधर हिंदुस्तान में 31 अक्तूबर 1984 के दिन तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी की हत्या के उपरांत पूरा उत्तर भारत साम्प्रदायिक दंगों की चपेट में आ गया जिसका असर सचखण्ड नानक धाम लोनी पर भी पड़ा और डेरे में भी दंगाईयों ने कत्ले आम किया। उस समय लोनी डेरे में दरबार साहिब, सचखण्ड (हुजूर महाराज जी का निवास स्थान) व पीछे कमरे बने हुए थे। उन कमरों में लगभग 280 सेवक रहा करते थे। डेरे के इर्द-गिर्द कोई चार दीवारी भी नहीं थी। 1 नवम्बर वाले दिन दोपहर के समय दंगाईयों का एक बड़ा हुजूम डेरे की ओर आया और डेरे को घेर कर गोलियों की बौछार करने लगा। बंदूकों के सामने निहत्थे सेवक मुकाबला कैसे कर सकते थे? परन्तु हुजूर की सुरक्षा करते हुए 12 सेवकों(दास अवतार सिंह, दास नसीब सिंह, दास जितेन्द्र (बिल्लू), दास सुरेन्द्र, दास गुरबचन सिंह, दास सतनाम सिंह, दास पिशोरा सिंह, दास सुरेन्द्र (छिन्दा), चाचा मिरची, दास शान्ति) ने अपनी जान की आहूति दे कर लोनी की धरती पर शहादत पाई। दंगाई हमला करते हुए आगे बढ़ते चले आ रहे थे और जो भी उनको नज़र आता उसे आग लगाते जा रहे थे।

शाम का समय था, आकाश का रंग भी लाल सुर्ख होता जा रहा था। हमलावरों ने सचखण्ड को भी घेरा डाल लिया। घबराये हुए सेवकों ने हुजूर महाराज जी के सामने बाहर का सारा हाल

ब्यान किया। तब आपने तौलिए में लिपटे हुए अपने केशों को जोर से झटक कर कहा, "रब्बा अब बस कर!" यह कहते ही एकदम से शान्ति छा गई। हमलावरों का हुजूम धीरे-धीरे घटता चला गया और सब डेरे से भाग गए। आपने घबराये हुए सेवकों को हौसला रखने का आदेश दिया और यकीन दिलाया कि जो कुछ भी घटित हुआ है वह मालिक की ही रज़ा थी। आपने कहा कि जो हमारे मालिक ने चाहा वही हुआ है। अब इससे अधिक कुछ नहीं होगा। आपकी दिलेरी व कृपा से साध-संगत में फिर से उत्साह भर गया।

उधर पुलिस प्रशासन जब डेरे में पहुँचा तो उन्होंने सेवकों को डेरा खाली करने की सलाह दी। इसका कारण यह था कि पूरा दिल्ली शहर लूटमार व आतंक की आग में जल रहा था और अब रात घिर आई थी और पुलिस को यह डर था कि कहीं हमलावर फिर से रात के समय डेरे पर हमला न बोल दें। डेरे में रह रहे सेवकों व हुजूर महाराज जी की सुरक्षा को मुख्य रख कर पुलिस प्रशासन ने सेवकों को डेरा खाली करने की राय दी। परन्तु हुजूर महाराज जी डेरा खाली करने के हक में नहीं थे। आपने कहा कि यदि आज हमने यह डेरा खाली कर दिया तो आने वाले कई सालों तक यह हमें वापिस नहीं मिल पाएगा। इसे छोड कर जाना हमारी सबसे बड़ी भूल होगी जिसका भुगतान हम सबको करना पड़ेगा। परन्तु सेवकों की ओर से की जा रही मिन्नतों व अरदासों को कबूल करते हुए तथा न चाहते हुए भी हुजूर महाराज जी डेरा छोड़ कर कुछ सेवकों के साथ गाज़ियाबाद में स्थित अपनी छोटी बहन सत्या के घर पहुँचे। बाकी सेवक पुलिस सुरक्षा में पुलिस लाइन चले गए।

उधर गाज़ियाबाद में आतंक एक बड़ा रूप धारण कर चुका था। हमलावर घर-घर जाकर छापे मार रहे थे। हमलावरों को कहीं भी दाढ़ी केश वाला कोई भी व्यक्ति नज़र आता तो उसे ज़िन्दा ही आग लगाकर जला देते थे। हुजूर महाराज जी गाज़ियाबाद के जिस मुहल्ले (नुसरतपुरा) में रह रहे थे वहाँ भी हमलावरों तक यह खबर पहुँच गई कि इस मुहल्ले में भी कुछ केशधारी किसी के घर में ठहरे हुए हैं। समय की नज़ाकत को देखते हुए कुछ सेवकों और बहन सत्या ने आपको अपने केश त्यागने का निवेदन किया। उनकी सोच के अनुसार आपका जीवन बहुत कीमती है और सेवकों को आपके रूहानी मार्ग दर्शन की बहुत आवश्यकता है। उस समय तो महाराज जी ने अपने केश त्यागने से इंकार कर दिया परन्तु सेवकों की ओर से बार-बार की जा रही विनतियों को स्वीकार करते हुए अंतत: आपने केश त्याग दिए।

-इंग्लैण्ड में विश्व शान्ति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महाराज दर्शन दास जी-

वहाँ आप तीन दिन तक रहे और चौथे दिन आप अपने निजी सचिव दास मान सिंह के घर दिल्ली पहुँचे। वहीं से आप 10 नवम्बर वाले दिन प्रात: इंग्लैण्ड के लिए रवाना हो गये, जहाँ आप ने विश्व शान्ति सम्मेलन (World Peace

Convention) में भाग लेना था। बर्मिंघम में नेशनल एक्ज़ीबिशन सैंटर में यह सम्मेलन करवाया गया जिसमें दुनिया भर के बड़े-बड़े सन्त-महात्माओं ने भाग लिया। हुजूर महाराज जी ने इस सम्मेलन में दुनिया में शान्ति लाने के लिए अपने विचार पेश करते हुए कहा कि यदि कोई हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बने, मुसलमान है तो अच्छा मुसलमान बने, सिक्ख है तो अच्छा सिक्ख बने, ईसाई है तो अच्छा ईसाई बने क्योंकि आप ईश्वर के भेजे हुए सच्चे इन्सान हो इसलिए सच्ची राह पर चलकर आपसी भाईचारा व प्रेम कायम करो।

1984 के बाद आप लगातार तीन साल तक इंग्लैण्ड में ही रहे और वहाँ की संगत को अपनी रहमतों से निहाल करते रहे। यहाँ भी आपने कई कौतुक किए तथा संगत को वरदान देकर उनका भला किया। यहाँ भी आपकी संगत इतनी बढ़ गई कि जिस भी भवन में आपका सत्संग होता वहाँ जगह कम पड़ जाती और अधिकतर संगत को बाहर ही बैठ कर सत्संग सुनना पड़ता।

जहाँ सन्त-महात्माओं के प्यारे होते हैं जो यह समझते हैं कि सन्त दुनिया का भला करने के लिए आते हैं वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इस बात को नहीं समझते। वह ईश्वरीय राह से भटके हुए होते हैं और सन्त-महात्माओं के विरोधी बन जाते हैं। ऐसे लोगों ने सदैव ही सन्त-महात्माओं का विरोध किया है और उनके खिलाफ खड़े हुए हैं। उस समय हिंदुस्तान के बंटवारे को लेकर पंजाब में अलगाववाद की आग जल रही थी। पंजाब में कत्लेआम हो रहा था। उसे रोकने के लिए आपने भी अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए कहा कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि वह लड़ाई-झगड़े

-महाराज दर्शन दास जी-

करके, एक दूसरे का लहू बहाकर या जमीनें बांटकर ईश्वर को खुश कर रहे हैं तो उनकी यह सोच गलत है। ईश्वर इन बातों से खुश नहीं होता। इतिहास इस बात का गवाह है कि बड़े-बड़े बादशाह, राजा-महाराजाओं ने जमीनों के लिए कई लड़ाईयां लड़ीं, लूटमार की, बड़ी-बड़ी सेनाएं मरवा दीं परन्तु अन्त समय उन्हें दफनाने के लिए केवल दो गज़ जमीन की ही ज़रूरत पड़ी इसलिए हमें समझदारी से काम लेना चाहिए और नेक काम करने चाहिए।हुजूर महाराज जी ने बार-बार संगत में अपना यह संदेश दिया कि हमें कोई लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए और न ही लड़ाई झगड़े के लिए उकसाने वाली बातों की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि हमारा संदेश "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला" है हम सबका भला चाहते हैं। आपके इस सरबत के भले के संदेश के कारण संगत की गिनती में दिनों दिन बढ़ोतरी होने लगी। दिन रात बढ़ रही आपकी प्रसिद्धि आपके विरोधियों से सहन न हुई और

उन्होंने इस सच्चे सन्त को मारने का मंसूबा तैयार कर लिया।

आपने कई बार संगत में इस बात का खुलासा किया था कि कुछ अलगाववादी लोग हिन्दुस्तान के टुकड़े करना चाहते हैं। पहले बर्मा बना दिया फिर पाकिस्तान बना दिया गया। अब कश्मीर वाले कश्मीर माँग रहे हैं और पंजाब वाले पंजाब माँग रहे हैं। मेरा मालिक नहीं चाहता कि हिंदुस्तान के टुकड़े हों इसलिए हमें इसे रोकना है। हमें कोई लड़ाई झगड़ा नहीं करना है बल्कि प्यार से इस मुद्दे को सुलझाना है। हम पीछे हाथ बाँध कर जरूर बैठे हैं परन्तु अपने देश के लिए पीछे नहीं हटेंगे और इसके लिए कोई हमें मारना चाहता है तो हम मरने के लिए भी तैयार हैं। यदि हमारी मौत से हिंदुस्तान के टुकड़े होने से बच सकते हैं तो हम हँस कर अपनी जान कुर्बान कर देंगे।

हुजूर महाराज जी की यह आवाज़ सुन कर आपके विरोधियों में भगदड़ मच गई क्योंकि आपकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ चुकी थी। इंग्लैण्ड में आपकी संगत हजारों की तादाद में थी। इसलिए उन गुमराह हुए लोगों को आपकी बात रास नहीं आई और उन्होंने आपको मारने का मंसूबा तैयार कर लिया। 11 नवम्बर 1987 के दिन लंदन के डोरमर्ज़ वैल हाई स्कूल, साउथहाल में हुजूर महाराज जी का सत्संग था। उस दिन सुबह से ही आपके व्यवहार में तबदीली सी देखने को मिल रही थी। आपका व्यवहार रोज की तरह नहीं था। उस दिन आपके चेहरे से उदासी साफ झलक रही थी। सत्संग पर जाने से पहले जब आप 190 हैमस्टैड रोड वाले घर में चाय पी रहे थे तो चाय पीते-पीते कहने लगे कि आज तो चाय भी अन्दर नहीं जा रही। यह कह कर आप सीढ़ियाँ उतर कर

नीचे आ गए और बीबी हरजीत कौर (जिनको आप बड़ी भाभी कहा करते थे) को कहा कि आप अपना ख्याल रखना। इतना कह कर आप की आँखें भर आई। ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई विछोह की घड़ी आ गई हो। इसके बाद आप घर से बाहर निकले और दहलीज पर माथा टेक कर काफी देर तक घर को निहारते रहे। डेरे पहुँच कर आपने निशान साहिब पर माथा टेका और फिर गाड़ी में बैठ गए और किसी से भी बातचीत नहीं की। आप जी का व्यवहार तथा आप जी की बातें सब कुछ अजीब लग रहा था। जहाँ पहले आप बर्मिंघम डेरे से पाँच बजे चलते थे वहीं आप आज तीन बजे ही रवाना हो गए। डेरे से निकल कर आपने अपनी गाड़ी में से (आप जी की गाड़ी में फोन लगा हुआ था) अपने निजी सचिव दास मानसिंह, जो भारत में थे, उससे फोन पर बात की। उस दिन तो दास मानसिंह भी आपकी आवाज़ को पहचान न सका। उसने कहा कि महाराज जी, आज आपकी आवाज़ कुछ बदली-बदली लग रही है। आप जी ने जवाब दिया, "बेटा, समय बहुत कम है और काम बहुत ज्यादा।" दास मानसिंह से बात करके आप जी गाड़ी की पिछली सीट पर लेट गए। सफर के दौरान एक सेवक दास सुलोचना सेठी का आपको फोन आया और उसने कहा कि उसने आप जी से कुछ जरूरी बात करनी है और उसने आप जी से सत्संग के बाद कुछ समय देने के लिए कहा। उसे आप जी ने कहा, "बेटा, आज हम सत्संग हाल जल्दी खाली कर देंगे, यदि तुम हमसे मिलना चाहती हो तो दस बजे से पहले आकर मिल लेना। दस बजे के बाद हम आपसे नहीं मिलेंगे।

शाम छः बजे आप साऊथाल में अपने कार्यालय में पहुँचे। वहाँ जनसत्ता अखबार के सम्पादक श्री हरि शंकर व्यास जी के साथ एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में आपकी मीटिंग हुई। वहाँ से आप सत्संग करने के लिए जाने लगे और जाते-जाते श्री हरिशंकर व्यास जी से कहा, "बाकी विचार-विमर्श दास मानसिंह से कर लेना।" इतनी बात कह कर आप गाड़ी में बैठ कर सत्संग के लिए रवाना हो गए।

उस दिन बड़ी अजीब बात यह भी थी कि जहाँ भी आप जी का सत्संग होता था तो आप जी की गाड़ी के साथ सेवादारों की एक गाड़ी आगे और एक गाड़ी पीछे हमेशा चलती थी परन्तु आज सिर्फ आप जी की ही गाड़ी थी क्योंकि आप जी का वह सारा स्टाफ जो आपके साथ जाता था, उनमें से किसी को आपने छुट्टी पर भेज दिया था और किसी को किसी काम के सिलसिले में कहीं भेज दिया था और इस तरह उस दिन आप जी किसी को भी अपने साथ लेकर नहीं गए।

जब आप सत्संग हाल के बाहर गाड़ी से उतरे तो काफी देर मुड़कर गाड़ी को निहारते रहे। आपके चालक दास प्रीतम का कहना है कि इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ था। हुजूर सदैव गाड़ी से उतर कर बिना पीछे मुड़े आगे की ओर चले जाते थे। आप उस दिन सत्संग हाल में पहुँचे और केवल 20 मिनट का ही सत्संग किया। उस दिन सत्संग भी आपने मौत पर ही किया। उस दिन गुरु नानक साहिब द्वारा रचित वाणी का जो मुखवाक चाचा जोगा सिंह जी ने लिया था वह इस प्रकार था:

"जे रत लगै कपड़े जामा होइ पलीत,
जो रत पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु।।"

यह सारी बातें इस बात की ओर इशारा कर रही थीं कि हुजूर महाराज जी के विछोह का व धुर-धाम वापिस जाने का समय आ चुका है। हुजूर तो बार-बार आगाह कर रहे थे परन्तु हमारी बुद्धि पर ही पर्दा पड़ा हुआ था। सत्संग के बाद आप कुर्सी पर बैठ गए और संगत के साथ विचार विमर्श करने लगे। एक बीबी की जब बारी आई तो उसने आप से पूछा कि महाराज जी मौत क्या होती है? आपने बड़े प्यार से उसकी ओर देखा और हँस कर कहा कि बीबा, यहाँ बैठ जा, तुम्हें अभी दिखाते हैं कि मौत क्या होती है। इस तरह आपने उसे होने वाली घटना का पहले ही इशारा दे दिया। इतने में दो आतंकवादी, जो हुजूर को मारने का मंसूबा बना कर आए थे, आगे आए और आपको बुरा भला बोलने लगे। सत्संग भवन में उस समय लगभग 350 के करीब सेवक बैठे थे परन्तु किसी के भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सब ऐसे बैठे थे जैसे कि बुत बन गए हों। आपने उन दोनों आतंकवादियों से कहा कि तुम लोग जो मंसूबा लेकर आए हो वह काम करो ताकि हम भी अपने धुर-धाम वापिस जाएँ। आपकी यह बात सुन कर उन्होंने अपनी जेब में से पिस्तौलें निकाली और आगे से आप पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। परन्तु आपके वचन के अनुसार कि हमारे शरीर का सामने का हिस्सा फौलाद का है इसलिए इस पर किसी चीज़ का कोई भी असर नहीं हो सकता इसलिए पिस्तौल की गोलियों का कोई असर आप पर नहीं हुआ। उसी दौरान आपने अपनी आँखें बंद की और अपनी ज्योति को त्रिकुटी में से निकाल

कर धुर-धाम वापिस ले गए। आकाश-मंडल में जाती सतगुरु की ज्योति के प्रत्यक्ष दर्शन वहाँ बैठी संगत ने किए परन्तु संगत को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कुछ क्या हो रहा है। संगत यह समझ रही थी कि शायद महाराज जी कोई कौतुक कर रहे हैं। हुजूर महाराज जी भी अक्सर कहा करते थे कि जिस समय हम धुर-धाम का सफर तय करेंगे उस समय जो भी संगत के जीव वहाँ बैठे होंगे वे कुछ भी न कर पाएंगे। हम सभी के बैठे-बैठे ही निकल जाएंगे और कोई हमें रोक भी न पायेगा। आपके वचनों के अनुसार सारी संगत शान्त हो कर बैठी रही। फिर जब उन आतंकवादियों ने स्टेज पर चढ़कर हुजूर को पीछे से गोली मारी तो

-चाचा जोगा सिंह जी-

एक गोली आपके सिर में दाखिल हो गई और लहू बहने लगा। उससे पहले ही आपने अपनी ज्योति को शरीर से निकाल लिया था और यह गोली आपके बेजान शरीर को ही लगी थी। जब संगत को होश आया तो पूरे भवन में चीत्कार मच गया। संगत द्वारा अपने सतगुरू को बचाने व उन आतंकवादियों को पकड़ने की खींचतान में संगत में मौजूद चाचा जोगा सिंह, बाबा सतवंत सिंह व दास धर्म सिंह को भी गोली लग गई। संगत ने उन आतंकवादियों को मारना शुरू कर दिया परन्तु चाचा जोगा सिंह ने बेहोशी की हालत में ही उनको ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि इन्हें मत मारो क्योंकि यह सब कुछ ईश्वर की रज़ा में ही हो रहा है। इस

दौरान आपको और तीनों घायल सेवकों को ईलिंग अस्पताल ले जाया गया जहाँ आपको तथा चाचा जोगा सिंह को मृत घोषित कर दिया गया। बाबा सतवंत सिंह जी का 11 दिन इलाज चला लेकिन वह भी अपने श्वास छोड़ गए। इस तरह दोनों सेवकों ने सचखण्ड में अपने प्यारे सतगुरू के चरणों में स्थान प्राप्त किया।

-बाबा सतवंत सिंह जी-

अपनी इच्छा के अनुसार आप अपने दो ही सेवकों को सचखण्ड में लेकर गए क्योंकि तीसरे सेवक दास धर्म सिंह जी, गोली जिनकी छाती में लगकर पीठ में से निकल गई थी, की जान बच गई। यह कौतुक आपकी उस इच्छा को प्रकट करता है जिसका इशारा आप अक्सर अपने सत्संगों में दिया करते थे कि हमारे साथ धुर-धाम केवल दो ही सेवक जाएंगे। यहाँ तक कि इन दोनों सेवकों (दास चाचा जोगा सिंह व बाबा सतवंत सिंह) के साथ आप रहस्य भरे इशारों में ऐसी बातचीत करते थे जिसका किसी तीसरे को कुछ पता नहीं चलता था। 11 नवम्बर वाले दिन भी आपके व चाचा जोगा सिंह के दरमियान ऐसे ही इशारे हुए थे। संगत के साथ बातचीत के दौरान आपने चाचा जोगा सिंह जी से पानी का गिलास माँगा जो उन्होंने बाएँ हाथ से पकड़ाया जो कि सन्त-मत की मर्यादा अनुसार गलत है परन्तु इस रहस्य का भेद उस समय खुला जब आपने गिलास पकड़ते हुए अपनी अँगुली को आकाश मण्डल की ओर करके गोल घुमाया और आँखों से कुछ

इशारा किया और जवाब के तौर पर चाचा जोगा सिंह जी ने हाथ जोड़कर अपनी सहमती जताई। इससे पता चलता है कि आपने चाचा जोगा सिंह जी को धुर-धाम जाने का इशारा दे दिया था। उस दिन होने वाली घटना का कुछ ऐसा ही इशारा बाबा सतवंत सिंह जी को भी हुआ होगा तभी घर से निकलते समय उन्होंने अपनी पत्नी से कहा था कि वापसी में आपको अकेले ही गाड़ी चला कर घर वापस जाना पड़ेगा। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो बाबा जी ने कोई जवाब नहीं दिया। यह सब कुछ हुजूर की इच्छा अनुसार ही घटित हुआ था क्योंकि सन् 1976 में अपने घर बटाला में कुछ सेवकों से बातचीत करते हुए आपने अपनी सचखण्ड वापसी की यात्रा के बारे में ब्यान करते हुए पहले ही इशारा दे दिया था। उस समय आपने अपने श्रीमुख से ऐसे वचन निकाले थे जिनको सुनकर संगत के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई थी। आपने उस समय ब्यान किया था कि हमारी मौत का समय तय हो चुका है। हमने अपने मालिक की आज्ञा मानकर अपने मरने का दिन निश्चित कर लिया

-पिता श्री जगन्नाथ जी महाराज दर्शन दास जी के पार्थिव शरीर को अग्नि के सुपुर्द करते हुए-

-हुजूर महाराज दर्शन दास जी-

है। मेरा मालिक मुझे कह रहा है कि मेरी मौत उसकी सेवा करते हुए और सत्संग सुनाते हुए गोली लगने से होगी। यह काम हिंदुस्तान की धरती पर नहीं अपितु विदेश की धरती पर होगा। फिर आपने अपने सेवकों को आदेश दिया था कि हमारा पार्थिव शरीर हिंदुस्तान लाया जाए व बटाला डेरे में ही हमारा अंतिम संस्कार किया जाए। यह बातें सुनकर उस समय सेवकों की आँखें भर आई थीं।

आपके आदेशानुसार आपका पार्थिव शरीर 19 जनवरी 1988 को हिंदुस्तान लाया गया और 20 जनवरी 1988 के दिन आपके शरीर को बटाला डेरे की धरती पर अग्नि के सुपुर्द किया गया। बहुत बड़ी संख्या में संगत ने अपने सतगुरू को अश्रुपूर्ण अंतिम बिदाई दी।

आज हुजूर महाराज दर्शन दास जी शारीरिक तौर पर हमारे बीच नहीं हैं परन्तु आत्मिक तौर पर आप जी सदैव हर स्थान पर साध-संगत के साथ हाज़िर रहते हैं। आपके वचन थे कि जब भी कोई हमें सच्चे दिल से याद करेगा या संगत में बैठकर हमारी बातें करेगा तो हम वहाँ हाज़री जरूर भरेंगे। आज जब कोई भी हुजूर को सच्चे दिल से पुकारता है तो हुजूर प्रत्यक्ष खड़े हो जाते हैं तथा

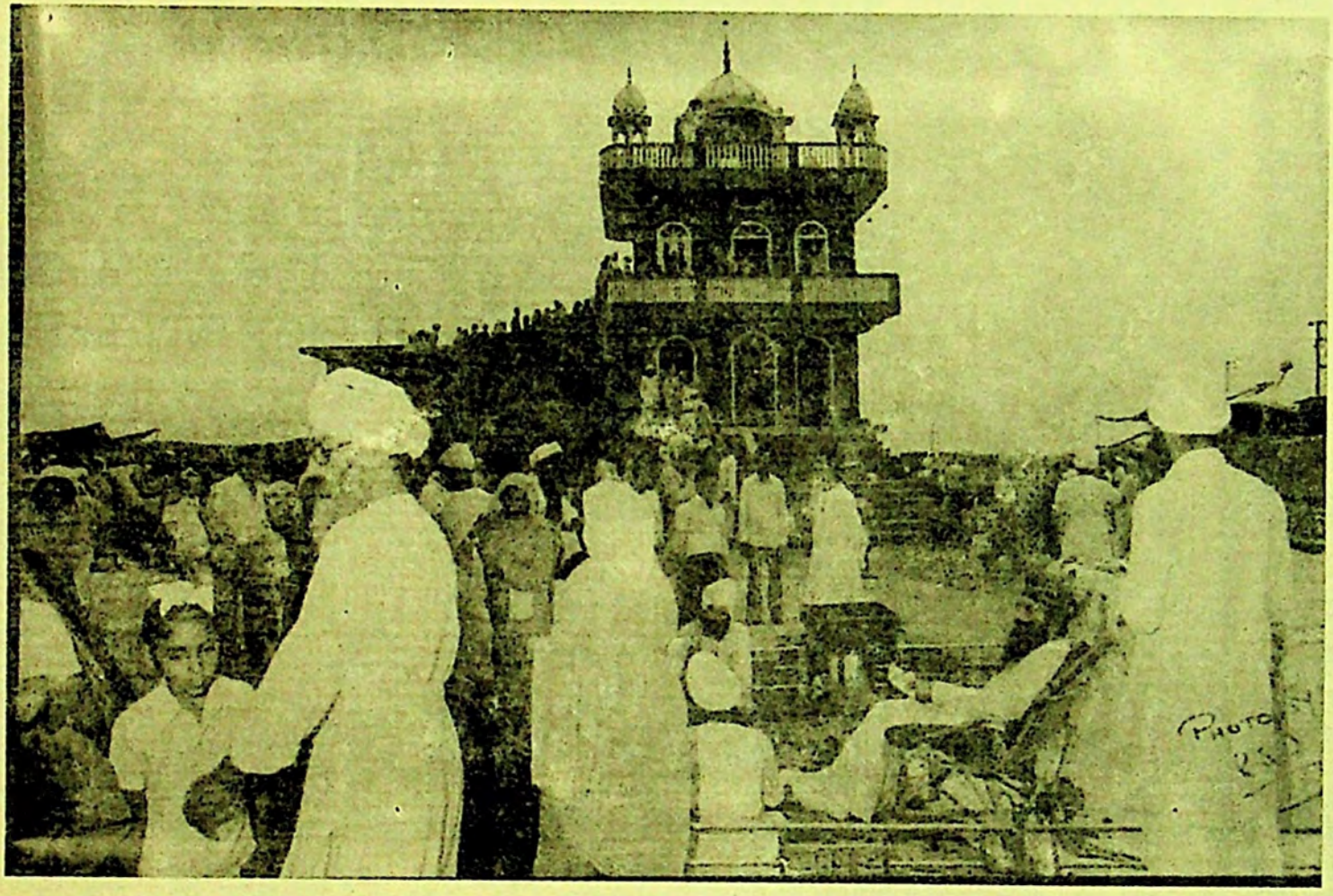

लोनी डेरा साहिब में महाराज दर्शन दास जी संगत की फरियाद सुनते हुए

अपनी कृपा से संगत का ख्याल रखते हैं। जैसे कि सत्संगों में इस बात का जिक्र किया जाता है कि जो भी पूर्ण सन्त-महात्मा होते हैं वह नाम से ही प्रकट होते हैं और नाम में ही समा जाते हैं। नाम ही देह धारण करके प्रकट होता है इसीलिए आप संगत में यह कहा करते थे कि आप हमसे या हमारे शरीर से प्रेम मत करो। हमने जो आपको नाम की बख्शिश की है यह हमने अपने शरीर का अंग काट कर आपको दे दिया है इसलिए आप नाम के साथ ही जुड़ो व नाम से ही प्रेम करो।

हुजूर महाराज दर्शन दास जी उच्च कोटि के पूर्ण सन्त-सतगुरु थे जिनका मकसद ही लोक भलाई था। जो जीव आपके पास सांसारिक सुख लेने के लिए आते तो आप उनकी झोली में खैर डालते और उनका भला करते। जो जीव आपसे ईश्वरीय सुख माँगते आप उनको नाम दान दे कर ईश्वरीय खजानों से भरपूर करते थे। ईश्वरीय घर के शहंशाह होने के बावजूद आपने अपना जीवन एक फकीर की भाँति व्यतीत किया और सारा जीवन संगत की सेवा में ही अर्पित कर दिया। आप संगत की सेवा में इस कदर जुटे रहते थे कि अपने परिवार की भी आपने कभी परवाह नहीं की। जो प्यार आपने अपने परिवार व बच्चों को देना था वह प्यार आपने समूह साध-संगत में वितरित कर दिया।

आपने सही मायने में सच्ची फकीरी धारण की थी। इसकी सब से बड़ी मिसाल यह है कि आप को संगत की ओर से इतना धन सेवा के तौर पर मिलता था कि यदि आप चाहते तो अपने परिवार के लिए बड़े-बड़े घर बनवा सकते थे परन्तु आपने संगत

की ओर से मिले धन को संगत पर ही खर्च कर दिया। आपने संगत की ओर से दिए गए पैसे में से एक पैसा भी अपने या अपने परिवार के लिए नहीं जोड़ा। यहाँ तक कि आप ने अपने परिवार के लिए अपना एक घर भी नहीं बनवाया और जो पुश्तैनी घर बटाला में था, वहाँ से भी अपने परिवार को दिल्ली ले गए और वह घर भी संगत की सेवा में ही अर्पित कर दिया। सन् 1986 में जब पंजाब के हालात खराब थे तो आपका सारा परिवार बटाला से दिल्ली आ गया था। उस समय आप इंग्लैण्ड में थे तो वहीं के अपने एक सेवक दास इंद्रजीत राय, जिसका एक घर दिल्ली के विकासपुरी इलाके में था, उसे कहा कि दिल्ली में तो आपका घर खाली पड़ा हुआ है वह आप हमें हमारे परिवार के रहने के लिए दे दो। इस तरह महाराज जी ने अपने परिवार को सेवक के ही घर में रहने दिया।

आपके अन्दर देश प्रेम का जज़्बा कूट-कूट कर भरा हुआ था। 11 नवम्बर 1987 वाले दिन ही सत्संग के बाद एक बीबी ने आप से पूछा, "महाराज जी, मैं हिंदुस्तान पहली बार जा रही हूँ, मैं वहाँ जाकर सबसे पहले क्या देखूं जिससे मुझे लगे कि मेरी यात्रा सफल हो गई है?" तो आप ने जवाब दिया कि बीबा! जब तुम हिंदुस्तान की धरती पर पैर रखो तो वहाँ की मिट्टी लेकर अपने माथे से लगा लेना। इससे ही तुम्हारी यात्रा सफल हो जाएगी क्योंकि हिंदुस्तान की मिट्टी भी बहुत ही अनमोल व पवित्र है। इससे पता चलता है कि आप अपने देश से अथाह प्यार करते थे और इसी प्रेम के कारण आपने अपने देश के टुकड़े होने से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

हुजूर महाराज दर्शन दास जी एक बहुत ही बेहतरीन शायर भी थे। आपने कई गीत, ग़ज़लें व कव्वालियां लिखीं। अपनी इस शायरी के रूप में आपने अपने प्रीतम अर्थात् ईश्वर के वियोग में कहीं आँसू बहाए तो कहीं मिलन की खुशियों में झूमे। पुरातन सन्त-महात्माओं की तरह आप जी ने भी बाणी की रचना की जो "यशवन्ती निराधार धाम पहला" के रूप में है। "यशवन्ती निराधार धाम पहला" की बाणी के शब्द रुहानियत के क्षेत्र के ऐसे अनुभव हैं जो ईश्वर की राह से भूली भटकी जीवात्माओं को नाम का रास्ता दिखा कर ईश्वर के साथ जुड़ने की प्रेरणा देते हैं और यह समझाते हैं कि सच्चे नाम से जुड़कर ही जीवात्मा का पार उतारा हो सकता है। जो भी सच्चे नाम के साथ जुड़ जाता है वह सदा ही सच्चे सतगुरू की रहमत से दोनों जहान का सुख हासिल करता है।

इस तरह हुजूर महाराज दर्शन दास जी ने जीवों को सच्चे नाम के साथ जोड़कर सन्त-मत का पौधा रोपा और इस पौधे को दास धर्म व सचखण्ड नानक धाम की रूप रेखा प्रदान की। इस पौधे की छत्र छाया में हुजूर महाराज तरलोचन दर्शन दास जी आज संगत को नाम की महिमा बता कर सच्चे नाम के साथ जोड़ रहे हैं।

भाग द्वितीय

रहमतों के सागर से....

महाराज दर्शन दास जी

कुएँ में गिरी भैंस को निकालना

यह घटना सन् 1973 की है। उस समय मैं खेती बाड़ी का काम किया करता था। बटाला डेरा के सामने ही मेरे खेत हैं जिस में एक कुआँ हुआ करता था जिसकी मुंडेर नहीं थी। एक दिन मेरी भैंस चरते-चरते उस कुएँ में जा गिरी। अचानक किसी की नज़र पड़ी तो उसने शोर मचा दिया और इर्द-गिर्द लोग एकत्र हो गए। हमने देखा कि भैंस कुएँ में गिरी हुई है और उसकी पीठ पर दो साँप बैठे हुए हैं। भैंस जोर-जोर से चिंघाड़ रही थी परन्तु नीचे साँप होने के कारण किसी की भी कुएँ में उतरकर भैंस को निकालने का यत्न करने की हिम्मत न हुई। बाहर से ही रस्सियाँ डालकर भैंस को निकालने की कोशिश की गई परन्तु सब कोशिशें बेकार हो गई। मेरा हुजूर महाराज जी के साथ बहुत ही प्रेम था और मैं हर समय अपने सतगुरु की महिमा का गुणगान करता रहता था। कुछ शरारती जीवों ने व्यंगपूर्वक मुझे कहा कि जगदीप सिंह, तुम अपने बाबा की बहुत प्रशंसा किया करते हो, कहो उसे कि आकर भैंस को बाहर निकाल दे। यह बात सुन कर मैंने मन ही मन अरदास की कि महाराज जी ये मनमति लोग आपका नाम लेकर मुझे व्यंग के तीर मार रहे हैं, आप कृपा करो और भैंस बाहर निकालो ताकि इन लोगों के मुँह बंद हो सकें।

हुजूर उस समय जलंधर में थे। मेरे अरदास करते ही कुएँ के पानी में इतना जोरदार उछाल आया कि भैंस अपने आप ही कुएँ से

बाहर आ गिरी। वहाँ मौजूद लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं। जो लोग मज़ाक कर रहे थे उनके मुँह बंद हो गए। मैंने हुजूर महाराज जी का दिल ही दिल धन्यवाद किया। इस कौतुक के बाद हुजूर महाराज जी की शक्ति का चर्चा पूरे बटाला शहर में होने लगा।

दास जगदीप सिंह (भाई दीप)

-बटाला, पंजाब-

परी को मृत्यु लोक से मुक्त करना

हुजूर महाराज जी जब पहली बार दिल्ली आए तो आप अपने सेवक इन्द्रजीत बॉबी के साले साहिब श्री सतपाल के घर ठहरे। उनका घर दिल्ली के कैम्प इलाके में था। महाराज जी तकरीबन 10-15 दिन उनके घर में रहे। वहाँ महाराज जी कीर्तन सत्संग करते रहे और जब आप वापिस जाने लगे तो सतपाल जी ने आपके चरणों में निवेदन किया कि महाराज जी, हमारे घर में बड़ी उथल-पुथल रहती है। चीज़ों को अपने आप ही आग लग जाती है घर का सामान गुम हो जाता है। हमने बहुत ही पूजा-पाठ करवाये, यहाँ तक कि झाड़-फूँक वालों के पास भी गए परन्तु कोई फर्क नहीं पड़ा। हमने दास इन्द्रजीत से आपकी बहुत प्रशंसा सुनी है और हम आपके बहुत ही आभारी हैं कि आपके चरण हमारे घर में पड़े। कृप्या करके हमें बताओ कि हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?

आपने जवाब दिया,"हम सब जानते हैं और इसी कारण आपके पास आए हैं। दरअसल आपके घर में एक परी है जो परी-लोक का रास्ता भूल गई है और आपके घर में रह रही है। इस सारी उथल-पुथल की जिम्मेदार वही है।" आपकी बात सुनकर सतपाल जी ने कहा कि महाराज जी, फिर हमें उससे छुटकारा दिलवाएं। इस पर आपने कहा कि जब हम अगली बार आएंगे तो इसे अपने साथ ले जाएंगे। हाँ, अभी के लिए हम इसे समझा जाते हैं कि यह आपको तंग न करे। फिर आपने अपने हाथों उनके घर में जल व चावलों के छींटे मारकर उस परी को

शान्त कर दिया।

दूसरी बार आप फिर उनके घर में आए। कीर्तन सत्संग करके जब आप जाने लगे तो अपने वादे के अनुसार आपने घरवालों से कहा कि अब हम इस परी को अपने साथ ले जा रहे हैं। यह कह कर आपने उस परी को सम्बोधित करते हुए कहा, "चल परी, कार की डिक्की में बैठ जा।" इस बार महाराज जी अपनी कार में आए थे। आपके वचन होते ही वहाँ मौजूद लोगों को ऐसा लगा जैसे कोई चीज़ सरसराती हुई उनके पास से गुज़र गई हो। इस प्रकार महाराज जी उस परी को लेकर बटाला के लिए रवाना हो गए। रास्ते में आप गाड़ी की पिछली सीट पर आराम कर रहे थे कि अचानक गाड़ी की डिक्की में अपने आप ही आग लग गई। मैंने कार रोकी और हुजूर से निवेदन किया कि महाराज जी गाड़ी की डिक्की में आग लग गई है। आपने परी को सम्बोधन करते हुए कहा कि परी, तुम यह काम मत करो, हम तुम्हें बटाला ले जाकर मुक्त कर देंगे और उसी समय आग बुझ गई।

कार लेकर हम जलंधर पहुँचे, वहाँ महाराज जी कमरे में जाकर आराम करने लगे। मैंने वहाँ मौजूद लोगों को बताया कि महाराज जी दिल्ली से एक परी को लेकर आए हैं जिसने कार की डिक्की में आग लगा दी थी। जब हुजूर आराम करके कमरे से बाहर निकले तो सेवकों ने आपके सामने परी के दर्शन करवाने की विनती की। महाराज जी कहने लगे कि यह परी अपने लोक का रास्ता भटक कर यहाँ फँस गई है। हमने इसको वापिस परी लोक भेजना है इसीलिए हम इसे अपने साथ लाए हैं परन्तु हम इसके दर्शन आपको नहीं करवा सकते। सेवकों ने बार-बार विनती की कि महाराज जी आप तो दोनों जहान के मालिक हो आपके लिए

कोई काम कठिन नहीं है, कृप्या करके हमें परी के दर्शन करवाओ। संगत के बार-बार आग्रह करने पर महाराज जी ने कहा कि ठीक है परन्तु इन आँखों से परी को नहीं देखा जा सकता, आप केवल उसकी मौजूदगी का अहसास कर सकते हो। यदि उसे कुछ खिलाना चाहते हो तो वह खा भी लेगी, इससे अधिक हम और कुछ भी नहीं कर सकते। यह सुनकर संगत के चेहरे पर चमक आ गई। आपके आदेश पर परी के लिए अलग से एक गद्दा बिछा दिया गया। आपने परी को आवाज़ देकर अन्दर आने को कहा। हम सबने देखा जैसे किसी के बैठने से गद्दा दब जाता है उसी तरह से गद्दा दब गया परन्तु हमें कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। फिर आपने संगत को आदेश दिया कि परी के खाने के लिए कुछ लेकर आओ। एक व्यक्ति भाग कर बाहर दुकान से छोले भठूरे व कोका कोला की एक बोतल लेकर आया और परी के लिए बिछाए गए गद्दे के सामने रख दिया। हमने देखा कि थाली में से एक-एक टूकड़ा करके भठूरे गायब होने लगे और कोका कोला की बोतल में से कोका कोला पाइप में ऊपर की ओर जाकर गायब होने लगा। यह देखकर हम महाराज जी के नाम की जय-जयकार करने लगे। थोड़ी देर बाद आपने कहा कि हमने इस परी को कल मुक्ति देनी थी परन्तु संगत की सेवा के चलते हम इसे आज ही परी लोक वापिस भेज रहे हैं। यह कह कर आपने संगत को आँखें बंद करके ध्यान करने को कहा। कुछ देर बाद आपने कहा, "जा परी, तेरे लिए परी लोक के दरवाज़े खुल गए हैं।" इसके बाद सब ने महसूस किया कि कुछ सरसराता हुआ सा कमरे से बाहर निकल गया। आपने अपनी कृपा से उस परी को वापिस परी लोक भेज दिया। वहाँ मौजूद संगत ने आपके नाम की खूब जय-जयकार की।

हुजूरी चालक : दास बचन दास

-बटाला, पंजाब-

अनाज के संग्रह पात्र को वरदान देना

हुजूर महाराज जी जब गद्दी पर बिराजमान होते थे तो संगत के दु:ख काटने के साथ-साथ खुश होकर कई वरदान भी दे दिया करते थे। महाराज जी ने अपने श्रीमुख से ऐसा ही एक वरदान मुझे (दास सुदर्शन तुल्ली) भी दिया था। मैं अपनी बैंक की नौकरी के बाद अपना सारा समय हुजूर के साथ बिताया करता था। हुजूर ने मेरे घर में कई भोरे (यह भी एक तरह की भक्ति है जो कि एक कमरे में बंद होकर की जाती है और इस दौरान किसी से भी मिला नहीं जाता।) काटे थे। मेरे घर में अनाज रखने के लिए एक संग्रह पात्र था। (जिसके ऊपर से अनाज डाला जाता है और निकासी के लिए नीचे रास्ता होता है। पंजाब में आम बोलचाल की भाषा में इसे भड़ोला कहा जाता है।) उस संग्रह पात्र में आराम से सात या आठ मन अनाज आ जाता था। पुरातन समय में अनाज संग्रह करने के लिए ऐसे ही बर्तन का इस्तेमाल किया जाता था।

महाराज जी ने 1973 में हमारे घर में 104 दिनों का भोरा काटा। जिस दिन आप भोरे से बाहर निकले तो आप बहुत खुश थे। इसी खुशी में आपने हमारे परिवार को वरदान दे दिया कि तुल्ली साहिब, आज के बाद अपने परिवार के लिए इस भड़ोले में से अनाज निकालते रहना, कभी भी इसमें से अनाज समाप्त नहीं होगा परन्तु याद रखना कि इसका ढक्कन उठाकर मत देखना।

समय गुजरता गया। हमारा परिवार भड़ोले में से अनाज निकाल कर इस्तेमाल करता रहा परन्तु अनाज था कि खत्म होने

पर ही नहीं आ रहा था। इस तरह हम हुजूर के वरदान का आनन्द उठाते रहे। एक दिन बैठे-बैठे मेरे मन में ख्याल आया कि हम काफी समय से इस बर्तन में से अनाज निकाल कर खा रहे हैं और अनाज इसमें डाल नहीं रहे। क्यों न देखा जाए कि इस भड़ोले में ऐसा क्या है कि अनाज खत्म ही नहीं हो रहा?

जब मैंने अपनी उत्सुकता को दबाने के लिए भड़ोले का ढक्कन उठाया तो यह देख कर दंग रह गया कि उसमें केवल मुट्ठी भर ही अनाज बाकी बचा हुआ था। तब मुझे बहुत पछतावा हुआ कि मैंने हुजूर के वरदान का मान नहीं रखा। परन्तु कहावत है "अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।" परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था। जब हुजूर तक यह बात पहुँची तो आप जोर-जोर से हँसने लगे और कहा, "हमने तुल्ली साहिब से कहा था कि हमारे वरदान पर शक मत करना और भड़ोले का ढक्कन मत उठाकर देखना। भड़ोले में से अनाज तो कृपा से ही निकल रहा था। जैसे ही तुल्ली साहिब ने कृपा से पर्दा उठाया तो कृपा पीछे हट गई।" मुझे आज भी अपनी इस गलती पर पछतावा होता है।

दास सुदर्शन तुल्ली

-बटाला, पंजाब-

टंकी मे फूँक मार कर मोटर साइकिल चलाना

1977 में लोनी डेरे की स्थापना के बाद मैं हुजूर महाराज जी का सेवक बना। मैंने काफी समय तक आप की नज़दीकी का आनन्द उठाया। पेशे से मैं एक मोटर साइकिल मकैनिक हूँ। मेरे पास अपनी मोटर साइकिल भी थी। एक दिन अपने काम से फारिग होकर मोटर साइकिल पर सवार हो कर मैं लोनी डेरे आया। वहाँ पहुँच कर मैंने आपको माथा टेका तो आप अपनी मौज में आकर कहने लगे कि आज हम तुम्हारी मोटर साइकिल चलाएंगे, तुम हमारे पीछे बैठ जाओ। आपने मुझे पीछे बिठाया और डेरे से चल पड़े। जब हम करोल बाग पहुँचे तो अचानक मोटर साइकिल बंद पड़ गई। बहुत कोशिश करने के बाद भी जब मोटर साइकिल चालू नहीं हुई तो आपने पूछा कि इसमें तेल है भी या नहीं? मैंने कहा कि महाराज जी कल ही डलवाया था। फिर भी जब मैंने टंकी का ढक्कन खोल कर देखा तो टंकी एकदम खाली थी। तेल खत्म हो गया था। आस-पास के लोगों से पूछा तो पता चला कि पैट्रोल पंप यहाँ से काफी दूर है। हुजूर को शायद कहीं पहुँचने की जल्दी थी। उस समय हुजूर ने वचन किए, " हे दाता! इस पैट्रोल की टंकी पर कृपा करो, हमें कहीं जल्दी पहुँचना है।" यह कह कर आपने टंकी में फूँक मारी और टंकी का ढक्कन बंद कर दिया। फिर किक मारी और मोटर साइकिल चालू हो गई। महाराज जी और मैं गाड़ी पर सवार हो कर दोबारा चल पड़े। रास्ते में आपने कहा कि दर्शन सिंह हमने तुम्हारी गाड़ी में ऐसा

पैट्रोल डाल दिया है जो कभी भी खत्म नहीं होगा, बस कभी भी टंकी का ढक्कन उठाकर मत देखना।

परन्तु मैं नासमझ, हुजूर महाराज जी के इस वरदान को सम्भाल न सका और उसको परखने की गलती कर बैठा। तीन चार दिन तक तो मैं खुशी-खुशी मोटर साइकिल चलाता रहा परन्तु अधिक दिन तक अपनी उत्सुकता को दबा न सका और चार दिनों के बाद मेरे मन में विचार आया कि गाडी में पैट्रोल डलवाये कई दिन हो गए हैं और गाडी है कि अपने आप ही चले जा रही है, देखूँ तो सही कि टंकी में ऐसा क्या है जिससे यह मोटर साइकिल चल रही है। जैसे ही मैंने टंकी का ढक्कन खोला तो देखा टंकी बिल्कुल सूखी हुई थी। ढक्कन बंद करके जब मैंने गाड़ी चालू करनी चाही तो गाड़ी चालू न हुई। धक्का लगाकर मैं गाड़ी को पैट्रोल पंप तक लेकर आया और पैट्रोल डलवाया तो गाड़ी चालू हुई। उसी समय मैं गाड़ी लेकर डेरे गया और हुजूर के पास पहुँचकर सारी बात बताई। मेरी बात सुनकर हुजूर कहने लगे कि हमने तुम्हे पहले ही कहा था कि टंकी का ढक्कन खोल कर मत देखना फिर तुमने ऐसा क्यों किया? गाड़ी तो दाता की फूँक से चल रही थी और चलती रहती परन्तु तुम्हारे मन में शक आ गया और तुम्हारा भरोसा डोल गया तो दाता ने भी अपनी कृपा का हाथ पीछे खींच लिया। आपके यह वचन सुनकर मुझे बहुत पछतावा हुआ।

-दास दर्शन सिंह

-दिल्ली-

ससुराल में सेवकों को खाना खिलाना

यह साखी हुजूर महाराज जी के विवाह के बाद की है। विवाह के बाद हुजूर जब भी अपनी ससुराल कपूरथला जाते तो आपकी सास (श्रीमती करतार देई, जिनको आप भाबो कहते थे) हर बार यही शिकवा करती थी कि महाराज जी, आप जब भी घर आते हो तो कुछ भी नहीं खाते। उस दिन जब आप अपने ससुराल पहुँचे तो भाबो ने फिर से वही शिकायत की कि महाराज जी, आप कुछ नहीं खाते। आप जी बोले कि ठीक है हम जरुर खायेंगे। आप ऐसा करो कि खाना तैयार करके पहले इन सेवकों को खिला दो। उस समय मैं (दास बचन) और घुक (दास इन्द्रजीत) महाराज जी के साथ थे। घर की औरतों ने खाना तैयार करवाया और हमें खिलाने लग गई। हुजूर बाहर बरामदे में टहलने लगे। आपने तब वहाँ ऐसा कौतुक किया कि हम खाना खाते जा रहे थे परन्तु हमारा पेट नहीं भर रहा था। घर की औरतें आटा गूँधती जा रही थीं और रोटी पकाती जा रही थीं। आटा खत्म होता जा रहा था परन्तु हमारा पेट था कि भरने पर ही नहीं आ रहा था। एक औरत ने जब आपको बाहर टहलते हुए और डकार मारते हुए देखा तो उसकी समझ में सारी बात आ गई और उसने सारी बात भाबो जी को बताई। यह सुनकर भाबो जी बाहर आये और आपसे कहने लगे कि महाराज जी, मुझे माफ कर दो, आइंदा कभी भी मैं आपको खाना खिलाने की जिद्द नहीं करूंगी। भाबो जी की बात सुनकर आप हँस पड़े और हमें आवाज़ मारकर कहा, "हाँ भई, पेट भर गया?" तो हम दोनों ने कहा कि हाँ जी। फिर आपने कहा कि

पानी का गिलास पीकर बाहर आ जाओ। हम दोनों महाराज जी का हुक्म मान कर पानी पीकर बाहर आ गए और उनके साथ वापिस डेरे आ गए।

हुजूरी चालक : दास बचन दास

-बटाला, पंजाब-

सरबजीत के स्थान पर स्वयं हाज़री भरना

वेदों शास्त्रों और धर्म ग्रन्थों मे लिखा है कि गुरु के चरणों में ही परम सुख है और इस सुख का आनन्द लेने के लिए हुजूर महाराज जी के प्रेमी अपने घर के सुख छोड़कर गुरु साहिब के दरबार में हाजरी भरा करते थे। मैं बैंक में नौकरी करता था और अपनी पत्नी के साथ सलाना भण्डारों पर लोनी डेरे आया करता था। डेरे आकर मैं सेवा करता और ईश्वरीय सुख हासिल करता।

एक बार की बात है कि सलाना भण्डारे पर मैं दो दिनों की छुट्टी लेकर लोनी डेरे आया। भण्डारा सम्पन्न होने के बाद आपने मुझे वापस न जाने दिया और कहा कि बेटा, आप अभी कुछ दिन और यहाँ रहो। महाराज जी की आज्ञा को मैं मोड़ न सका परन्तु मेरे मन में यह विचार आ रहा था कि मैं हुजूर की आज्ञा मानकर रूक तो गया हूँ परन्तु अपने बैंक से मैंने छुट्टी तो ली ही नहीं। मैं बार-बार यही सोच कर परेशान होता रहा कि बैंक तक सन्देश कैसे पहुँचाया जाए क्योंकि उन दिनों फोन की सुविधा न के बराबर ही हुआ करती थी। मेरे मन में यही डर था कि कहीं मेरी नौकरी छूट न जाए।

दो दिनों के बाद हौंसला करके मैंने हुजूर महाराज जी के समक्ष फिर से निवेदन किया कि हुजूर मेरी बैंक की नौकरी .....। परन्तु अभी मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि आपने मुझे कहा, "भाई बैंक की नौकरी तुम नहीं कर रहे। हम आपसे करवा रहे हैं तो ही आप कर रहे हो। जाओ नाम सुमिरन की ओर ध्यान

लगाओ।'' इतनी बात सुनकर मैं चुप हो गया।

जब 15-20 दिन और निकल गए तो मैंने फिर से आपसे छुट्टी माँगी तो आपने कहा कि भाई अभी कहाँ जाना है? डेरे में सेवा करो और ईश्वर का गुणगान करो। नौकरी की ओर से बेफिक्र रहो वह हम स्वयं देख लेंगे। आपकी यह बात सुनकर मैंने सत् बचन कहा और सेवा में जुट गया।

मुझे डेरे में रहते हुए एक महीना बीत गया परन्तु अब मैंने अपने मन में सोच लिया था कि अब हुजूर से छुट्टी नहीं माँगूंगा, जब आप स्वयं कहेंगे तभी वापिस जाऊँगा।

कुछ दिनों के बाद आपने मुझे अपने पास बुलाया और कहा,''आपको यहाँ रहते हुए काफी समय हो गया है, अब समय आ गया है कि आप घर जाओ और अपनी नौकरी करो। हमारी ओर से आपको छुट्टी है। हम कुछ दिनों तक बटाला पहुँचेंगे तो वहीं आपसे मिलेंगे।'' मैंने उसी समय माथा टेका और वापिस घर की ओर चल पड़ा। दूसरे दिन सवेरे जब मैं बैंक पहुँचा तो रास्ते भर यही सोचता रहा कि बैंक में जाकर क्या कहूँगा कि मैं इतने दिन क्यों गैर हाजिर रहा? तरह-तरह के जवाब सोचता हुआ और हुजूर महाराज जी को याद करता हुआ मैं बैंक आ गया और चुपचाप अपनी सीट पर आकर बैठ गया। बैंक का मैनेजर अभी आया न था। बाकी सभी ने मुझे सत् श्री अकाल बुलाई परन्तु मैंने कुछ भी न कहा। मुझे हैरानी तब हुई जब मैंने हाजरी का रजिस्टर देखा जिस में मेरी कोई भी गैर हाजरी दर्ज नहीं थी परन्तु डर के कारण मैं किसी से कुछ भी पूछ न सका।

जब छोटे मैनेजर से मैंने भेद जानने की कोशिश की तो उसने

मुझे देखते ही कहा,"सिंह साहिब, क्या बात है? कल तो आप बहुत ही सुंदर लग रहे थे आज आपका मुँह क्यों उतरा हुआ है? तबीयत तो ठीक है?" उसकी यह बात सुनकर मैं बिना कुछ कहे बाहर आ गया परन्तु मेरी हैरानी बढ़ती ही जा रही थी। मैनेजर भी आ गया था पर उसने भी कुछ न कहा। किसी का भी ऐसा व्यवहार न था जैसे मैं उनसे बहुत दिनों बाद मिल रहा हूँ। मैं भी अपना रोजाना का काम चुपचाप करता रहा। शाम को डरते-डरते मैं मैनेजर के कमरे में गया तो मेरे कुछ कहने से पहले ही मैनेजर ने कहा कि क्या बात है सरबजीत, आज बहुत उदास लग रहे हो? कल तो तुम बहुत खुश थे, आज क्या बात है? यह सुनकर मैंने उससे पूछा कि उसे मुझमें क्या फर्क नज़र आ रहा है? मैनेजर ने जवाब दिया कि पिछले कुछ दिनों से तुम्हारा चेहरा एकदम खिला-खिला सा रहता था और सारे काम तुम बहुत ही फुर्ती से करते थे परन्तु आज तुम्हारा चेहरा कुछ उतरा हुआ है।

मैनेजर की बात सुनकर व दूसरों के व्यवहार से मुझे एक बात समझ में आ गई कि हो न हो स्वयं हुजूर महाराज जी मेरे स्थान पर बैंक में हाजरी भरते रहे हैं।

कुछ दिनों बाद जब हुजूर महाराज जी बटाला आए तो मैं भी उनके दर्शन करने के लिए डेरे पहुँचा। सत्संग के बाद हुजूर ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा,"क्यों भाई सरबजीत, ठीक हो न? हमने तुम्हारा पूरा साथ निभाया है।" आपकी यह बात सुनकर मेरे मुँह से कोई बात न निकली बस माथा टेक दिया कि महाराज जी आपकी लीलाएँ हमारी समझ के बाहर हैं।

दास सरबजीत सिंह

-बटाला, पंजाब-

रुह का पलटाना

यह घटना उन दिनों की है जब हुजूर महाराज जी लोनी डेरे में रहा करते थे। रात का समय था और आप कुछ सेवकों के साथ टहल रहे थे। हुजूर के साथ जो सेवक थे उनमें मैं (दास अनिल खुराना) व दास मिन्ना भी था जिसका चाचा लंगर घर में सेवा करता था। स्वभाव में कड़वा होने के कारण उन्हें चाचा मिरची कह कर बुलाया जाता था। उस रात चाचा मिरची सेवा करने के बाद लंगर घर के पास ही अपनी चारपाई डालकर सोया हुआ था। हुजूर की नज़र जब उन पर पड़ी तो आपने पूछा कि वह खाट पर कौन सो रहा है? सेवकों ने कहा कि महाराज जी चाचा मिरची सो रहा है। सेवकों का जवाब सुनकर आपने कहा कि देखो अब हम क्या करते हैं। यह कहकर आप जी ने चाचा मिरची को सम्बोधन करते हुए पूछा, "तुम कौन हो?" उत्तर में चाचा मिरची ने सोते-सोते ही जवाब दिया कि हुजूर मैं गुलाम मुहम्मद। आपने पूछा कि तुम कहाँ से आए हो तो उसने जवाब दिया कि जी, पाकिस्तान से। इतना सुनकर आप जोर से हँस पड़े और दास मिन्ना से कहने लगे कि देख ले मिन्ने! तेरा चाचा क्या कह रहा है, वह मुसलमान हो गया है। मिन्ने ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज जी आपकी लीलाएँ हमारी समझ से बाहर हैं। महाराज जी मुस्कुरा पड़े और चाचा मिरची से फिर पूछा कि भाई तुम कौन हो? इस बार आपकी आवाज़ सुनकर चाचा मिरची नींद में से उठ बैठा और फटाफट कहने लगा कि महाराज जी, मैं तो आपका

सेवक हूँ जिसे आप मिरची कह कर बुलाते हो। हमें बहुत ही हैरानी हुई कि यह सब क्या हो रहा है? हमारी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए हुजूर महाराज जी ने हमें बताया कि हमने इसकी रुह पलट दी थी। इतनी बात सुनकर हम सबने आपको नमस्कार किया और अपने आप को भाग्यशाली जाना कि हम जिस सतगुरु की शरण में हैं वह इतनी शक्ति का स्वामी है कि रुहें भी पलटा सकता है।

दास अनिल

-मोती नगर, दिल्ली-

मुर्दे को जीवन दान

यह घटना उस समय की है जब हुजूर महाराज जी लोनी डेरे में ही रह रहे थे और आपकी शोभा दूर-दूर तक फैल रही थी। उस दिन रोजाना की तरह दरबार सजा हुआ था। हुजूर महाराज जी द्वारा मनोनीत बाबा जी गद्दी भुगता रहे थे और सेवादार अपनी ड्यूटी पर खड़े थे। उस समय एक परिवार रोते हुए डेरे में आया। वह परिवार लोनी में ही रहता था और उनके घर में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। उस परिवार वालों ने आपकी शोभा सुनी हुई थी कि यहाँ एक बाबा जी रहते हैं जिनके श्रीमुख से निकली हुई हर बात पूरी होती है। आपका यश सुनकर वे लोग मृतक को साथ लेकर डेरे में आ गए और बाबा जी को ही महाराज समझकर उनके सामने विलाप करने लगे। बाबा जी के पूछने पर उन लोगों ने बताया कि मृतक अपने परिवार का इकलौता पुत्र है और घर में वह अकेला ही कमाने वाला था। सारा परिवार इसके सहारे ही जीवन यापन कर रहा था परन्तु अब इसकी मृत्यु से हमारा सब कुछ समाप्त हो गया है। यह कह कर सभी जोर-जोर से रोने लगे। बाबा जी ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा कि ईश्वर की रज़ा को कोई बदल नहीं सकता। जिसने भी इस धरती पर जन्म लिया है उसकी मौत तय है। आप ईश्वर की रज़ा को मान कर धीरज रखो। परन्तु मृतक के परिवार वाले बार-बार एक ही बात दोहराए जा रहे थे कि नहीं बाबा जी, आप इस पर कृपा करो हम आपकी शोभा सुनकर यहाँ आए हैं। हम जानते हैं कि यदि आप

एक बार कह दोगे तो यह उठकर खड़ा हो जाएगा। डेरे में रह रहे दास साहनी जी, जो कि पेशे से डाक्टर थे उन्होंने उस शव को देखा और कहा कि इसे तो मरे हुए काफी समय हो गया है। बाबा जी ने उन्हें समझाया कि आप इसको ले जाओ और इसका संस्कार कर दो। मृतक की पत्नी के विलाप से विचलित होकर एक सेवादार का दिल पसीज गया और उसने उस औरत से कहा कि जिसकी शोभा सुनकर आप लोग यहाँ आए हो वह बाबा जी यह नहीं हैं। महाराज जी तो वहाँ सामने से आ रहे हैं आप जाकर उनके चरण पकड़ लो यदि वह चाहेंगे तो इसको जीवनदान मिल जाएगा।

महाराज जी उस समय कुछ सेवादारों के साथ डेरे में पीछे रहने वाले परिवारों को मिलकर आ रहे थे और अभी रामायण भवन के पास ही पहुँचे थे। मृतक के परिवार वालों को आशा की किरण नजर आ गई और वह भागकर हुजूर के चरणों से लिपटकर विलाप करने लगे। मृतक की पत्नी ने रो-रोकर हुजूर को सारी व्यथा कह सुनाई। महाराज जी ने उनको दिलासा देते हुए कहा कि ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की दलील नहीं चलती सो बेटी तुम उसकी रज़ा मानो परन्तु उस औरत ने आपके चरण पकड़ लिए और जोर-जोर से विलाप करने लगी। आप जी करुणा के अथाह सागर थे और उसका यह विलाप आपसे नहीं देखा गया। आपने एक सेवक से सरोवर साहिब से एक कटोरी जल मँगवाया और जल हाथ में लेकर वचन किए," हे दाता, यह आपका ही बच्चा है इस पर दया करो और इसे जीवन दान बख्शो।" इतना कहकर आपने जल के छींटे उस शव पर मारे। उसी समय उस मृतक के शरीर में

कुछ हलचल हुई। आपने फिर से छींटे मारे और कहा कि बेटा उठ जाओ। यह सुन कर वह मृत तुरन्त उठकर बैठ गया। उसके घरवालों का विलाप खुशी में तबदील हो गया। आप का यह कौतुक देखकर वहाँ खड़े जीव आपकी जय-जयकार करने लगे।

इस कौतुक के बाद आप जी ने उस परिवार से कहा कि हमने अपना काम कर दिया है अब आप इसे यहाँ से ले जाओ और पीछे मुड़कर नहीं देखना और अपने गाँव में भी इसके बारे में कोई चर्चा मत करना। मुर्दों को जीवन दान देने वाले ऐसे सतगुरु दर्शन दास जी का जितना भी गुणगान किया जाए कम है।

दास गुज्जर मल

(रोहिणी डेरा, दिल्ली)

जन्म-मरण से मुक्ति

यह साखी मेरे भाई दास काला की है जो मेरठ का रहने वाला था और ट्रक चलाता था। मैं उन दिनों लोनी डेरे में ही रहा करती थी और आज भी लोनी डेरे में ही रह रही हूँ। मेरा भाई काला सत्संग सुनने के लिए और सेवा करने के लिए अक्सर लोनी डेरे आया करता था।

एक बार वह डेरे में लंगर घर के लिए लकड़ियों का ट्रक भर कर लाया। उस समय हुजूर महाराज जी सरोवर साहिब के पास टहल रहे थे। काला जब महाराज जी के पास पहुँचा तो उसे देखकर आप कहने लगे कि काले हम तेरी सेवा से बहुत खुश हैं, आज जो तुम हमसे माँगोगे हम तुम्हें देंगे। माँगो क्या माँगते हो? आपके इन शब्दों को सुनकर उसने आपका धन्यवाद किया और जवाब दिया कि हुजूर आपका दिया सब कुछ दास के पास है मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए। महाराज जी ने दोबारा कहा कि बेटा, फिर भी जो माँगना है माँग ले हम तुमसे बहुत खुश हैं। उसने फिर इन्कार किया। महाराज जी ने तीसरी बार फिर उसे कहा कि आज जो तुम माँगोगे तुम्हें मिलेगा। इस बार काले ने हाथ जोड़कर हुजूर के चरणों में निवेदन किया कि महाराज जी, अगर कुछ देना ही है तो मुझे जन्म-मरण से मुक्त कर दो। काले की यह बात सुनकर महाराज जी ने कहा कि काले इतनी बड़ी चीज़ आज तक हमसे किसी ने नहीं माँगी, यह तुमने हमसे क्या माँग लिया?

परन्तु हमने तुम्हें वचन दिया है इसलिए हम अपना वचन जरूर पूरा करेंगे।

इस घटना को काफी समय बीत गया। हुजूर महाराज जी इंग्लैण्ड चले गए और काला उसी प्रकार सेवा करता रहा। अचानक काला एक दिन बीमार हो गया। उसको मेरठ के सरकारी अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा जहाँ वह दो तीन दिन तक रहा। मैं उसके लिए घर से रोटी बना कर ले जाती थी। एक दिन काले ने शाम को मुझे कहा कि गुग्गी, मेरे लिए सुबह मटर पनीर की सब्जी बना कर लाना और आठ बजे से पहले आ जाना। यदि आठ बजे तक न आ पाए तो मत आना। मैंने घर जाकर सबको काले की इच्छा के बारे में बताया और रात को ही सब्जी का सामान मंगवा कर रख लिया परन्तु सुबह सब्जी बनाते समय मुझे देर हो गई।

उस समय अस्पताल में कमानियों का काम करने वाला एक सेवक जीत सिंह व मेरी बड़ी बहन भी थी। आठ बजने से कुछ मिनट पहले ही उनको ऐसा लगा जैसे कोई दरवाजा खोलकर अन्दर आया हो। काले ने दोनों हाथ जोड़कर थोड़ा सा उठकर "नानक नाम चढ़दी कला - तेरे भाणे सरबत दा भला" बुलाई और कहा कि महाराज जी, आप आ गए? इतना कह क़र वह लेट गया और थोड़ी ही देर में उसने शरीर छोड़ दिया। दास जीत जब यह खबर देने के लिए घर आया, उस समय मैं अस्पताल जाने के लिए सीढ़ियाँ उतर रही थी। जीत ने मुझे पूछा कि गुग्गी तूँ कहाँ जा रही है तो मैंने कहा कि काले के लिए मटर पनीर की सब्जी बना कर ले जा रही हूँ। जीत ने कहा कि अब अस्पताल जाने की

कोई जरूरत नहीं है, काला घर ही आ रहा है। उसे हमेशा के लिए छुट्टी मिल गई है। यह कह कर उसने मुझे काले की मौत की खबर सुनाई। मैंने आनन-फानन में हुजूर महाराज जी को इंग्लैण्ड में फोन कर दिया। फोन हुजूर महाराज जी ने स्वयं उठाया। मैंने हैलो की आवाज़ सुनते ही कहा कि महाराज जी, काला.....! इतना सुनते ही महाराज जी ने मेरी बात पूरी होने से पहले ही कह दिया कि बेटा, काला हमारे पास पहुँच गया है। हम उसे अपने पास ले आए हैं। उसने हमसे जो वचन माँगा था हमने आज वह पूरा कर दिया है। इस तरह आपने मौज में आकर अपने सेवक को जो वचन दिया उसे पूरा कर दिया। पूर्ण महापुरुष के मुख से निकला हुआ एक-एक वचन अटल होता है, सत्य होता है। धरती इधर-उधर हो सकती है परन्तु सतगुरु के वचन नहीं।

दास गुरिंदर कौर (गुग्गी)

(लोनी डेरा, उत्तर प्रदेश)

बॉब को अपाहिज होने से बचाना

यह घटना 1985 की है। मंगलवार का दिन था। हुजूर महाराज जी तय प्रोग्राम के अनुसार चैटम (इंग्लैण्ड) में सत्संग करने पहुँचे। उस समय दरबार में बैठी साध-संगत रुहानी कीर्तन की अमृत वर्षा का आनन्द ले रही थी। सत्संग से पहले हुजूर महाराज जी के साथ आए हुए सेवकों ने नाश्ता पानी किया परन्तु हुजूर ने कुछ भी नहीं खाया। हुजूर ने सत्संग किया और सत्संग के बाद संगत भुगताने से पहले कपड़े बदलने के लिए कमरे में गये और कमेटी के प्रधान से कहा कि हमें कुछ देर के लिए कमरे में अकेला छोड़ दिया जाए। यह कह कर आप वहीं पड़ी हुई एक सैटी पर ही लेट गए। साथ आए हुए सेवकों को घबराहट हुई कि पता नहीं हुजूर को क्या हुआ है? आज तक कभी भी हुजूर ने सत्संग के बाद आराम करने के लिए नहीं कहा था। सेवकों ने आपसे पूछा कि हुजूर आपको किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं परन्तु आपने किसी भी बात का जवाब न दिया और यथावत् सैटी पर आँखें बंद करके लेटे रहे। इस तरह लग रहा था कि हुजूर शारीरिक तौर पर तो वहीं थे परन्तु आत्मिक तौर पर नहीं। काफी देर लेटे रहने के बाद आप उठे और कपड़े बदल कर सत्संग भवन में आ गए। सेवादारों ने आप से पूछा कि हुजूर क्या हुआ था? परन्तु आप ने कोई भी जवाब नहीं दिया। संगत भुगताने के बाद आप किसी सेवक के घर चरण डालने के लिए गए। मौका देखकर सेवकों ने दोबारा आप जी से पूछा की कि महाराज जी, आपको क्या हुआ था

जो आप काफी देर तक आराम कर रहे थे? आप जी ने उनके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। कुछ देर बाद आपने चुप्पी तोड़ते हुए सेवकों से कहा कि बॉब के पिता करनैल सिंह को फोन करके पूछो कि अब बॉब कैसा है?

उन दिनों मोबाइल फोन नहीं हुआ करते थे पर महाराज जी की कुछ ऐसी लीला हुई कि दास करनैल सिंह का फोन उसी सेवक के घर आ गया जहाँ हुजूर बैठे हुए थे। उसने बताया कि बॉब अब बिल्कुल ठीक है। उस फोन के बाद सेवकों को पता चला कि बॉब के शरीर के निचले हिस्से में अचानक खून की सप्लाई बंद होने से उसके शरीर का निचला हिस्सा सुन्न हो गया था। डाक्टरों को उसके ठीक होने की उम्मीद कम ही थी। जिस समय महाराज जी चैटम में सत्संग कर रहे थे उस समय करनैल सिंह अपने बेटे की तंदरूस्ती के लिए हुजूर के स्वरूप के सामने अरदास कर रहा था। उसी समय हुजूर ने उसका दु:ख काट दिया, नहीं तो उसे सारी उम्र अपाहिज बनकर रहना पड़ता। सारे सेवकों ने आपकी जय-जयकार करते हुए आपका धन्यवाद किया।

दास ललित (इंग्लैण्ड)

जॉर्ज बाबा जी का दु:ख काटना

हुजूर महाराज जी इंग्लैण्ड में अधिकतर शनिवार वाले दिन सत्संग करते थे। जिस समय की यह घटना है उस दिन भी शनिवार था और सत्संग चल रहा था। वहाँ एक नर्स व्हील चेयर पर एक गोरे को, जिसका नाम जॉर्ज था, लेकर आई। (जिस अस्पताल में वह दाखिल था वहाँ किसी ने उसे महाराज जी के बारे में बताया था कि तुम उस महापुरुष के पास जाओ, वही तुम्हारा दु:ख दूर कर सकते हैं। उसकी बात मानकर ही वह महाराज जी के दरबार में आया था।) एक सेवादार से जॉर्ज ने कहा कि वह अधिक समय तक व्हील चेयर पर नहीं बैठ सकता इसलिए उसे महाराज जी से पहले मिलने दिया जाए। सत्संग समाप्त होने के बाद सेवक ने उसकी यह विनती महाराज जी तक पहुँचाई और महाराज जी ने उसे तुरंत अपने पास बुला लिया। महाराज जी ने उससे पूछा कि उसे क्या दु:ख है? तुमने ये पेटियाँ क्यों बाँध रखी हैं? जॉर्ज ने अपना सारा दु:ख-दर्द ब्यान किया। अभी उसकी बात पूरी नहीं हुई थी कि हुजूर ने आदेश दिया कि अपनी सारी पेटियाँ उतार दो और जो भी दवाईयाँ तुम्हारे पास हैं उन्हें फैंक दो। यह सुनकर जॉर्ज व उसकी नर्स बहुत हैरान हुए। हुजूर ने जॉर्ज को आदेश दिया कि कुर्सी से उठकर खड़े हो जाओ। जॉर्ज व नर्स ने एक दूसरे को हैरानी से देखा। हुजूर ने फिर से उसे उठ कर खड़े होने के लिए कहा। उसने उठने की कोशिश की परन्तु उठ न पाया। हुजूर ने उसी समय जॉर्ज पर अपनी कृपा की ऐसी दृष्टि

डाली कि उसकी सारी दु:ख तकलीफ दूर हो गई और आपने फिर से उसे उठने के लिए कहा। इस बार वह उठकर खड़ा हो गया। हुजूर ने उसे कहा कि वह सामने दीवार को हाथ लगाकर आओ। उसने हुजूर के आदेश का पालन किया और दीवार को हाथ लगा कर वापिस आ गया। तब हुजूर ने उसे कहा कि जॉर्ज हमने आज से तुम्हारे सारे दु:ख काट दिए हैं अब तुम बिल्कुल ठीक हो। अब तुम्हें किसी भी दवाई की जरूरत नहीं है। हमने तुमसे मिशन के काम लेने हैं। तुमने संगत की सेवा करनी है। इस तरह हुजूर ने एक पल में उसके वर्षो के दु:ख खत्म कर दिए और उसे नया जीवन दिया। संगत के किसी जीव ने हिम्मत करके पूछा कि महाराज जी, कई जीवों को तो आप एक पल में ठीक कर देते हो और किसी को ठीक करने से भी इंकार कर देते हो, ऐसा क्यों? महाराज जी ने कहा कि भाई मर्जी हमारी नहीं हमारे मालिक की चलती है। किसी भी जीव का दु:ख दूर करने से पहले उसकी श्रद्धा व विश्वास को देखा जाता है। जिसका भरोसा जितना पक्का होता है उसका दु:ख उतनी जल्दी काटा जाता है। इसके बाद हुजूर ने जॉर्ज को प्रचारक बना कर मिशन के प्रचार की ड्यूटी दी।

हुजूरी चालक-दास प्रीतम (इंग्लैण्ड)

पूर्ण महापुरुष के रूप में मिलना

हुजूर महाराज जी की लोनी वाले बाबा जी के नाम से यश-कीर्ति दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। दिल्ली के पश्चिमी हिस्से में ख्याला के नाम से एक जगह है। मैं (दास गुरचरण) उन दिनों ख्याला में रहा करता था। हर साल मैं हुजूर साहिब (नांदेड़ साहिब, महाराष्ट्र) दर्शनार्थ जाया करता था। इस बार जब मैं हुजूर साहिब गया तो मेरे मन में वैराग्य आ गया और मैंने वहाँ अरदास की कि हे सच्चे पातशाह! यदि धरती पर कोई पूर्ण-पुरुष, कोई वक्त का हाकिम है तो मेरे ऊपर कृपा करो कि मैं उसके चरणों के साथ जुड़ सकूँ और अपना जीवन सफल कर सकूँ। माथा टेक कर मैं घर वापिस आ गया। घर वापिस आते ही मेरे किसी जानने वाले ने मुझे बताया कि लोनी में एक बाबा जी हैं जो दुनिया पर बहुत कृपा बरसा रहे हैं। दूर-दूर से लोग आकर उनसे मुँह माँगी मुरादें पाते हैं। मैं दर्शन करने जा रहा हूँ, हो सके तो तुम भी मेरे साथ चलो। उस समय मैं पगड़ी बाँध रहा था, मेरे दिमाग में आया कि छोड़ो क्या बाबाओं के पास जाना है। शायद उस दिन महाराज जी के दर्शन करना मेरी तकदीर में नहीं था। सो उस दिन मैंने इन्कार कर दिया। दिन निकल गया। फिर मन में पूर्ण-पुरुष के प्रति वैराग्य आया कि अपने आप तो अरदास करके आया है कि कोई पूर्ण-पुरुष मिला दो और अब जब जाने का मौका आया है तो स्वयं ही जाना नहीं चाहता? उसके बाद मैंने अपने उसी मित्र के साथ मिलकर लोनी जाने का प्रोग्राम बना लिया। जिस बस में हम बैठे थे वह संगत से भरी हुई थी। सफर के दौरान गुरु साहिब की पुरानी साखियाँ और संगत पर हुई कृपा के बारे में

मुझे संगत से पता चला। मैं सुनता तो रहा पर मन में पूर्ण विश्वास न था बस इतना ही था कि किसी बाबा जी के दर्शन करने के लिए जा रहे हैं। कंडक्टर ने पूछा कि भाई कहाँ जाना है? तो मैंने कहा कि दो नंबर बस स्टाप पर जहाँ बाबा दर्शन दास जी का डेरा है। कंडक्टर ने यह बात सुनते ही कहा कि मैं भी वहाँ गया था, बाबा जी बहुत ही करनी वाले हैं। मेरा भी कोई काम नहीं बन रहा था, गुरु साहिब ने मुझ पर कृपा की तो मुझे पता ही न चला कि मेरे काम कैसे अपने आप बनते चले गए। अब मेरे मन के विचार निर्मल होने लगे कि गुरु साहिब की कीर्ति तो चारों ओर सुनने को मिल रही है कोई करनी वाले बाबा जी ही लग रहे हैं। इस प्रकार मेरा भरोसा थोड़ा पक्का हो गया कि बाबा जी के दर्शन जरूर करने चाहिए। डेरे पहुँच कर देखा कि काफी संगत बैठी हुई थी और गुरु साहिब डिब्बा बजा कर कीर्तन कर रहे थे। कीर्तन सम्पन्न करने के बाद आपने आवाज़ दे देकर संगत के जीवों को अपने पास बुलाना शुरू कर दिया और मैं बैठा सब कुछ देखता रहा। अब मेरे भाग्य जागने का समय आया। सबके दिलों की जानने वाले मन की मुरादें पूरी करने वाले महाराज जी ने आवाज़ दी कि सरदार जी! वहाँ काफी सरदार जी बैठे हुए थे। मेरी समझ में कुछ भी न आया तो मैंने पीछे मुड़कर देखा कि पता नहीं बाबा जी किस सरदार जी को बुला रहे हैं? मैंने अपने पीछे बैठे हुए सरदार जी से कहा कि चलो, बाबा जी आपको बुला रहे हैं। महाराज जी ने फिर कहा कि सरदार जी खड़े हो जाओ, क्या अब तुम्हारा नाम लेकर आवाज़ लगायें? फिर पगड़ी का रंग बता कर आपने कहा कि लाल रंग वाली पगड़ी पहने हुए सरदार जी आएँ। मैं हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। महाराज जी ने मुझे अपने पास बुलाकर पूछा कि बताओ क्या बात है? मैंने कहा कि जी कुछ नहीं,

बस आपके दर्शन करने के लिए आया हूँ। महाराज जी ने कहा कि नहीं तुम दर्शन करने के लिए या प्रसाद लेने के लिए नहीं आए जो काम करने आए हो वह क्यों नहीं कहते? मेरे साथ जो सेवादार था उसने भी हामी भरी कि वाकई यह आपके दर्शन करने के लिए ही आया है। अब महाराज जी ने जरा गुस्से से कहा कि जिस काम आये हो वह क्यों नहीं कहते? मैंने फिर भी कहा कि बाबा जी, मैं तो केवल आपके दर्शन करने के लिए ही आया हूँ। महाराज जी की आँखें जैसे रोशनी से भर गई और चेहरा जलाल से भर गया। मैं हुजूर के जलाल की ताब न झेल सका और मैंने अपनी आँखें झुका लीं। गुरु साहिब ने अब नाम लेकर कहा कि गुरचरण! तू इतनी दूर हुजूर साहिब जाकर अरदास करके आया है कि मुझे कोई सतगुरु मिला दे और अब हमारे सामने झूठ बोल रहा है? इतना सुनकर मेरे पैरों के नीचे से जैसे जमीन निकल गई और मेरी आँखें खुली की खुली रह गई। मुझे अहसास हो गया कि बाबा जी वाकई पूर्ण-महापुरुष हैं जिन्होंने मेरे दिल की बात जान ली है। फिर मैंने आपके चरणों में माथा टेक कर कहा कि दाता जी, आप तो दिलों की जानने वाले हो। आज से मैं आपका मुरीद हूँ। मेरे अच्छे बुरे कर्मों पर पर्दा डालकर मुझे बख्श लो और अपने चरणों में स्थान दो। मैं जिस कारण आया था आपने पहचान लिया। मैं भूल गया था परन्तु आप नहीं भूले। बस अब मुझे अपने चरणों के साथ जोड़ लो। मैं आज भी हुजूर का सेवक हूँ और गुरु साहिब के बताए रास्ते पर चलकर डेरे की सेवा कर रहा हूँ।

दास गुरचरण सिंह

(रोहिणी, दिल्ली)

पानी से गाड़ी चलाना

महाराज दर्शन दास जी की रहमतों को समझना बहुत ही मुश्किल है। महाराज जी का निजी चालक होने के कारण दास को हुजूर के साथ रहने का बहुत मौका मिला है। महाराज जी के बेशुमार कौतुकों की गवाही भरना मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात है। एक बार की बात है कि महाराज जी बटाला से दिल्ली आ रहे थे। रात का समय था। सफर के दौरान महाराज जी अक्सर कार की पिछली सीट पर लेट जाया करते थे। उस समय भी महाराज जी पिछली सीट पर आराम कर रहे थे। जब कार ब्यास के पास पहुँची तो गाड़ी में तेल समाप्त हो गया और गाड़ी खड़ी हो गई। दरअसल मैं हमेशा बटाला से चलने से पहले गाड़ी की टंकी पूरी भरवा लिया करता था परन्तु उस दिन मैं तेल भरवाना भूल गया था जिसका मुझे बहुत ही पछतावा हुआ। जब महाराज जी ने पूछा कि क्या बात है? गाड़ी क्यों रोक दी? तो मैंने हुजूर को अपनी गलती बता कर माफी माँगी।

कार भी ऐसी जगह बंद हुई थी जहाँ आस-पास कोई भी पैट्रोल पम्प न था और रात भी काफी हो गई थी। महाराज जी ने कहा कि तुम ऐसा करो कि सड़क के किनारे खड़े हो जाओ और जो भी गाड़ी निकले उसे रूकवाकर उससे थोड़ा तेल माँग लेना। मैं काफी देर सड़क के किनारे खड़ा रहा परन्तु कोई भी गाड़ी न आई। हुजूर महाराज जी कार में से निकल कर बाहर आ गए और मुझसे पूछा कि कार में कोई खाली कैनी है? मैंने हाँ में जवाब दिया।

आपने वचन किए कि सड़क के इस ओर एक छोटा सा रास्ता है जो नीचे की ओर उतरता है और नीचे एक तालाब है। तुम वहाँ जाकर कैनी में पानी भर कर ले आओ। सीधे उस रास्ते पर उतर जाना और इधर-उधर मत देखना। महाराज जी की आज्ञा मानकर मैं कैनी लेकर उस रास्ते पर चल पड़ा और देखा कि सचमुच नीचे एक तालाब था। वहाँ से पानी भर कर मैं वापिस गाड़ी के पास आ गया। मेरे हाथ से कैनी लेकर हुजूर ने अरदास की, 'हे दाता, हम आपका नाम लेकर टंकी में पैट्रोल के स्थान पर पानी डाल रहे हैं क्योंकि हमारे चालक ने गाड़ी में तेल नहीं डलवाया और कोई पम्प भी खुला नहीं है और हम बीच जंगल में खड़े हैं। आप चालक की गलती को माफ करके पानी को पैट्रोल बनाकर हमें दिल्ली पहुँचा दो।" इतना कह कर आपने मुझे वह पानी टंकी में डालने को कहा। मैंने आदेश मानकर वह पानी टंकी में डाला और गाड़ी स्टार्ट की तो गाड़ी स्टार्ट हो गई और इस तरह हम दिल्ली पहुँच गए। रास्ते में मैंने महाराज जी से कहा कि हुजूर आप इतनी ताकत के मालिक हो कि पानी से भी गाड़ी चला सकते हो फिर हमें गाड़ी में तेल भरवाने की क्या जरूरत है? इस पर हुजूर ने कहा कि ईश्वर की ताकत दुनिया के भले के लिए होती है अपने सुख आराम के लिए नहीं।

हुजूरी चालक दास बचन दास

(बटाला, पंजाब)

अंगुली के इशारे से पैट्रोल भरना

हुजूर महाराज जी का एक और कौतुक मुझे देखने को मिला। एक बार ऐसे ही रास्ते में गाड़ी में पैट्रोल समाप्त हो जाने की वजह से गाड़ी बंद पड़ गई। उस समय भी पैट्रोल पम्प दूर ही था। महाराज जी कार से बाहर निकले और सड़क के किनारे खड़े हो गए। मैंने देखा कि जब भी कोई गाड़ी निकलती तो आप ऊंगली से इशारा करते और कहते कि चल भाई एक लीटर। इस तरह दस-ग्यारह बार करने के बाद आप गाड़ी में बैठ गए और मुझे गाड़ी चालू करने का आदेश दिया। गाड़ी चालू करने के बाद हम एक पैट्रोल पम्प पर पहुँचे तो महाराज जी ने मुझे पैट्रोल भरवाने का आदेश दिया। मैंने कहा कि महाराज जी वापिस डेरे जाने के लिए तो काफी पैट्रोल गाड़ी में है फिर पैट्रोल भरवाने की क्या जरूरत है? इस पर महाराज जी ने कहा कि जिन से पैट्रोल एक-एक लीटर उधार लिया था उनको वापिस भी तो करना है। यह तेल अब वापिस उनकी टंकियों में चला जाएगा। यह सुनकर मैंने आपको नमस्कार किया और चुपचाप गाड़ी में तेल भरवाने लगा।

हुजूरी चालक दास बचन दास

(बटाला, पंजाब)

प्रत्यक्ष प्रमाण

महाराज दर्शन दास जी जब भी लोनी डेरे में कीर्तन दरबार सजाया करते थे तो उनकी यही कोशिश रहती थी कि संगत का प्रत्येक जीव उस अमृत वर्षा में आकर भीगे व उसका आनन्द उठाए ताकि ईश्वरीय सत्ता से जुड़ने का उसे अवसर प्राप्त हो।

जिस दिन की यह घटना है उस दिन सर्दियों का समय था. शाम के समय काफी संगत के जीव गुरु साहिब के दर्शन करने व अपने कर्म उच्च करने के लिए आए हुए थे। लोनी डेरे में रामायण घर हुआ करता था। रामायण घर के बाहर ही महाराज जी की गद्दी लगी हुई थी। गुरु साहिब ईश्वरीय ज्ञान बाँट रहे थे और ब्यान कर रहे थे कि ईश्वर सब जगह पर विद्यमान है और उसकी मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं हिल सकता। इतने में एक सेवक ने बहुत हिम्मत जुटा कर महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि महाराज जी, आप कई बार अपने सत्संगों में ईश्वर की मर्जी, ईश्वर की रज़ा का जिक्र करते हैं परन्तु हम लोगों की समझ बहुत छोटी हैं हम आपकी ऊँची बातें समझ नहीं पाते। कृप्या करके इस बात को विस्तार से बताएँ ताकि हमारे विश्वास को बल मिले और हमारे भ्रम दूर हो सकें। गुरु महाराज जी ने मुस्कुरा कर उस सेवक की ओर देखा। जब भी कोई महापुरुष मुस्कुरा दे तो समझ लेना चाहिए कि कोई लीला या कोई चमत्कार होने वाला है।

दरबार सजा हुआ था, संगत के जीव आकर गुरु साहिब को माथा टेक कर अपनी जगह बैठ रहे थे। इतने में महाराज जी का एक सेवक राम लुभाया आया। उसने कुर्ता पायजामा व आधी बाजू का स्वैटर पहना हुआ था। जैसे ही वह महाराज जी को माथा टेकने के लिए आगे झुका, महाराज जी ने मुस्कुराते हुए राम

लुभाया की ओर अँगुली से इशारा करके कहा कि बस बेटा। इतना कहते ही राम लुभाया वहीं खड़ा हो गया तथा वह वहाँ से हिल नहीं सका। महाराज जी दो अढाई घण्टे कीर्तन करते रहे और वह जिस स्थिति में था उसी स्थिति में वहीं बुत बन कर खड़ा रहा। कीर्तन के बाद महाराज जी ने अँगुली के इशारे से उसे आज़ाद कर दिया और उसने महाराज जी को माथा टेक दिया वह वहीं गिर गया गुरु महाराज जी ने उस सेवक से, जिसने प्रश्न किया था, उसे उठाया और कहा कि मैं तो अपने मालिक का एक अदना-सा मुरीद हूँ, मेरे इशारे भर से यह इतनी देर तक हिल नहीं पाया तो आप सोचो कि यदि मेरे मालिक की इच्छा हो कि पत्ता भी नहीं हिलना चाहिए तो कैसे हिल पाएगा? वैसे तो संसार अपनी चाल चले जा रहा है परन्तु जब ईश्वर नहीं चाहता कि यह काम नहीं होने देना तो वह नहीं होने देता। उसके सोचने मात्र से वह चीज़ रुक जाती है। वह चाहे तो युग भी रुक जाए धरती, सूरज गतिहीन हो जाएँ। यह तो ईश्वर की रचना है। इस प्रकार महाराज जी ने हमें ईश्वरीय ज्ञान को विस्तार से समझाया और साथ ही यह कौतुक करके उसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें दिया।

-दास गुज्जरमल-

दिल्ली

अन्तर्यामी

मेरा नाम दास सुखविन्दर है और मैं बटाला शहर का निवासी हूँ। सन् 1982 के दास धर्म स्थापना दिवस के कार्यक्रम में मैं पहली बार लोनी डेरे आया था। बटाला से भी संगत इस कार्यक्रम में सेवा के लिए पहुँची थी। डेरे में लंगर की व्यवस्था बहुत बढ़िया थी। डेरे की सजावट भी बहुत खुबसूरत थी। रात के समय पूरा डेरा जगमगा रहा था। भण्डारे के बाद महाराज जी अक्सर संगत के साथ कई-कई घण्टे तक लगातार बैठे रहते थे। उस दिन भी महाराज जी बटाले की संगत के साथ बैठे हुए थे। सभी अपने-अपने प्रश्न महाराज जी से पूछ रहे थे। मेरे दिल में भी कुछ प्रश्न थे और मैंने तय किया कि यदि महाराज जी मेरे प्रश्नों का उत्तर देंगे तभी मैं समझूँगा कि महाराज जी ईश्वरीय ताकत के स्वामी हैं। संगत की तादाद काफी थी और मेरे अंतर हृदय में यही चल रहा था कि महाराज जी मुझे अकेले में आकर पूछें कि बताओ वह कौन-सा प्रश्न है जो तुम पूछना चाहते हो। इतने में हुजूर ने संगत को दूसरे कमरे में जाने का आदेश दिया। जब संगत जाने लगी तो मैंने सोचा कि मुझे भी कमरे से बाहर जाना चाहिए। मेरा अभी एक कदम दहलीज के बाहर ही गया था कि महाराज जी ने आवाज़ देकर कहा कि मास्टर जी, आप यहाँ आइए और हमारे साथ बैठिए। मैं महाराज जी के चरणों में बैठ गया। कुछ पल खामोशी के बाद महाराज जी ने कहा कि पूछो मास्टर जी, आप क्या प्रश्न पूछना चाहते हो? ऐसे कौन-से प्रश्न हैं जिनके कारण आपने हमें बटाला की संगत के साथ ढंग से बैठने भी नहीं दिया। आप जो भी पूछना चाहते हो पूछ कर अपनी तसल्ली कर लो। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तो मैं सोच ही रहा था और

महाराज जी ने मेरे दिल की बात जान ली। मेरे अन्दर एक वैराग्य सा उत्पन्न हो गया और मैंने हुजूर के चरणों में सिर रख दिया। महाराज जी ने मुझे कन्धों से पकड़ कर उठाया और कहा, "बेटा! क्या पूछना चाहते हो?" मैंने कहा महाराज जी मेरे मन की शंका दूर हो गई है और अब कोई प्रश्न बाकी नहीं रह गया। मेरी तसल्ली हो गई है। कहा जाता है किसी भी सन्त-महात्मा के आगे समर्पण करने से पहले अच्छी तरह ठोक बजाकर अपनी तसल्ली कर लेनी चाहिए। बुजुर्गों का कहना है कि किसी भी राह पर चलने से पूर्व उसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसी तरह गुरु धारण करने से पूर्व सोच विचार करना चाहिए और धारण करने के पश्चात् सब कुछ उस पर छोड़ देना चाहिए और पूरा विश्वास करना चाहिए। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। उस दिन के पश्चात् मैंने महाराज जी को अपना गुरु धारण कर लिया और उन पर पूर्ण विश्वास करके उनकी सेवा में लग गया।

कुछ समय बाद मुझे फिर लोनी डेरे जाने का मौका मिला। शाम का समय था और मैं सरोवर साहिब की परिक्रमा कर रहा था। मन ही मन में सोच रहा था कि महाराज जी में कितनी शक्ति समाई हुई है जो पूरी दुनिया के जीवों की संभाल करते हैं। उधर महाराज जी अपने कुछ सेवकों के साथ बैठे थे और उन्होंने एक सेवादार को यह कह कर कि वह व्यक्ति, जो सरोवर के समीप घूम रहा है, उससे पूछो कि यदि वह बटाले वाला प्रोफैसर है तो उसे कहो कि वह हमारे पास आ जाए। मैं सेवादार के साथ महाराज जी के पास पहुँचा। उस समय हुजूर के पास कुछ बच्चे बैठे थे जिन्हें महाराज जी तबला व हारमोनियम सिखा रहे थे। महाराज जी ने एक सेवक को कहकर कुर्सी मँगवाई और मुझे बैठने के लिए कहा। मैंने कहा कि महाराज जी, मैं आपके सामने इस कुर्सी पर कैसे बैठ सकता हूँ तो महाराज जी ने कहा कि यह हमारा हुक्म है आप कुर्सी पर बैठिए। मैं चुपचाप बैठ गया। महाराज जी

अपने हाथों से अपनी दाढ़ी सँवारने लगे। हुजूर की दाढ़ी बहुत सुन्दर, घनी व काली थी। मेरे दिल में विचार आया कि इतनी सुन्दर दाढ़ी तो केवल रब्ब की ही हो सकती है। मेरे हृदय में यह बात अभी चल ही रही थी कि महाराज जी ने कहा, "हाँ प्रोफैसर साहिब! ऐसी दाढ़ी तो केवल रब्ब की ही हो सकती है।" उनकी यह बात सुनकर मैं चुप कर गया और कुछ नहीं बोला।

उसके बाद यह सन् 1983 की बात है। मैं बटाला डेरे में था। महाराज जी ने दिल्ली से आना था और संगत उनका इंतजार कर रही थी। शाम के समय जब महाराज जी डेरे पहुँचे तो उन्होंने सभी जीवों का हाल-चाल पूछा और संगत से बातचीत करने लगे। महाराज जी ने संगत में यह ऐलान किया कि आज हमें कुछ ऐसे जीव चाहिएं जो आज अभी हमें एक हज़ार रुपये सेवा दे सकें। बदकिस्मती से उस समय मेरी जेब में इतनी सेवा नहीं थी। मैं मन ही मन अपने आप को कोसता रहा। संगत में से बहुत जीवों ने उठकर महाराज जी को सेवा दी और महाराज जी उनका नाम अपनी डायरी में लिख रहे थे। मैं अपने आप को कोसते हुए यह सोचने लगा कि यदि महाराज जी आज उधार कर लें तो कितना अच्छा हो और इस प्रकार मेरा नाम भी महाराज जी की डायरी में लिखा जाए। जिन लोगों ने सेवा देनी थी, जब वे दे चुके तब महाराज जी ने अचानक ही घोषणा की कि यदि किसी के पास अभी सेवा नहीं है तो वह अपना नाम लिखवा दे और वह सेवा कल भी दे सकता है। मेरे मन की जैसे मुराद ही पूरी हो गई और मैंने फौरन उठकर कहा कि महाराज जी, सबसे पहले मेरा नाम लिखिए।

उस दिन डेरे में महाराज जी के साथ बैठे-बैठे काफी देर हो गई और महाराज जी ने सभी को हिदायत कर दी कि कोई भी डेरे में नहीं रूकेगा सभी अपने-अपने घर जाएंगे। अब रात काफी हो

चुकी थी तो मैंने सोचा कि अपनी छोटी बहन के घर ही रूक जाता हूँ। हर बार की तरह महाराज जी ने मेरे मन की बात सुन ली और आदेश दिया कि कोई अपने रिश्तेदार के घर भी नहीं रूकेगा। मुझे मेरी पत्नी की ओर से सख्त हिदायत थी कि अन्धेरा होने से पहले घर आना है। यदि रात हो जाए तो जहाँ हो वहीं रूक जाना। जब सब रास्ते बंद हो गए तो मैंने पैदल ही अपने घर जाने का फैसला किया। मेरा घर वहाँ से बहुत दूर था। पैदल ही पैदल मैं कादियाँ चुंगी तक पहुँच गया। अब हुजूर का कौतुक देखो कि नज़दीक के होटल पर रोटी खाता हुआ एक ट्रक ड्राइवर रोटी छोड़कर मेरे पास आया और पूछने लगा कि सरदार जी आपको कहाँ जाना है? मैंने कहा-कादियाँ। उसने कहा कि मुझे हरखोवाल जाना है। मैं दो रातों से सोया नहीं हूँ। मैं तुम्हें साथ ले चलता हूँ परन्तु तुम मुझे जगाकर रखना कहीं मुझे नींद न आ जाए। रोटी खाने के बाद हम ट्रक में बैठ गए। मैं उससे ईश्वर की बातें ही करता रहा और वह हामी भरता रहा। जब हरखोवाल का मोड़ आया तो कहने लगा कि भाई तुमने मुझे जगाकर रखा है चलो मैं कादियाँ से होकर गुजर जाता हूँ। कादियाँ में वह मेरे घर के पास मुझे उतार कर चला गया। अब मैं डरते-डरते घर की ओर चला कि कहीं पत्नी से झगड़ा न हो जाए। महाराज जी से अरदास की कि मुझे बचा लेना। घर में अक्सर सभी दरवाजों को कुंडी लगाकर सोते हैं। घर के दरवाजे पर पहुँचकर मैंने घंटी बजाने से पहले दरवाजा खोलने की कोशिश की। जब दरवाजा खुल गया तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। जैसे ही मैंने घर में प्रवेश किया तो दरवाजा बंद करते हुए थोड़ा सा शोर हुआ। दरवाजे की आहट सुनकर मेरी पत्नी ने आवाज़ दी, "कौन है?" मैंने कहा 'मैं हूँ।' वह गुस्से में उठकर मेरे नजदीक आई और मैं मन ही मन महाराज जी को अरदास करता रहा कि इसका गुस्सा शान्त ही रखना। वह इतने गुस्से में थी कि कुछ बोल न पाई बस गुस्से से पाँव पटकते हुए

दूसरे कमरे में जाकर सो गई। सुबह उठकर जब मैं अपनी ड्यूटी पर जाने लगा तो उसने मुझे रोज़ाना की तरह नाश्ता करवाया और ऐसा लगा जैसे उसे रात की घटना याद ही न रही हो। यह सारी घटना मैंने महाराज जी को डेरे में सुनाई तो महाराज जी खूब हँसे जैसे पहले ही से वे सारी घटना जानते हो और सारा कौतुक उन्होंने ही रचा हो। महाराज दर्शन दास जी की ताकत को समझना बहुत मुश्किल है उनकी महिमा का पार अनंत है।

दास सुखविन्दर

(बटाला, पंजाब)

मार्ग-दर्शक

मेरे महाराज दर्शन दास जी से मिलने और लोनी डेरे पहुँचने के पीछे बहुत ही रोचक कथा है। मैं एक ट्रक चालक था। मैं महाराज दर्शन दास जी को जानता नहीं था और इससे पहले न कभी उनका नाम सुना था और न ही उनके दर्शन किए थे। लोनी डेरे के बारे में भी मुझे कुछ नहीं पता था। लेकिन लगता था कि मेरा महाराज जी के साथ पिछले जन्मों का कोई सम्बन्ध था इसलिए महाराज जी ने मुझे अपने से मिलवाने के लिए यह कौतुक किया। यह महाराज जी से मिलने से पहले की बात है कि मेरा कारोबार नहीं चल रहा था। आर्थिक तौर पर काफी तंगी थी और दूसरा, मेरा बेटा सोढ़ी बीमार हो गया। वह इतना बीमार हुआ कि उसकी गर्दन एक ओर लटक गई, खून पानी बनने लगा। उसे दिल्ली के कलावती अस्पताल में दाखिल करवाया गया। सोढ़ी को ग्लुकोस लगा हुआ था। मैं शाम को अस्पताल पहुँचा, वहाँ मेरी पत्नी मनजीत कौर भी बैठी हुई थी। डॉक्टर के राऊड पर आने का समय हुआ तो नर्स ने हमें बाहर जाने के लिए कहा हम बाहर बगीचे में आकर बैठ गए। तभी वहाँ एक व्यक्ति आया जिसने धारीदार कमीज़ और सफेद पायजामा पहना था लम्बे घने काले और घुँघराले बाल व दमकता नुरानी चेहरा जिस पर जलाल था, आकर सीधे मुझ से प्रश्न किया कि क्यों भाई, कैसे बैठे हो?मैंने कहा, "भाई क्या बताएँ, मेरा लड़का बीमार है उसे लेकर आए हैं।" उस व्यक्ति ने कहा, "तुम उसे लोनी ले जाओ, वहाँ पर एक महान सन्त का डेरा है। वहाँ जाकर वह ठीक हो जाएगा।" मैंने आँखें बंद करके 'अच्छा' ही कहा था कि आँखें खोली तो वहाँ कोई न था। मैंने मन में अरदास की कि मेरा बच्चा सुबह तक ठीक होकर घर पहुँच जाए तो मैं लोनी अवश्य जाऊँगा। वैसा ही हुआ मेरा बेटा ठीक हो गया और दूसरे दिन सुबह ही उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। दूसरे दिन मैंने घरवाली से कहा कि भाग्यवान दो रोटी दे दे, मैंने लोनी जाना है।

लोगों से लोनी का रास्ता पूछते-पूछते मैं लोनी डेरे पहुँच गया परन्तु वहाँ के तौर तरीकों से मैं वाकिफ नहीं था। सेवकों ने जैसा करने के लिए कहा मैं करता रहा। लंगर चखा, जल लिया, तिलक लगवाया और सत्संग भवन में बैठ गया। उस समय सरोवर के आगे चबूतरा हुआ करता था जहाँ बैठकर महाराज जी सत्संग करते थे। जब महाराज जी सत्संग के लिए आकर गद्दी पर बैठे तो मैंने देखा कि यह तो वही व्यक्ति है जो मुझे अस्पताल में मिला था और जिसने मुझे लोनी आने के लिए कहा था। सत्संग के उपरान्त महाराज जी कहने लगे कि जो लोग पहली बार आए हैं वे खड़े हो जाएँ। मैं भी खड़ा हो गया। महाराज जी कहने लगे कि आज संगत में एक जीव ऐसा भी आया है जो कुछ लेकर जाएगा। उसके पश्चात् महाराज जी ने कीर्तन किया और गद्दी भुगताने लगे। मैं कीर्तन में इतना ध्यान मग्न हो गया कि मेरी सुध-बुध खो गई और मुझे कुछ भी पता नहीं चला। मुझे होश तब आया जब मुझे आवाज़ देकर बुलाया कि भाई सतनाम सिंह आ जाओ। मैं भौंचक्का रह गया कि यहाँ ऐसा कौन है जो मेरा नाम जानता है? मेरे सोचने की देर थी कि महाराज जी ने कहा 'बेटा, हम जानते हैं और कोई नहीं जानता, आ जाओ।' मैं उठ कर गया, जाकर जल की बोतल उन्हें पकड़ाई। महाराज जी ने पूछा कि हाँ भाई, क्या चाहिए? मेरे नेत्रों से अश्रु झलक उठे। मैंने कहा कि दाता जी आपसे क्या छुपा है बस अपनी कृपा दृष्टि से निहाल कर दो। महाराज जी ने मेरे सिर पर हाथ रखा और मुझे आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् मेरा महाराज जी के प्रति लगाव बढ़ता गया और मैं अक्सर डेरे में आने लगा।

महाराज जी इतने अन्तर्यामी थे कि हम जो भी विचार या प्रश्न अपने मन में लेकर आते उसे महाराज जी उसी समय जान लेते थे। मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ था। सन् 1981 में मार्च महीने के आखिरी दिनों की बात है, मैं सत्संग सुनने डेरे गया।

उस समय डेरे के अन्दर प्रवेश करने पर बाई और महाराज जी

के निवास स्थान से आगे एक इमारत थी जिसका नाम रामायण-घर था वहाँ महाराज जी की गद्दी सुशोभित की जाती थी। मैं अपनी कमाई की सेवा का दसवंत लेकर गुरु चरणों में अर्पित करने गया था। जब मैं सेवा लेकर डेरे जा रहा था तो रास्ते में मेरे मन में विचार आया कि कितना अच्छा हो, यदि आज महाराज जी अपने कर कमलों द्वारा छेनी हथोड़े से गुल्लक खोलें और मेरी सेवा परवान करें।

कीर्तन सत्संग के उपरांत संगत बारी-बारी से प्रसाद लेते हुए अपनी-अपनी सेवा गुरु चरणों में भेंट कर रही थी। मैंने भी अपनी सेवा गुरु चरणों में भेंट करते हुए गुल्लक में डाल दी। अरजोई करने के पश्चात् महाराज जी ने एक सेवक को गुल्लक खोलने का आदेश दिया। फिर अचानक उसे रूकने को कहा और महाराज जी ने कहा कि छेनी हथोड़ा लेकर आओ, हम स्वयं गुल्लक खोलेगें। इतना सुनना था कि मेरा मन गद्-गद् हो गया, जैसे मन वांछित फल मिल गया हो। गुल्लक खोलते समय महाराज जी कहने लगे कि यही मेरे सेवक की इच्छा थी। महाराज जी ने सेवा स्वीकार की। महाराज जी अन्तर्यामी होने के साथ-साथ अपने भक्तों का ध्यान भी रखते थे।

उसके पश्चात् मैं महाराज जी से मिला और उनसे घर जाने की आज्ञा लेनी चाही। महाराज जी ने कहा कि तेरे हुजूर तो यहाँ बैठे हैं और तूँ घर जाने की इजाजत माँग रहा है। घर जाओ, अपना सामान उठाओ और यहाँ डेरे पहुँच जाओ। मैंने घर पहुँचकर पत्नी से सलाह-मश्वरा किया और तीन-चार दिन बाद सामान लेकर डेरे पहुँच गया। शाम का वक्त था, महाराज जी डेरे में रहने वाले परिवारों के साथ बैठे हुए थे। उन्होंने इशारा किया कि जाओ उस छप्पर में जाकर अपना सामान रख दो। फिर महाराज जी ने पूछा क्यों भई कोई नुकसान तो नहीं हुआ? मैंने कहा कि अब तो यह जीवन आपके हवाले है, नुकसान हो या लाभ, कोई फर्क नहीं पड़ता और मैं परिवार सहित लोनी डेरा साहिब रहने लगा। महाराज जी शाम के समय पीछे डेरे में छप्परों में रह

रहे परिवारों के साथ बैठकर रोज़ाना कीर्तन करते थे। महाराज जी ने 16 फरवरी 1980 को दास धर्म की स्थापना की तो साथ ही जीवात्मा की भलाई के लिए मुखवाक् भी दिया, "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला"।

1981 के तीसरे महीने की बात है, कीर्त्तन करते-करते महाराज जी ने मुझे सभी के बीच खड़ा कर दिया और पूछा कि क्या तुम्हें दास धर्म मंजूर है? मैंने कहा-जी मंजूर है। आगे महाराज जी ने कहा-क्या सचखण्ड नानक धाम मंजूर है? मैंने कहा-जी मंजूर है। फिर महाराज जी ने पूछा कि भई क्या हम तुम्हारा नाम बदल दें तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं? मैंने कहा कि महाराज जी आपत्ति किस बात की, जब आपके पास आ ही गए तो फिर सब कुछ मंजूर है। महाराज जी ने कहा कि ठीक है आज से तुम्हारा नाम 'दास गोलक दास सतनाम सिंह' होगा तथा आपकी ड्यूटी सुबह साढ़े तीन बजे से शुरू होगी। पहले दरबार साहिब से वाक लेना, सुखमनी साहिब का पाठ करना व उसके बाद गद्दी पर पाठ करना और यदि उसके पश्चात् कोई और सेवा करोगे तो वह आपका ओवर टाइम होगा। मैंने सत्य वचन कहकर उनका हुक्म मान लिया और अगले दिन सुबह से ही अपनी ड्यूटी शुरू कर दी। अब मुझे डेरे में गोलक दास नाम से बुलाया जाने लगा।

एक दिन सुबह सुखमनी साहिब का पाठ करते समय मुझे आकाशवाणी सुनाई दी कि भई आपको जेल जाना है। पाठ के पश्चात् मुझे याद आया कि डेरे आने से पहले मैं ट्रक चालक था और मुझ से एक दुर्घटना हो गई थी। उसी समय का एक मुकदमा न्यायालय में चल रहा था। मैंने यह बात अपनी पत्नी को बताई तथा अगले दिन सुबह मकई की दो रोटी बनाने को कहा। उसी दिन न्यायालय में मेरी तारीख थी। जाते-जाते मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मेरा इन्तजार मत करना। मेरी पत्नी ने कारण पूछा कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? मैंने कहा, "आज न्यायालय में मेरी

तारीख है और जज साहिब मुझे जेल भेज देंगे।" उसने पूछा कि तुम्हें कैसे पता? मैंने कहा कि मुझे महाराज जी ने पहले ही संकेत कर दिया है। जाते-जाते मैंने सोच लिया था कि जितने दिन मैं जेल में रहूँगा रोटी नहीं खाऊँगा भूखा ही रहूँगा। न्यायालय पहुँचने से पहले ही मैंने रास्ते में आधा किलो भूने हुए चने भी ले लिए। वही हुआ, जैसे महाराज जी की मुझे आकाशवाणी हुई थी। न्यायालय में दो बजे मुझे आवाज लगी और जज साहिब ने मुझे जेल भेजने का आदेश पारित कर दिया। पुलिस पकड़ कर मुझे जेल ले गई। जेल में मुझे रोटी खाने को कहा गया तो मैंने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि यदि आपको कुछ हो गया तो। मैंने कहा कि मुझे कुछ नहीं होगा, मेरा मालिक मेरी रक्षा करेगा। उधर डेरे में महाराज जी मेरी पत्नी से कह रहे थे कि दास गोलक दास भक्ति के लिए भोरा काटना चाहता था, जेल में हम उसे भोरा कटवा रहे हैं। 21 दिन बाद महाराज जी इंग्लैण्ड चले गए और दास अमरजीत सिंह को मेरी जमानत के लिए भेज दिया और कहा गोलक दास को जेल से ले आना। जब मैं जेल से बाहर आया तो मेरा रंग लाल था। डेरे में पहुँचा तो बाबा जी ने पूछा गोलक दास जेल में क्या खाते थे? मैंने कहा, "महाराज जी का नाम।" 21 दिन जेल में कोई काम तो करना नहीं था इसलिए पूरा समय महाराज जी द्वारा दिया गया नाम सुमिरन ही करता रहा। जेल से आने के पश्चात् मैं फिर से अपनी ड्यूटी पर लौट आया। आज मेरा शरीर और मेरा नाम एक दूसरे के पूरक हैं और आज चाहे महाराज दर्शन दास जी शारीरिक तौर पर नहीं हैं लेकिन उनकी कृपा और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ है और उसी के सदके मैं आज भी लोनी डेरा साहिब में ड्यूटी कर रहा हूँ।

-दास गोलक दास
(लोनी डेरा, उत्तर प्रदेश)

अनाथों के नाथ

बात कुछ शब्दों में लिखी गई है परन्तु थोड़े शब्दों में ही मेरा पूरा जीवन है। मैं गाँव नंगला जिला होशियार पुर की निवासी हूँ। मेरी बहुत ही छोटी आयु थी जब मेरी माँ का साया मेरे सिर से उठ गया। घर में मुझे कोई सम्भालने वाला नहीं था। मेरा पूरा परिवार महाराज दर्शन दास जी का अनुयायी था। महाराज जी से मेरा हार्दिक लगाव था। माता जी की मृत्यु से पहले ही महाराज जी ने मुझे सब कुछ दिखा दिया था कि ऐसा होने वाला है डरना मत। जैसा महाराज जी ने बताया वैसा ही हुआ। माता जी के स्वर्गवास होने के पश्चात मैं घर में अकेली पड़ गई। घर का कुछ काम करना भी नहीं आता था। सोचती थी जीवन कैसे चलेगा। यही चिन्ता दिन-रात सताती थी। परन्तु इस घटना के बाद महाराज जी ने अपनी रहमत द्वारा मेरा जीवन ही बदल दिया। महाराज जी दुनिया के किसी भी कोने में हो सूक्ष्म रूप से रोज़ मेरे घर आकर मुझे दिशा निर्देश दिया करते थे कि मुझे क्या और कैसे करना है। यहाँ तक कि क्या खाना है, क्या पीना है और कैसे रहना है। उठना-बैठना, खाना-पीना सभी कुछ महाराज जी ने सिखाया। एक लड़की को जो उसकी माँ सिखाती है, वह हुजूर ने मुझे माँ बनकर सिखाया। यहाँ तक कि जैसे आटा गूँदना, सब्जी बनाना व चूल्हा जलाना इत्यादि। अगले दिन होने वाली घटना हुजूर सूक्ष्म रूप में आकर पहले ही मुझे बता दिया करते थे। यहाँ तक कि घर में कौन-कौन से मेहमान आने वाले हैं और उनको क्या-क्या परोसना है, सभी कुछ एक दिन पहले ही विस्तार से महाराज जी मुझे बता जाते थे। यदि काम करते-करते मैं कुछ भूल भी जाती तो हुजूर मेरी वह भूल सुधार देते थे ताकि घर वालों की मुझे डाँट न खानी पड़े। सुबह हुजूर मुझे आवाज देकर

उठाते थे। यदि कोई काम मैं भूल भी जाती तो अगले दिन वह काम किया हुआ मिलता।

महाराज जी ने मुझ अनाथ को नाथ बनकर पाला है। आज मैं शादी-शुदा हूँ, मेरा अपना परिवार है। अपने बच्चों को भी मैं यही शिक्षा देती हूँ कि महाराज जी हम सभी के नाथ हैं और उनकी शिक्षा पर चलने से ही जीवन की उन्नति है। उनकी शिक्षा को अपना कर व्यक्ति सभ्य बनता है तथा जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर परम-पिता परमात्मा से जुड़ता है।

दास निक्की (जलंधर, पजाब)

परीक्षा से एक दिन पहले प्रश्न-प्रत्र का दिखाना

आज मैं 44 वर्ष का हो गया हूँ परन्तु महाराज दर्शन दास जी से जुड़ी घटनाओं की याद ऐसे है जैसे कल की ही बात हो। यह बड़े इत्तफाक की बात है कि मेरे गुरु महाराज दर्शन दास जी के माता-पिता का नाम माता चन्नण देई व पिता जगन्नाथ है तथा मेरे दादा-दादी का नाम भी यही था। मेरे दादा-दादी इस समय दुनिया में नहीं है और मेरे पिता जी का स्वर्गवास भी दिसम्बर 1971 में हो गया था। उस समय मैं 9 वर्ष का था। मेरा अपने दादा-दादी से बहुत लगाव था परन्तु मेरी मम्मी के ऊपर मायके परिवार का ज्यादा प्रभाव था। इसलिए मेरे पिता जी के स्वर्गवास के पश्चात् मेरी मम्मी अपने भाइयों के साथ बटाला में रहने लगी और मैं अपने दादा जी के साथ गुरदासपुर में।

यह घटना 1973 की है जब मैं गुरदास पुर के एक सरकारी स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ता था। परिवार में इकलौता पुत्र था, पिता का साया सिर पर नहीं था इसलिए सब मुझे बहुत प्यार करते थे और स्वाभाविक है कि मुझे कुछ गलत आदतें भी पड़ गई। मैं बहुत जिद्दी किस्म का था। मेरी मम्मी को मेरी बहुत चिन्ता रहती थी और वह मुझ से मिलने की कोशिश किया करती थी परन्तु मुझे उनसे मिलने की कभी इच्छा नहीं हुई। इसी उधेड़बुन में एक दिन मेरी मम्मी महाराज दर्शन दास जी को साथ लेकर मुझे मिलने मेरे स्कूल में आई। महाराज जी ने उस समय आसमानी रंग की टी-शर्ट व पेंट पहन रखी थी। मुझे कक्षा से बुलाया गया कि आपका कोई रिश्तेदार आपसे मिलने आया है। मम्मी को देखते ही मेरा पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और मैंने दोनों को ही नमस्कार नहीं किया। चलते वक्त महाराज जी ने मुझे प्यार से पकड़ कर दो-रुपये देने चाहे परन्तु मैं मना करता रहा और मैंने लिए भी नहीं। महाराज जी ने कहा -बेटा हमारी तरफ देख, आज

तूँ हमसे ये 2 रूपये नहीं ले रहा है मगर आने वाले समय में तूँ हमसे ही माँगा करेगा। मैं उनकी बात अनसुनी करके वापिस अपनी कक्षा में चला गया।

दो-तीन दिन के बाद, इस बार मेरी मम्मी अकेली ही मुझसे मिलने के लिए आई। मुझे फिर कक्षा से बुलाया गया। मम्मी को अकेले देख मुझे फिर अच्छा नहीं लगा। मम्मी के हाथ में एक रूमाल था। जब मैं उनके पास गया और उनके आने का कारण पूछा तो जल्दी से वह रूमाल उन्होंने मेरे सिर पर फेरने की कोशिश की। थोड़ा सा वह रूमाल मेरे सिर पर फेर भी दिया तब भी थोड़ा बचकर मैं वापिस कक्षा में भाग गया।

स्कूल के बाद जब मैं घर गया तो सारी बात मैंने अपने घर में बताई और कहा कि मुझे कुछ हो रहा है। मैंने अगले दिन बटाला जाने की इच्छा जताई। सभी चकित हो गए कि जो बात पिछले ११ वर्षो से मुँह से नहीं निकली, आज अचानक यह तबदीली कैसी?अगले दिन बटाला पहुँच कर मम्मी को लेकर मैं सीधा महाराज जी के घर गया। महाराज जी उस समय गद्दी पर विराजमान थे। मुझे देखते ही कहने लगे कि कल कितने रुपये जीते थे। यह सुनकर मैं भौंचक्का रह गया कि यह बात महाराज जी को कैसे पता चली। अकेले रहते-रहते मुझे एक बुरी आदत लग चुकी थी कि कोई भी खेल खेलता था तो पैसे लगा कर। महाराज जी ने कहा, बेटा यह एक तरह का जुआ है और जुआ खेलना अच्छी आदत नहीं है। महाराज जी की कृपा द्वारा मेरी वह बुरी आदत भी छूट गई और मैं मन लगाकर पढ़ाई करने लगा।

यह सन् 1976 की बात है। मैं 9 वीं कक्षा में पढ़ता था और मेरी परीक्षाएँ 9 मार्च से शुरू होनी थीं और मैं महाराज जी की रहमत माँगने उनके पास 2 मार्च 1976 को गया। मैंने यह बात उनके समक्ष रखी तथा उनसे कृपा करने की प्रार्थना की। महाराज जी कहने लगे कि मेरी शादी 4 मार्च की है, तूने शादी में शामिल होना है और घर नहीं जाना। मैंने कहा-महाराज जी मेरी तो

परीक्षाएँ 9 मार्च से शुरू हैं मैंने पढ़ना भी है और शादी लायक मेरे पास कपड़े भी नहीं है। मैने चकरी बाजार में अपने नाना की दुकान से पैंट का कपड़ा लिया और महाराज जी ने अपने एक सेवक बाबा नसीब को उसी दिन बुला कर मेरी पेंट सिलवाई।

मैंने महाराज जी से फिर अर्ज़ किया कि मैं पढ़ूँगा कब और पास कैसे होऊँगा। महाराज जी कहने लगे ये हमारी जिम्मेदारी है। मैंने सोचा जब महाराज जी कह रहे हैं तो ठीक है। शादी के बाद अगले दिन मुकलावा में महाराज जी मुझे अपने साथ लेकर गए। शाम को सोने से पहले माता जी (महाराज जी की सास) पूछने लगी कि बेटा इसके लिए बिस्तरा कहाँ लगाएं। महाराज जी ने कहा कि यह हमारा चैला है और इसकी चारपाई भी हमारे साथ ही लगाई जाए। माता जी बड़ी चकित हुई। मेरी आदत थी कि मैं महाराज जी की चारपाई के नीचे सो जाया करता था।

खैर, वार्षिक परीक्षा भी सिर पर आ गई। यही बात सबसे ज्यादा चौकाने वाली थी जो मैं आगे बताने जा रहा हूँ। परीक्षा से एक दिन पहले मेरी आँखों के सामने अगले दिन का पूरा प्रश्न पत्र आ जाया करता था और मैं वही याद कर लिया करता था। पूरी परीक्षाएँ इसी तरह हुई। जब नतीजा आया तो सभी हैरान हो गए कि मैं नवीं कक्षा में अव्वल नम्बर पर आया। गुरु सेवक पर बिन बताए ही कृपा करता है सेवक को बाद में उसका अहसास होता है। आज मैं अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रोहिणी डेरे में रह रहा हूँ और महाराज जी के वचनों के मुताबिक उनसे माँग कर अर्थात् उनके दरबार में सेवा करके अपना जीवनयापन कर रहा हूँ। इस प्रकार महाराज जी के मुख से निकला एक-एक शब्द पत्थर की लकीर है जो सदैव सत्य हुआ और जिसे कोई नहीं बदल सका।

दास गुज्जरमल
(रोहिणी डेरा, दिल्ली)

अन्तर की आवाज को जानने वाले

मेरा नाम दास नरेन्द्र कौर है, मैं वालसल, इंग्लैण्ड की रहने वाली हूँ। हमारा पूरा परिवार महाराज दर्शन दास जी का सेवक है। जिस समय मैं महाराज जी से मिली उस समय मेरी आयु बहुत छोटी थी। मेरी मम्मी काफी बीमार रहती थीं। वह बिस्तर से उठ भी नहीं सकती थीं। मेरे डैडी ने उनका बहुत इलाज करवाया पर वह ठीक नहीं हुई। फिर एक व्यक्ति ने (जो महाराज जी का ही एक सेवक था) मेरे डैडी को महाराज जी के बारे में बताया कि बर्मिंघम में एक सन्त हैं जो सब के दु:ख दूर करता है। वहाँ उनका डेरा है। तुम अपनी पत्नी को वहाँ उनके पास ले जाओ। वह सिर्फ जल और प्रसाद देते हैं। मेरे मम्मी-डैडी वहाँ से प्रसाद और जल लेकर आए। मम्मी को कुछ फर्क पड़ने लगा तो मम्मी-डैडी दोनों डेरे जाने लगे और फिर हम दोनों बहनों को भी ले जाने लगे। धीरे-धीरे मम्मी बिल्कुल ठीक हो गई। उस समय मैं तो बहुत छोटी थी पर मम्मी हमें महाराज जी के कौतुक बताती हैं कि महाराज जी की जेब खाली होती थी और संगत को जेब में से पैसे निकाल-निकाल कर देते थे। उन्होंने सफेद रंग का कुर्ता पहना होता था और उसमें से बनियान साफ नज़र आती थी। जेब में पैसे तो होते ही नहीं थे मगर पता नहीं पैसे कहाँ से आते थे जो संगत को निकाल-निकाल कर देते थे।

एक बार की बात है कि डेरे में भण्डारा था और मेरे डैडी सेवा कर रहे थे। मेरे डैडी डेरे में एक सेवक से कहने लगे कि तुम्हारा स्वैटर बहुत सुन्दर है। उसने कहा कि यह स्वैटर मुझे महाराज जी ने दिया है। डैडी के मन में विचार आया कि महाराज जी ने मुझे

तो कभी कुछ नहीं दिया। इतनी बात मन में सोचकर मेरे डैडी जी अपनी सेवा में जुट गए। उस समय डैडी लंगर घर में जल की सेवा कर रहे थे। जिस समय महाराज जी लंगर ग्रहण करने के लिए आए और जब वहाँ हाथ धोने लगे जहाँ मेरे डैडी सेवा कर रहे थे तो महाराज जी की लोई (शाल) नीचे गिर गई। महाराज जी ने लोई उठाई और अपने ऊपर ले ली मगर लोई दुबारा नीचे गिर गई। उन्होंने फिर उठाई मगर जब तीसरी बार लोई नीचे गिरी तो महाराज जी ने वह लोई डैडी को देते हुए कहा, "यह ले! तू कहता था कि तुझे ठंड लगती है, यह लोई तू ले ले।" इतनी बात करके उन्होंने लोई मेरे डैडी को दे दी और मेरे डैडी के मन की इच्छा उसी समय पूरी कर दी। महाराज जी की वह लोई आज भी मेरी मम्मी के पास रखी हुई है।

दास नरेन्द्र कौर
(इंग्लैण्ड)

आकाश मण्डल से प्रसाद का मिलना

मेरा नाम दास किरपाल सिंह है और मैं कुम्हार मण्डी, लुधियाना का रहने वाला हूँ। मेरा छोटा भाई अक्सर बीमार रहता था और वही महाराज दर्शन दास जी से मिलने का कारण बना। यह बात वर्ष 1982 की है। महाराज जी के कहने पर हम 18 व्यक्ति बैसाखी के भण्डारे पर लुधियाना से महाराज दर्शन दास जी के दर्शन करने के लिए पहली बार लोनी डेरे गए थे। उस समय महाराज जी स्वयं इंग्लैण्ड गए हुए थे और महाराज जी द्वारा मनोनीत बाबा जी (दास जी) ने सत्संग किया। सत्संग के बाद प्रसाद लेकर हम सभी वापिस आने की तैयारी कर रहे थे तो संगत के एक जीव ने कहा कि अभी महाराज जी की गद्दी के सुख-आसन से पहले संगत कीर्तन के रूप में सरोवर की परिक्रमा करते हुए फेरी निकालेगी। उसके बाद आप सभी दरबार साहिब माथा टेक कर बाबा जी से मिल कर जाना। हम सभी लुधियाना के जीव दरबार साहिब माथा टेक कर बाबा जी से मिलने के लिए उनके दफ्तर के बाहर उनका इन्तजार करने लगे। हम क्योंकि पहली बार आए थे इसलिए हमें डेरे के तौर-तरीके मालूम नहीं थे। इसी बीच मेरी पत्नी ने कहा कि मुझे बाथरूम जाना है, मैं जाऊँ? मैंने कहा कि यदि बाबा जी ने हमें बुला लिया तो। फिर मैंने कहा कि यहाँ हमें कोई नहीं जानता यदि तूँ बाथरूम चली गई तो हमें बाबा जी से किसी ने भी नहीं मिलने देना। पाँच मिनट बाद मेरी पत्नी ने मुझे दोबारा कहा कि मैं दरबार साहिब माथा टेक कर प्रसाद ले आऊँ। मैंने कहा कि अभी रूक जा। हम दोनों आँखें बन्द करके तथा हाथ जोड़ कर खड़े हो गए और मन ही मन

अरदास करने लगे। उसी समय हमारे साथ एक कौतुक हुआ कि जब हम दरबार साहिब की इमारत के नीचे अरदास कर रहे थे तो आकाश से दो हाथ मेरी ओर बढ़े और मेरे हाथों में गर्म-गर्म प्रसाद डाल कर अलोप हो गए और साथ ही आकाशवाणी हुई कि यह प्रसाद लुधियाना से आए हुए सभी जीवों को थोड़ा-थोड़ा बाँट दो। उसके बाद बाबा जी ने हमें मिलने के लिए अपने कार्यालय में बुला लिया। मैंने सारा वृतांत जब बाबा जी को सुनाया तो वे भी चकित हो गए और कहने लगे महाराज जी अथाह शक्ति के मालिक हैं और वे किसी पर भी दयाल हो सकते हैं। ये बात आपके और उनके बीच की है। बाबा जी से बात करने के बाद हम सभी दरबार साहिब माथा टेकने गए और प्रसाद लिया। हैरान करने वाली बात यह है कि जो प्रसाद हमें दरबार साहिब से मिला वह ठंडा था परन्तु जो प्रसाद हमें आकाश द्वारा मिला वह एकदम गर्म था। यह घटना लोनी डेरे में मेरे साथ पहली यात्रा के दौरान घटी जिसे मैं पूरा जीवन भुला नहीं पाऊँगा और ऐसा प्रसाद ग्रहण करने का दोबारा अवसर प्राप्त हो ऐसी कामना भी करूँगा।

-दास किरपाल सिंह
(लुधियाना, पंजाब)

स्टोव के बहाने दुःख दूर करना

मैं जलंधर निवासी हूँ, मेरा नाम ऊषा है। मैं दास कुंदन लाल की पुत्री हूँ। मेरे पिता महाराज दर्शन दास जी के सेवक उसी समय से थे जब महाराज जी को 1971 में बस्ती शेख, जलंधर में ईश्वर की दिव्य ज्योति प्राप्त हुई थी। ईश्वरीय प्रचार के लिए हमारे घर में भी महाराज जी की गद्दी लगती थी। महाराज जी ने हमारे घर को हमेशा अपने घर जैसा समझा। जब मैंने पहली बार महाराज जी के दर्शन किए थे उस समय महाराज जी मेरी दादी जी की मृत्यु का अफसोस करने आए थे। उस समय उन्होंने सिल्क का कुर्ता और पेंट पहन रखी थी। मेरी मम्मी ने मुझे कहा कि जा, बाबा जी के लिए चाय बना कर ला। मैंने मन में सोचा कि यह कोई बाबा जी हैं इन्होंने तो कुर्ता और पैंट पहन रखी है। उसी समय महाराज जी ने मुझे कहा, "बेटा, वाणी देखते हैं, बाणा (विश-भूषा) नहीं।" रसोईघर में जाकर मैंने अपनी मम्मी से कहा कि यह बात तो मैंने अपने मन में सोची थी तो बाबा जी को कैसे पता लगी? मम्मी ने कहा कि बाबा जी अन्तर्यामी हैं सब कुछ जानते हैं।

एक समय की बात है महाराज जी हमारे घर आए और मैं उनके लिए स्टोव लेकर चाय बनाने लगी तो महाराज जी ने स्टोव मेरे हाथों से ले लिया और उसका पुर्ज़ा-पुर्ज़ा खोल दिया। मैंने कहा कि मैंने तो आपके लिए चाय बनानी थी और आप जी ने सारा स्टोव ही खोल दिया। महाराज जी ने कहा, "हम इसे ठीक कर रहे हैं।" इतने में दास महिन्दर कौर, जो काफी बीमार रहती थी और महाराज जी की सेवक बन चुकी थी, महाराज जी से मिलने अक्सर हमारे घर आया करती थी। वह हाय! हाय! करती हमारे घर आ

गई। मैंने उससे पूछा कि माता जी आपको क्या हो गया?वह कहने लगी कि मेरा शरीर ऐसे दुख रहा है जैसे किसी ने मेरे शरीर का एक-एक अंग खोल दिया हो। मैं महाराज जी के पास गई तो कहने लगे, "हम महिन्दर कौर को ही ठीक कर रहे थे।" मैं कुछ नहीं बोली बस मन ही मन सोचने लगी कि धन्य है ऐसे पुर्ण गुरु जो अपने सेवकों के कष्ट किसी भी तरीके से काट सकते हैं। हमें प्रत्यक्ष रूप में जो कार्य करते वह दिखाई देते हैं उनके उस कार्य में किसी न किसी जीव का कल्याण छुपा होता है जिसका ज्ञान हम छोटी बुद्धि वाले जीवों को नहीं हो पाता।

इसी तरह एक दिन महाराज जी कुछ सेवकों के साथ सुबह चार बजे हमारे घर आए और आते ही कहने लगे कि हमें भूख लगी है रोटी खानी है। मैंने मन में सोचा कि सब्जी तो बहुत कम है। महाराज जी कहने लगे कि बेटा कोई बात नहीं तू रोटी बनानी शुरू कर। मैं खाना बनाने लगी और महाराज जी की कृपा से सभी ने पेट भर के खाना खाया और बाद में जब मैंने देखा तो आटा भी उतना ही बचा हुआ था और सब्जी भी जितनी थी उतनी ही बची रही।

महाराज जी के सेवक बनने के बाद से ही जीवन हँसी-खुशी बीतता रहा और दु:ख के दिन कब बीत जाते थे पता ही नहीं चलता था। ऐसे ही एक बार मम्मी काफी बीमार हो गई। जब महाराज जी को पता चला तो वह हमारे घर आए और मुझे कहने लगे कि तेरी मम्मी पर किसी ने हांडी (जादू-टोने का असर) छोड़ दी है। उन्होंने मुझे और दो लड़कियों (इकबाल कौर व अविन्दर कौर) तीनों को एक पैर पर खड़ा कर दिया और कहा कि सुमिरन करो। बाबा जी स्वयं भी ध्यान लगा कर बैठ गए। हमें कुछ समय बाद किसी भारी भरकम चीज़ के टूटने की आवाज़ सुनाई दी और उसके तुरन्त बाद ही महाराज जी ने अरजोई की और इस घटना के बाद मेरी मम्मी धीरे-धीरे ठीक होती चली गई।

एक दिन मैंने मकई की रोटी और साग बनाया। मेरे मन में विचार आया कि यदि आज बाबा जी आकर रोटी खाएं तो कितना अच्छा हो?इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई और जब मैंने दरवाज़ा खोला तो सामने बाबा जी खड़े थे। बाबा जी अन्दर आए और आते ही कहने लगे, "लाओ मुझे रोटी दो।" मैंने झट से उन्हें रोटी परोसी और उन्होंने बड़े चाव से साग के साथ मकई की रोटी खाई। मैंने उनसे कहा कि मैं तो मन में सोच रही थी। महाराज जी बोले, "तू सोच रही थी और हम सुन रहे थे और तेरी इच्छा पूरी करने के लिए हम आ गए।"

एक दिन महाराज जी हमारे घर में चारपाई की पाँत (पैंद) में सिर फँसाकर लेटे हुए थे। मैंने उनके नजदीक जाकर कहा कि महाराज जी आप ऐसे क्यूँ लेटे हो?मेरी आवाज़ सुनकर महाराज जी ने आँखें खोली और कहने लगे, "बेटा, मैं तो इंग्लैण्ड गया हुआ था। मुझे तो ईश्वरीय प्रचार के लिए इंग्लैण्ड भी जाना है और वहाँ मुझे गोलियाँ भी खानी हैं और मैं यहाँ चारपाई की पाँत में फँसा हुआ हूँ।" उस समय हम समझ नहीं सके कि महाराज जी कौन सी गोलियाँ खाने की बात कर रहे हैं। उसके पश्चात् महाराज जी आध्यात्मिक ज्ञान बाँटते हुए दिल्ली पहुँचे और वहाँ से इंग्लैण्ड गए। वहाँ जाकर वर्ष 1987 में उन्होंने आतंकवादियों की गोली खाई। इस तरह उन्होंने अपने आने वाले समय के बारे में बहुत पहले ही इशारा दे दिया था पर हम लोगों को समझ में नहीं आया। इस प्रकार महाराज ऐसी-ऐसी बातें कर जाते थे जो हमारी सोच से परे होती थी परन्तु उन बातों के द्वारा महाराज जी या तो लोगों का दुःख ठीक कर देते थे या आने वाले समय के बारे में बता दिया करते थे। आज महाराज जी शारीरिक तौर पर हमारे बीच नहीं हैं पर उनके कहे एक-एक शब्द आज भी सत्य हो रहे हैं। वे हमें अक्सर कहा करते थे कि एक समय ऐसा आएगा जब हम तुम्हें नहीं मिलेंगे और तुम हमारी बातें याद कर-कर के

रोया करोगी और सच में आज मैं उन्हें और उनकी बातें याद कर-कर के रोती हूँ और दीवारों से टक्कर मार-मार के उन्हें याद करती हूँ। आज दुनिया में मेरे पास सब कुछ है मगर महाराज दर्शन दास जी जैसा कोई दूसरा नहीं है।

-दास ऊषा
(जलन्धर, पंजाब)

औलाद का सुख मिला

मेरा नाम दास दविन्दर है और मैं जलंधर का निवासी हूँ। मैं महाराज दर्शन दास जी से पहली बार 1973 में मिला था। 1973 से मुझे महाराज जी के कई कौतुक देखने को मिले। एक बार मैं और मेरी पत्नी महाराज जी का सत्संग सुनने के लिए बटाला डेरे गए थे। सत्संग की समाप्ति तकरीबन शाम 7:00 बजे हुई। जब मैंने घर जाने के लिए अपना स्कूटर स्टार्ट करने की कोशिश की तो स्कूटर चालू नहीं हुआ। मैंने कई बार किक मार कर फिर से स्टार्ट करने की कोशिश की परन्तु सब व्यर्थ गया। थक हार कर मैंने सोचा कि क्यूँ न स्कूटर की टंकी खोल कर देखी जाए तो मैंने पाया कि स्कूटर की टैंकी में पैट्रोल ही नहीं है। मैं थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया कि घर कैसे जाऊँगा क्योंकि उन दिनों पंजाब में शाम के 5:30 बजे तक सभी पैट्रोल पंप बन्द हो जाते थे। मैं चिंताग्रस्त इधर-उधर से पैट्रोल का इंतज़ाम करने के लिए सोचने लगा। इतने में सामने से आते हुए महाराज जी ने मुझसे पूछा कि क्या बात है? मैंने कहा कि स्कूटर में पैट्रोल नहीं है। महाराज जी ने कहा, "जाओ, लंगर घर से पानी का जग भर कर ले आओ।" मैं लंगर घर गया और वहाँ से जग में पानी भर कर ले आया और जग महाराज जी को पकड़ा दिया। महाराज जी ने पानी का जग अपने हाथों में लेकर दो मिनट तक अपनी आँखें बंद की और जब आँखें खोली तो पानी का जग मुझे देते हुए कहने लगे, "यह लो, इसे अपने स्कूटर की टंकी में डाल ले, स्कूटर चल पड़ेगा और जब तक टंकी का ढ़क्कन उठा कर नहीं देखेगा तब तक स्कूटर चलता रहेगा। तुझे पैट्रोल डलवाने की आवश्यकता नहीं

पड़ेगी। मैंने वह पानी स्कूटर की टंकी में डाला तो स्कूटर स्टार्ट हो गया और हम पति-पत्नी खुशी-खुशी वापिस घर पहुँच गए। दो-तीन दिन तक मैं स्कूटर बिना पैट्रोल डलवाए चलाता रहा। एक दिन मैंने टंकी का ढक्कन खोल कर देख ही लिया तो टंकी में पानी था। उसके बाद जब मैंने स्कूटर स्टार्ट किया तो स्कूटर स्टार्ट नहीं हुआ। फिर स्कूटर धकेल कर मैं मैकेनिक के पास ले गया। मैकेनिक ने कहा कि इसकी पैट्रोल की टंकी में तो पानी आ गया है इसलिए यह नहीं चलेगा। ख़ैर मैंने स्कूटर तो ठीक करने के लिए दे दिया परन्तु मैं अपनी इस बेवकूफी पर पछता रहा था परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था।

मुझे औलाद का सुख भी महाराज दर्शन दास जी की कृपा से ही मिला है। मैंने जलंधर में डाक्टरों से अपना बहुत इलाज करवाया डाक्टरों ने मुझे यह कह दिया था कि हम तुझे लिख कर दे सकते हैं कि तेरे घर में औलाद नहीं हो सकती। जब मैंने यह बात महाराज जी को बताई तो महाराज जी ने मुझसे कहा, "उस डाक्टर से कहना कि पहला बेटा 1984 में होगा और दूसरा बेटा 1987 में। जो पहला बेटा होगा उसके माथे पर तिलक का निशान होगा। बिल्कुल वैसे ही हुआ सन् 1984 में मेरे पहले बेटे का जन्म हुआ और दूसरे का 1987 में। आज मेरा बड़ा बेटा इंजीनियरिंग कर रहा है और छोटा बेटा मेरे साथ ट्रांसपोर्ट का काम करता है। यह सब महाराज जी के आशीर्वाद व वचनों का ही असर है। महाराज जी के दरबार में जो सेवक अपनी तन, मन और धन की सेवा का योगदान नियमित रूप से देते हैं, महाराज जी उन सेवकों के असम्भव कार्य भी सम्भव बना देते हैं। यह केवल मेरी बात ही नहीं है बल्कि असंख्य जीवों की यही गाथा है।

दास दविन्दर
(जलंधर, पंजाब)

सेवा करवा कर हमारा मुकद्दर बदलना

मेरा नाम महेन्द्र कौर है। जिस समय मैं पहली बार महाराज दर्शन दास जी से मिली उस समय महाराज जी जलंधर में दास कुन्दन लाल के घर कीर्तन-सत्संग करने आया करते थे। मेरे पति के सिर में बहुत दर्द होता था, कभी-कभी तो यह दर्द इतना भयंकर रुप धारण कर लेता था कि मेरे पति ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते और पड़ोसियों तक उनके चिल्लाने की आवाज़ पहुँच जाती थी। एक दिन मेरी एक पड़ोसन हमारे घर आई और उसने मुझे महाराज दर्शन दास जी के बारे में बताया कि जलंधर में मॉडल टाऊन में एक सन्त आए हुए हैं तुम उनके दर्शन करने जाओ और उन्हें अपनी समस्या बताओ। हो सकता है कि वहाँ जाने से तुम्हारी समस्या का कुछ हल निकल आए। अगले दिन हम दोनों पति-पत्नी उसके साथ दास कुंदन लाल के घर गए और वहाँ हमने पहली बार महाराज जी के दर्शन किए। जिस समय मैंने महाराज जी को अपने पति के सिर-दर्द के बारे में बताया तो महाराज जी ने कहा कि इनकी शादी से पहले किसी ने इन पर टूना कर दिया था इसलिए इनके सिर में दर्द रहता है। मगर आप चिन्ता न करो यह ठीक हो जाएंगे। महाराज जी जब मेरे पति को प्रसाद देने लगे तो उन्होंने प्रसाद लेने से इंकार कर दिया। महाराज जी ने मेरे पति को समझाया कि यह प्रसाद उन्ही के भले के लिए है। यदि आप प्रसाद ले लोगे तो तुम्हारी परेशानी दूर हो जाएगी अन्यथा इसी तरह परेशानी में उलझे रहोगे। महाराज जी ने उनके सिर पर मेहर भरा हाथ रखकर वहीं बैठे-बैठे प्रसाद खिलाया। फिर महाराज जी ने हमें जल की बोतल दी और कहा कि यह जल सभी ने सुबह-शाम पीना है तथा इस दरबार की

मर्यादा का पालन करते हुए मीट-अंडा-शराब का सेवन नहीं करना है। मेरे पति मीट-अंडा खाते थे। उस समय महाराज जी के सामने तो मेरे पति ने मर्यादा का पालन करने की हामी भर दी मगर दूसरे दिन वह दुकान से अंडे खरीद कर घर ले आए। जिस समय वह अंडे लेकर घर पहुँचे तो उनके अन्दर जो ऊपरी चीज़ थी वह बोलने लगी कि रात को तो तुम महाराज दर्शन दास जी से कह कर आए थे कि हम मर्यादा का पालन करेंगे तो तुम यह अंडे घर क्यों लेकर आए हो? मैंने घबरा कर अंडे बाहर फेंक दिए। जब मैंने अपनी पड़ोसन को यह बात बताई तो उसने कहा कि देखा, तुम तो कहते थे कि सिर-दर्द होता है, तुम्हें इसका इल्म नहीं था कि उन्हें किसी ने कुछ किया है। दरअसल अब उस ऊपरी चीज़ को महाराज दर्शन दास जी का भय सताने लगा है। उस चीज़ को डर था कि यदि इसने अंडे खाए तो महाराज दर्शन दास जी मुझे नहीं छोड़ेंगे। इस तरह हमारे घर में मीट-अंडे का चलन खत्म हो गया और घर में महाराज दर्शन दास जी की कृपा-रहमत की चर्चा होने लगी। उनकी रहमत सदका मेरे पति ठीक होने लगे और हमारा महाराज जी के पास आना-जाना बढ़ने लगा। महाराज जी कुंदन लाल के घर 15-15 दिनों तक रहते थे। जब-जब महाराज जी ने उनके घर आना तब-तब महाराज जी से हम मिलने जाते। धीरे-धीरे हमारे मन में महाराज जी के प्रति इतना लगाव हो गया कि उनके दर्शन किए बग़ैर हमें चैन नहीं आता था। मन में हर समय उनके दीदार की तड़प लगी रहती। जब तक महाराज जी दास कुंदन लाल के घर आते रहे हमारी महाराज जी के दीदार की तड़प बुझती रही। कुछ समय पश्चात् महाराज जी अधिकतर बटाला डेरे में रहने लगे और उनका जलंधर आना तकरीबन समझो बंद हो गया। मेरे पति की बीमारी के कारण हमारा कारोबार एक तरह से बंद ही था, जिस वजह से हमें आर्थिक तौर पर इतनी तंगी थी कि हमारे पास बटाला डेरे जाने के लिए किराया

नहीं था। मगर दिल में महाराज जी के दीदार की इतनी तड़प रहती थी कि हमने पैसों की परवाह नहीं की और अपने सतगुरु के दर्शन करने के लिए जलंधर से पैदल चलते हुए तीन दिन का सफर तय करके बटाला डेरे जाते। हमने कहना कि चाहे पैसे हों या न हों हमने तो अपने सतगुरु के डेरे जाना ही जाना है। हम दो-तीन बार जलंधर से बटाला तक पैदल चल कर डेरे पहुँचे थे। कहते हैं कि सतगुरु के प्रेमीयों की ईश्वर परीक्षा लेता है और देखता है कि आखिर वह सेवक अपने सतगुरु पर कितना विश्वास करता है। मेरी भी ईश्वर ने ऐसी ही परीक्षा ली। एक बार हम दोनों पति-पत्नी और मेरा बड़ा बेटा लाडी, हम तीनों घर से बटाला डेरे जाने के लिए तैयार हुए। मैंने तीनों के कपड़े और जरूरी सामान एक बैग में डाला। वह बैग और बिस्तर हमने साइकिल पर रख लिया। मेरे पति अंदर के कमरे के दरवाजे को ताला लगाने लगे तो अचानक उनकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया और दिखना बंद हो गया। दरअसल गरीबी होने के कारण ठीक से खाना न खाने की वजह से उनमें काफी कमज़ोरी आ गई थी इसलिए उन्हें उन्हें दिखाई देना बन्द हो गया और घबराहट में उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया कि मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। मैंने इनसे कहा कि चिल्ला क्यों रहे हो? क्या हो गया आपको? कहने लगे कि मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। मैंने कोई चिन्ता या अफसोस व्यक्त नहीं किया बल्कि उन्हें कहा कि तो क्या हुआ जो दिखाई नहीं दे रहा है। हम जिसके दरबार में जा रहे हैं, वह अपने आप ठीक कर देंगे। इतना कहकर मैंने उनके हाथ से ताला लिया और कमरे को ताला लगाया। मैं इनका हाथ पकड़कर इन्हें बरामदे से गली में ले आई और बेटे से कहा, जो बाहर साइकिल पकड़कर खड़ा था, कि तू साइकिल चला, तेरे पिता जी को कुछ दिखाई नहीं दे रहा है इसलिए ये पीछे से साइकिल पकड़ लेंगे। जैसे ही उन्होंने अन्धों की भाँति साइकिल टटोलते हुए उसे पीछे से पकड़ा तो महाराज जी

का ऐसा चमत्कार हुआ कि उन्हें पुन: दिखाई देने लग गया। बेटे से कहने लगे कि ला साइकिल मैं चलाता हूँ मुझे दिखाई देने लग गया है। हमने उनको समझाया कि आप में बहुत कमजोरी है इसलिए आप साइकिल मत चलाओ परन्तु वे नहीं माने और हम तीनों साइकिल पर सवार होकर घर से बटाला डेरे के लिए चल दिए। आज मेरे मन में यह विचार आता है कि अगर मैं उसी समय यह सोच कर बैठ जाती कि मैं तो डेरे जाने लगी थी और मेरे पति की दृष्टि चली गई तो हो सकता था कि वह हमेशा के लिए अन्धे हो जाते। इस प्रकार ईश्वर मेरे महाराज जी के प्रति प्रेम की परीक्षा ले रहा था। मेरी दूसरी परीक्षा उस समय हुई जब हम करतारपुर पहुँचे। मेरे बेटे की तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गया। हम दोनों ने उसे उठाया और साइकिल पर जो बैग-बिस्तरा रखा था उसके ऊपर लेटा दिया। मेरे पति कहने लगे कि अब क्या करें? पहले मेरी दृष्टि चली गई थी और अब यह बेहोश हो गया। मैंने कहा कि बस चलते चलो, जिसके घर जा रहे हैं अगर उसने बचाना होगा तो बचा लेगा और अगर मारना होगा तो मार देगा। हमें कोई परवाह नहीं। मेरे पति कहने लगे कि बेटे की हालत इतनी खराब है और तू क्या कह रही है? मैंने कहा कि मैं तो यह कह रही हूँ कि हमें तो बस मालिक के घर जाना ही जाना है। करतारपुर से थोड़ा आगे जाकर सड़क के किनारे एक छायादार वृक्ष के नीचे चादर बिछा कर मैंने अपने बेटे को लिटा दिया। बेटा पूरी तरह से बेहोशी की हालत में था। उसके शरीर में कोई हरकत भी नहीं हो रही थी। मैंने मन ही मन महाराज जी से अरदास की कि महाराज जी, मेरे बेटे को आप जी ने ही ठीक करना है। तभी मेरे कानों में यह आवाज़ पड़ी कि प्रसाद ले आओ। सामने एक रेहड़ी पर अंगूर वाला खड़ा था, मैंने पति से अंगूर लाने के लिए कहा तो वे सामने से कुछ अंगूर ले आए। मैंने वह अंगूर हाथ में लेकर महाराज जी से अरदास की और दो-तीन अंगूर

अपने बेटे के मुँह में डाल दिए। थोड़ी देर में मेरे बेटे को होश आ गया और वह उठकर बैठ गया बाकि के अंगूर हमने बाँट कर खाए और फिर अपनी मंज़िल की तरफ चल पड़े। रास्ते में हमने दो किलो आटा लिया और एक घर के बरामदे में चूल्हा जल रहा था। मैं अन्दर गई तो वहाँ एक औरत बैठी थी, मैंने उससे कहा कि मुझे रोटी पकानी है, क्या मैं यहाँ पका लूँ। उसने हामी भर दी और मैंने रोटियाँ पकाई। वहीं से अचार लेकर हमने रोटी खाई और फिर आगे बढ़ गए। शाम के समय हम अचल साहिब पहुँचे तो हम बहुत थक चुके थे। वहाँ सड़क के किनारे चाय वाले की एक दुकान थी। हमने उसे चाय बनाने के लिए कहा तो पास में ही एक व्यक्ति खड़ा था उसने हमसे कहा कि तुम यहाँ चाय मत बनवाओ। पास ही में गुरुद्वारा है तुम वहाँ चले जाओ। वहाँ आराम से चाय-दूध पीना और वहीं आराम भी कर लेना। हम गुरुद्वारे पहुँच गए वहाँ दूध में पत्ती डालकर संगत को दी जा रही थी हमने भी चाय-दूध पिया और लंगर चखा। तब तक अन्धेरा हो चुका था। हम गुरुद्वारे के गेट के पास एक तरफ अपनी चादर बिछा कर बैठ गए। इतने में गुरुद्वारे का एक सेवक आकर हमसे कहने लगा कि तुम्हारे पास छोटा बच्चा है तुम यहाँ मत लेटो। हम तुम्हें कमरा दे देते हैं। तुम रात वहीं काट लेना। लेकिन तुम्हें सुबह 4:00 बजे वह कमरा छोड़ना होगा क्योंकि वह प्रसाद वाला कमरा है। उन्होंने हमें उस कमरे में ठहरा दिया। रात हमने उस कमरे में बिताई। सुबह जल्दी उठकर स्नान किया और चाय-नाश्ता करके वहाँ से चल पड़े। अगले दिन जब हम डेरे पहुँचे तो महाराज जी कमरे से बाहर आ रहे थे और हमें देखकर वे अपने दोनों हाथों को ऊपर उठा कर ताली बजाते कह रहे थे, "बल्ले-बल्ले, बल्ले-बल्ले महेन्द्र कौर की जनता-पार्टी पैदल चल कर आई है।" हमें बहुत ही हँसी आई। महाराज जी कहने लगे साइकिल को एक तरफ रखो और यहाँ आ जाओ। उन्होंने हमें

अपने पास बिठाया और हमारे लिए दूध मँगवाया। उसके पश्चात् महाराज जी ने हमें 13 दिनों तक डेरे में रहकर सेवा करने के लिए कहा। सेवा के बाद जब हम घर जाने की आज्ञा लेने लगे तो भापा जी (महाराज जी के पिता जी) ने हमें टोकरी में फल डाल कर दिए और मेरे बेटे को प्यार के एवज में पैसे भी दिए। हम इस तरह दो-तीन बार पैदल चल कर डेरे सेवा करने के लिए आए क्योंकि मेरे पति का कोई कारोबार न होने के कारण किराए के लिए पैसे भी नहीं थे। मगर महाराज जी के प्रति इतना प्यार और लगाव था कि हमने पैदल चल कर भी महाराज जी का सत्संग सुनना व डेरे में सेवा करना कबूल किया। ज्यों-ज्यों हमने डेरे में सेवा की, पता ही नहीं चला कि कब हमारे दिन बदलने शुरू हो गए। आज और, कल कुछ और। महाराज जी की इतनी कृपा बरसी कि आज उसी बेटे के पास ट्रक हैं जो हमारे साथ कभी पैदल जाता था। आज वह अपने ट्रक में प्रत्येक भण्डारे पर संगत को लेकर डेरे पहुँचता है। मुझे कहता है कि माँ देख ले, कभी पैदल चल कर डेरे जाते थे और अब महाराज जी ने इतनी कृपा कर दी है कि आज हम संगत को गाड़ी में लेकर जाते है। मैं तो सदैव महाराज जी से यही कहती हूँ कि महाराज जी हम तो दुनिया के ठुकराए हुए थे मगर आप जी ने हमें अपनी शरण में लगाकर हमारी झोली खुशियों से भर दी है।

दास महेन्द्र कौर
(जलंधर, पंजाब)

मुसीबत के समय आर्थिक मदद करना

वर्ष 1982 की बात है मेरा जीवन कठिनाईयों से भर चुका था और कोई समाधान भी नजर नहीं आ रहा था। मुश्किलों में घिरे हुए मुझे किसी के माध्यम से समाधान की एक आशा की किरण दिखाई दी जब मैंने पहली बार लोनी डेरे में महाराज दर्शन दास जी के दर्शन किए। उसी वर्ष नवम्बर में महाराज जी की कृपा हुई और मुझे नाम दान भी मिल गया। मैं नियमित रूप से लोनी डेरे अपनी सेवा के लिए जाने लगा। 1983 में मेरे कारोबार में एक बार फिर नुकसान बढ़ने लगा और व्यवसाय घटता चला गया। घर के हालात यहाँ तक पहुँच गए कि घर में राशन सामग्री की भी कमी महसूस होने लगी। डेरे में जब भी महाराज जी मुझ से पूछते कि सुनाओ क्या हाल है तो दास के मुँह से यही निकलता कि महाराज जी आपकी कृपा है। हुजूर हँस कर यही कहते कि कृपा बनी रहेगी। जब रिश्तेदारों तक यह बात पहुँची तो उन्होंने मेरे ऊपर ताने कसने शुरू कर दिए। मेरे रिश्तेदार कहते कि तुम तो कहते थे कि तुम्हारे महाराज जी बहुत ही शक्ति के मालिक हैं। यदि वे इतनी शक्ति के मालिक हैं तो आपका व्यवसाय क्यों नहीं चलाते। मैं उन सभी को समझाने की कोशिश करता कि महाराज जी को सब कुछ पता है जब उनकी इच्छा होगी तो चला देगें और मुझे अपने गुरु साहिब से कोई गिला भी नहीं है।

एक दिन डेरे में मुझे ज्ञात हुआ कि हुजूर सेवकों को जरूरत के समय कर्ज़ा भी दिया करते थे। मैंने भी हुजूर से कर्ज़ा लेने के लिए अपना नाम लिखवा दिया। जब मेरा नम्बर आया और मैं हुजूर के सामने पेश हुआ तो हुजूर ने मुझे कर्ज़ा देने से मना कर दिया। मैं हुजूर की मर्जी को स्वीकार करते हुए चुप हो गया। मेरे

सामने हुजूर ने कई सेवकों को कर्ज़ भी दिया। जब मैं चलने लगा तो हुजूर ने पूछा कि बेटा पूछोगे नहीं कि हमने आपको कर्ज़ क्यों नहीं दिया? मैंने कहा कि महाराज जी, यदि यही पूछ लिया तो बात ही खत्म हो जाएगी फिर बाकी क्या रह जाएगा? हुजूर हँस पड़े और कहने लगे कि इसका कारण यह है कि बेटा इस समय तुम्हारा समय इतना खराब चल रहा है कि यदि हम तुम्हें एक लाख रुपया भी दे दें तो वह भी तुम्हारे लिए एक हज़ार का काम करेगा, काम तो बनेगा नहीं कर्ज़ा चढ़ेगा सो अलग। किसी से कर्ज़ा लेकर उसे वापिस जरूर करना चाहिए अन्यथा यह ईश्वर के घर में गुनाह है। हाँ, यदि कोई आपकी मदद करता है और तुम वह न चुका पाओ तो कोई बात नहीं। फिर भी जब आपके पास पैसा आ जाए तो जरूर वापिस करो। यही कारण है कि हम तुम्हें कर्ज़ा नहीं दे रहे परन्तु आपकी मदद जरूर करेंगे।

हुजूर ने कई बार मेरी आर्थिक मदद भी की। एक बार मुझे काम के सिलसिले में पंजाब जाना पड़ा। नांगलोई कमेटी की सारी सेवा मेरे पास ही रहती थी क्योंकि मैं कमेटी का कैशियर था। घर की आर्थिक व्यवस्था इतनी खराब हो गई थी कि बच्चों को खाना खिलाना भी मुश्किल हो गया। हुजूर साहिब पल-पल की जानने वाले तो हैं इसलिए उसी रात मेरी पत्नी के स्वप्न में आ कर कह गए कि हमारी जो सेवा आपके पास रखी है उसमें से 260 रुपये घर के लिए खर्च कर लो। अगली सुबह मेरी पत्नी हुजूर के पास डेरे गई तो हुजूर संगत से बातचीत कर रहे थे। जब उसने महाराज जी को नमन किया तो सिसकियाँ भर कर रोने लगी। हुजूर ने पूछा क्या बात है? वह कुछ नहीं बोली बस रोती रही। हुजूर ने फिर कहा, 'बेटा' आपको पैसे चाहिए वह तो हमने रात स्वप्न में ही कह दिया था कि हमारी सेवा में से 260 रुपये खर्च

कर लो। हाँ, यदि राशन चाहिए तो वह हम डेरे से भिजवा देते हैं। रही बात आपके पति राम मोहन की तो वह कल तक वापिस आ जाएगा।'' इस प्रकार हुजूर ने दास की कई बार मदद की। उसके बाद तो हुजूर ने इतना दिया कि ब्यान करना बहुत कठिन है।

ज्येष्ठ 1984 का महीना था और मैं पंजाब गया हुआ था। मेरा दिल्ली वापिस आने का कोई कार्यक्रम नहीं था। दूसरा पंजाब में मेरे किसी रिश्तेदार का स्वर्गवास भी हो गया था इसलिए मैंने सोचा कि क्रिया के बाद ही दिल्ली वापिस जाऊँगा।

एक दिन सुबह उठते ही मेरी तबीयत अचानक बिगड़ गई, उल्टीयाँ होने लगी। खाना-पीना पचना बन्द हो गया और अन्दर से मेरा दिल इतना उचाट हो गया कि मैंने दिल्ली जाने का तुरन्त फैसला कर लिया। मैंने अपनी बहन के घर मेहता चौंक जा कर बताया कि मैं दिल्ली वापिस जा रहा हूँ। उसने मुझे समझाने की कोशिश की कि आप क्रिया के बाद चले जाना परन्तु मेरे ऊपर दिल्ली जाने की धुन सवार हो चुकी थी। मुझे बताया गया कि दिल्ली के लिए अब कोई बस नहीं है और अम्बाला की बस भी 12 बजे निकल चुकी है। जिद् करके मैं बस अड्डा पहुँच गया। महाराज जी की इतनी कृपा हुई कि अम्बाला की बस देर से आई और मैं उसी में बैठ गया। खाना न पचने की वजह से मेरा पेट बिल्कुल खाली हो चुका था। अम्बाला पहुँच कर मैंने हिम्मत दिखाते हुए एक गिलास लस्सी पी जो मुझे पच भी गई। कुछ समय इन्तजार करने के पश्चात् अम्बाला से दिल्ली के लिए मुझे दूसरी बस मिल गई। करनाल पहुँच कर मैंने खाना भी खाया और

कर लो। हाँ, यदि राशन चाहिए तो वह हम डेरे से भिजवा देते हैं। रही बात आपके पति राम मोहन की तो वह कल तक वापिस आ जाएगा।" इस प्रकार हुजूर ने दास की कई बार मदद की। उसके बाद तो हुजूर ने इतना दिया कि ब्यान करना बहुत कठिन है।

ज्येष्ठ 1984 का महीना था और मैं पंजाब गया हुआ था। मेरा दिल्ली वापिस आने का कोई कार्यक्रम नहीं था। दूसरा पंजाब में मेरे किसी रिश्तेदार का स्वर्गवास भी हो गया था इसलिए मैंने सोचा कि क्रिया के बाद ही दिल्ली वापिस जाऊँगा।

एक दिन सुबह उठते ही मेरी तबीयत अचानक बिगड़ गई, उल्टीयाँ होने लगी। खाना-पीना पचना बन्द हो गया और अन्दर से मेरा दिल इतना उचाट हो गया कि मैंने दिल्ली जाने का तुरन्त फैसला कर लिया। मैंने अपनी बहन के घर मेहता चौंक जा कर बताया कि मैं दिल्ली वापिस जा रहा हूँ। उसने मुझे समझाने की कोशिश की कि आप क्रिया के बाद चले जाना परन्तु मेरे ऊपर दिल्ली जाने की धुन सवार हो चुकी थी। मुझे बताया गया कि दिल्ली के लिए अब कोई बस नहीं है और अम्बाला की बस भी 12 बजे निकल चुकी है। जिद् करके मैं बस अड्डा पहुँच गया। महाराज जी की इतनी कृपा हुई कि अम्बाला की बस देर से आई और मैं उसी में बैठ गया। खाना न पचने की वजह से मेरा पेट बिल्कुल खाली हो चुका था। अम्बाला पहुँच कर मैंने हिम्मत दिखाते हुए एक गिलास लस्सी पी जो मुझे पच भी गई। कुछ समय इन्तजार करने के पश्चात् अम्बाला से दिल्ली के लिए मुझे दूसरी बस मिल गई। करनाल पहुँच कर मैंने खाना भी खाया और

महाराज जी की कृपा से मेरी हालत में सुधार भी हो गया। प्रात: चार बजे मैं घर पहुँचा। घर पहुँच कर खबर सुनने को मिली कि पंजाब में ब्लू स्टार आप्रेशन हो गया है और पूरे पंजाब में कर्फ्यू लगा दिया गया है। तब मेरी समझ में आया कि मुझे बिपदा से बचाने के लिए ही महाराज जी ने यह रचना रची।

दास राम मोहन,
-नांगलोई, दिल्ली-

झूठ बोलने की सज़ा

पीरागढ़ी मार्किट में मेरा कपड़े का व्यापार है। अभी हाल ही की बात है कि एक व्यापारी हमारी दुकान पर चैक लेने के लिए आया। मेरी दुकान में हुजूर महाराज दर्शन दास जी की फोटो लगी हुई है। जैसे ही वह व्यापारी दुकान में आया तो मुझ से पूछने लगा कि क्या आप महाराज दर्शन दास जी के सेवक हो? मैंने हाँ में उत्तर दिया। मैंने भी उससे वही प्रश्न किया कि क्या आप भी उनके भक्त हो? उसने नहीं में जवाब दिया। आगे उसने बताया कि 1983 में मैं महाराज जी के पास एक बार गया था। जब मैं लोनी डेरे में पहुँचा तो मुझे कीर्तन-सत्संग सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसके बाद महाराज जी ने आए हुए जीवों की फरियाद सुननी शुरू की। मुझसे पहले एक औरत थी जो अपनी सास के साथ आई हुई थी। उस औरत की सास बहुत बीमार थी। उसने महाराज जी से पूछा कि महाराज जी, क्या मेरी सास ठीक हो जाएगी? महाराज जी ने प्रश्न का कोई जवाब नहीं दिया परन्तु उस औरत की सास को सरोवर साहिब में स्नान के लिए भेज दिया। जब उसकी सास स्नान के लिए चली गई तो महाराज जी ने उस औरत को बताया कि पूरे सात दिन के पश्चात् 12 बजे तुम्हारी सास परलोक पधार जाएगी और तुम्हारे लिए यह हिदायत है कि तुमने इसकी दिन-रात सेवा करनी है। तन-मन-धन से जितनी सेवा तू कर सकती है कर क्योंकि दोबारा तुझे इसकी सेवा करने का मौका नहीं मिलेगा। उसके बाद मेरी बारी आई। मुझे शारीरिक रोग था। महाराज जी ने मेरे आने का कारण पूछा। मैंने महाराज जी से अपना रोग छुपाते हुए कहा कि मैं तो आपके दर्शन करने आया हूँ। महाराज जी ने कहा कि आप झूठ बोल रहे

हो आप दर्शन करने नहीं अपितु किसी काम से आए हो। इसी तरह महाराज जी ने दो बार मेरे आने का कारण पूछा और मैं झूठ ही बोलता रहा। महाराज जी ने कहा, बेटा आज हम बहुत प्रसन्न हैं, तूँ जो माँगेगा आज हम तेरी इच्छा पूरी कर देंगे। मैंने फिर वही जवाब दिया कि मैं आपके दर्शन करने आया हूँ। महाराज जी ने कहा ठीक है परन्तु फिर भी जिस शारीरिक रोग को दूर करवाने के लिए आप यहाँ आए हो वह ठीक हो जाएगा और यह रोग जिन्दगी में आपको कभी दोबारा नहीं सताएगा। महाराज जी ने कहा जाओ-जिन्दगी में मौज लो परन्तु तुमने हम से झूठ बोला है इसलिए तुम यहाँ दोबारा नहीं आ पाओगे। उस व्यक्ति ने हमें बताया कि आज इस बात को 25 वर्ष हो गए हैं और उस रोग से मैं कभी पीड़ित नहीं हुआ परन्तु उनके वचनों के मुताबिक मैं दोबारा कभी डेरे नहीं जा सका।

-दास राजीव-
(बुद्ध विहार, दिल्ली)

रुमाल से डैडी का दर्द ठीक किया

मेरा नाम दास जसविन्दर है। मैं हरी नगर, दिल्ली का निवासी हूँ। मेरे पिता जी (दास सुरेन्द्र) की टांग में अक्सर दर्द रहता था और इसी दर्द के इलाज के तौर पर उनका आप्रेशन भी हो चुका था परन्तु फिर भी दर्द ठीक नहीं हुआ था। डाक्टरों ने मेरे पिता जी से कहा कि चोपड़ा साहिब, आपका यह दर्द ठीक नहीं हो सकता। मेरे पिता जी यह सुनकर बहुत मायूस हुए। कुछ दिनों बाद ही हमारे किसी जानने वाले ने मेरे पिता जी से कहा कि आप लोग लोनी जाओ वहाँ बाबा दर्शन दास जी का डेरा है। बाबा दर्शन दास जी अपनी रहमतों से लोगों के दु:ख-दर्द दूर करते हैं। यदि वह कृपा कर दें तो आपका यह दु:ख दूर हो सकता है।

वर्ष 1978 में मेरे मम्मी-डैडी लोनी डेरे पहली बार गए। जब मम्मी-डैडी डेरे पहुँचे तो डेरे में सेवा चल रही थी। महाराज जी भी सेवा में व्यस्त थे। मम्मी सेवकों के साथ सेवा में लग गए और डैडी एक तरफ बैठ गए। सेवा करते हुए महाराज जी की नज़र मेरे डैडी पर पड़ी तो महाराज जी ने मेरे डैडी का नाम लेते हुए कहा, "चोपड़ा जी! डाक्टर क्या कहते हैं कि तुम्हारी टांग का दर्द ठीक नहीं हो सकता? डैडी ने कहा कि हाँ बाबा जी। महाराज जी ने उनसे कहा कि कीर्तन-सत्संग के बाद हम आपसे बात करेंगे। उन दिनों सत्संग शाम के समय होता था। महाराज जी ने सत्संग किया और गद्दी भुगताने लगे। जब मेरे मम्मी-डैडी की बारी आई तो महाराज जी ने मेरी मम्मी को अपने बटुए में से रुमाल निकालने को कहा। मम्मी ने बटूए में से रुमाल निकाल लिया। महाराज जी ने कहा कि चोपड़ा साहिब के जहाँ-जहाँ दर्द होता है, वहाँ-वहाँ अपना यह रुमाल फेर दो। मम्मी ने वैसा ही किया।

फिर महाराज जी ने डैडी से कहा कि चोपड़ा जी खड़े हो जाओ और सामने वह सफेद निशान साहिब है वहाँ तक चल कर जाओ और वहाँ से वापसी में दौड़ कर आओ। मेरे डैडी की हालत चलना तो दूर, उठने की भी हिम्मत नहीं थी। मगर महाराज जी की कृपा से डैडी बग़ैर सहारा लिए सफेद निशान साहिब तक चल कर गए और दौड़ कर वापिस आए। उसके पश्चात् महाराज जी ने वचन किया कि यह रुमाल दर्द वाले स्थान पर पाँच बार फेर लेना, यह दर्द हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा। इस तरह मेरे डैडी का ला-इलाज दर्द महाराज जी ने अपनी कृपा से ठीक कर दिया। उसके बाद मेरे डैडी को दोबारा वह दर्द नहीं हुआ।

मेरे मम्मी-डैडी का महाराज जी के प्रति लगाव बढ़ गया और वे लोनी डेरे आकर सेवा करने लगे। एक दिन महाराज जी ने मेरी मम्मी की झोली में फल डालते हुए कहा कि तुम्हारे घर पुत्र होगा और जैसे-जैसे वह बड़ा होगा, तुम्हारे घर से ग़रीबी मिटती जाएगी। इस तरह महाराज जी की कृपा से मेरा जन्म हुआ। मेरा नामकरण करते हुए महाराज जी ने मेरा नाम जसविन्दर रखा और मेरी मम्मी-डैडी से कहा कि जब भी तुम्हें यह ज्ञात करना हो कि हम तुम्हें डेरे में मिलेंगे या नहीं तो इसके लिए तुम इस बच्चे से पूछ लिया करना कि हम डेरे में हैं या नहीं। यदि यह हाँ कहे तो हम तुम्हें डेरे में ही मिलेंगे और अगर यह ना कह दे तो हम डेरे में नहीं मिलेंगे।

एक बार डेरे जाने से पहले मेरी मम्मी ने मुझसे पूछ ही लिया कि क्या आज बाबा जी डेरे में हैं?तो मैंने जवाब दिया कि नहीं। मम्मी-डैडी डेरे चले गए। वहाँ पहुँच कर उन्हें महाराज जी का ड्राइवर दास बचन मिला और उसने मम्मी-डैडी को बताया कि बाबा जी आज सुबह ही इंग्लैण्ड के लिए रवाना हो गए हैं। कुछ दिनों पश्चात् जब महाराज जी वापिस आए तो मेरी मम्मी ने उन्हें सारी बात बताई तो महाराज जी ने कहा कि तुम हमारी परीक्षा ले

रहे थे। बेटा, जो कहा जाए उसे सत् वचन कहकर मान लेना चाहिए उस पर शक नहीं करना चाहिए। मेरी मम्मी को अपनी गलती का अफसोस हुआ और उन्होंने महाराज जी के चरणों में माथा टेक कर उनसे अपनी इस गलती की माफी माँगी।

दास जसविन्दर
(हरी नगर, दिल्ली)

घर का सामान गिनकर बता देना

मेरा नाम दास पुष्पा है, मैं लुधियाना की रहने वाली हूँ। मेरे पति का नाम दास कृष्ण लाल है और महाराज जी उन्हें 'लाल जी' कह कर बुलाते थे। जिस समय मेरी महाराज दर्शन दास जी से पहली भेंट हुई, उस समय मैं अपनी ननद और एक और औरत जो मेरी दूर की रिश्तेदार थी उनके साथ महाराज जी के घर बटाला गई थी। उस समय बटाला में डेरा नहीं था और महाराज जी घर पर ही सत्संग-कीर्तन करते थे। मैं तो पहली बार महाराज जी के घर आई थी जबकि वे दोनों महाराज जी से पहले भी मिल चुकी थी इसलिए जब हम घर में पहुँचे तो मैंने देखा कि उन्होंने मेरे बेटे की उम्र के एक लड़के के चरणों में माथा टेका। यह सोचकर कि यह तो मेरे बेटे की उम्र का लड़का है मैंने उसके चरण नहीं छुए। मैंने सोचा कि यह बाबा जी का बेटा होगा। उन्होंने हमें अन्दर बैठने के लिए कहा। हम लोग अन्दर कमरे में बैठ गए। हम काफी देर बैठे रहे। इस दौरान माता जी ने हमें चाय पिलाई। जब काफी समय हो गया तो मैंने अपनी ननद से कहा कि बाबा जी कब आएंगें क्योंकि मैं अपनी बेटी को घर अकेले छोड़ कर आई हूँ। मुझे जल्दी वापिस जाना है। बाबा जी कब तक आएंगें? तो उसने मुझे बताया कि भाभी जी, थोड़ी देर रूक जाओ। बाबा जी ने कहीं बाहर से नहीं आना बल्कि हमने जिन्हें माथा टेका था, वही बाबा जी हैं। मैंने कहा कि नहीं-नहीं वह बाबा जी कैसे हो सकता है वह तो मेरे बेटे की उम्र का है। वह बोली कि भाभी यही बाबा जी हैं। मैंने कहा तभी तुमने उसके चरण स्पर्श किए थे लेकिन वह बाबा कैसे हो सकता है वह तो छोटा-सा लड़का है। इतने में महाराज जी

हँसते-हँसते कमरे में आकर हमारे पास बैठ गए। महाराज जी ने मुझसे कहा, बेटा! हमारी तरफ देख। मैं अपना मुँह नीचे करके मन में सोचने लगी कि यह तो मेरे बेटे की उम्र का है और मुझे बेटा कह कर बुला रहा है। महाराज जी फिर कहने लगे, "अच्छा माता जी! हमारी तरफ देखो, अब तो हमने माता जी कहा है।" मैंने जवाब दिया कि हाँ बेटा, मेरा बेटा भी तुम्हारी उम्र का है। वे मेरे बेटे का नाम लेते हुए बोले "ओमी।"

मैंने कहा कि हाँ बेटा, उसका नाम ओमी है। फिर महाराज जी बोले, "माता जी, तो अब हम तुम्हारे घर चलें।" मैंने सोचा शायद वो हमारे साथ घर चलेंगे इसलिए मैंने हाँ कर दी। फिर महाराज जी ने कहा, "बताओ माता जी, तुम्हारे घर में तीन चारपाई बिछी हुई हैं।" मैंने हाँ में सिर हिलाया। फिर बोले, "एक चारपाई के नीचे मोटर रखी है जिससे मशीनों को रंग करते हैं और बाकी दोनों चारपाइयों के नीचे मशीनें रखी हैं। सामने वाली अलमारी में तुम्हारे बर्तन (उन्होंने बर्तनों की गिनती बता दी) रखे हुए हैं।" मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहाँ बैठे इन्हें कैसे पता लग गया कि मेरे घर में कितने बर्तन हैं। फिर महाराज जी बोले, "माता जी, तुम्हारा सारा परिवार बीमार रहता है इसलिए जल और प्रसाद ले जाओ और घर में सभी को दे देना सभी ठीक हो जाएंगें।" मैंने जल और प्रसाद यह कहकर लेने से इंकार कर दिया कि मेरे पति गुरुद्वारे को ज्यादा मानते हैं इसलिए वह मुझे गुस्सा करेंगे और मैं जल नहीं ले कर जाऊँगी। पहले मैं अपने पति को सारी बातें बताऊँगी यदि उन्हें विश्वास हो गया तो मैं उन्हें भी साथ लेकर आऊँगी। मुझे तो आप पर पूरा विश्वास हो गया है। फिर महाराज जी ने हमें घर जाने के लिए कहा। हम लोग घर वापिस आ गए। घर आकर मैंने अपने पति से कहा कि मैं आज बटाला गई थी और वहाँ अपने बेटे ओमी की उम्र का एक लड़का है जो बिल्कुल ईश्वर का रूप है और जो सभी बातें सच-सच बता

देता है। उसने मुझे वहीं बैठे-बैठे घर की सारी चीजों के बारे में बता दिया। मुझे उन्होंने प्रसाद भी दिया और मैं उसी वक़्त ठीक हो गई। मेरे पति ने कहा कि मेरे लिए भी प्रसाद ले आना था। मैंने कहा कि तुम्हारे डर के कारण मैंने जल और प्रसाद नहीं लिया। मेरे पति ने मुझे कहा कि कोई बात नहीं हम सुबह बटाला जाकर उनके दर्शन करेंगे। हम दोनों ने रात बड़ी मुश्किल से काटी। जैसे ही सुबह हुई हम दोनों बटाला की ओर चल दिए। सुबह 10 बजे के करीब बटाला पहुँच गए। जब महाराज जी के घर पहुँचे तो हमें वहाँ माता जी मिले और हमने माता जी से पूछा कि बाबा जी कहाँ हैं? (अब मैं उन्हें बाबा जी कहने लग गई थी) माता जी ने कहा कि वह कहीं बाहर गए हैं आते ही होंगे। मैंने अपने पति से कहा कि चलो तब तक हम बाजार घूम आते हैं। हम दोनों बाजार घुम कर १२ बजे महाराज जी के घर वापिस आए तो पता चला कि बाबा जी अभी तक नहीं आए। वहीं पास में ही मेरे भाई की ससुराल का घर था। हम उनके घर चले गए। वहाँ हमने खाना खाया और मैंने उन से कहा कि मासी जी मैं यहाँ बाबा दर्शन के घर आई हूँ और हो सकता है कि मुझे यहाँ रात रूकना पड़े। उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं, तुम्हारा अपना घर है तुम आराम से रह सकती हो। हम रात को फिर महाराज जी के घर पहुँचे तो माता जी से पता चला कि बाबा जी अभी भी वापिस नहीं आए हैं। अन्धेरा काफी हो गया था, हम रात को अपने रिश्तेदार के घर चले गए और वहीं रात गुज़ारी। सुबह फिर हम महाराज जी के घर पहुँचे तो माता जी ने बताया कि बाबा जी रात को भी घर नहीं आए। हो सकता है कि वो रात को सेवकों के साथ फिल्म देखने चले गए हों। माता जी की यह बात सुनकर मेरे पति मुझे कहने लगे कि बता कैसे बाबा जी हैं जो फिल्म देखते हैं। मैंने उनसे कहा कि ऐसा मत बोलो, जो तुम कह रहे हो यही बात उन्होंने तुम्हें बोल देनी है, देख लेना। वह बोले जब समय आएगा

तब देख लेंगे। फिर माता जी ने हमें कहा कि मैं देख रही हूँ कि तुम कल से उनका इंतजार कर रहे हो। ऐसा करो कि बटाला बस अड्डे के पास तुली जी का घर है, बाबा जी कई बार वहाँ चले जाते हैं आप उनके घर जाकर पता कर लो, क्या पता बाबा जी उनके घर हों? हम दोनों पूछते-पूछते जब तुली जी के घर पहुँचे तो देखा कि सामने बरामदे में महाराज जी खड़े थे। हम लोग घर के अन्दर गए तो महाराज जी हमें देख कर मुस्कुराने लगे। पहले मैंने उनके चरण स्पर्श किए, जब मेरे पति उनके चरण स्पर्श करने लगे तो महाराज जी बोले, "भाई! तूँ क्यों हमारे चरण स्पर्श कर रहा है हम कोई बाबा जी हैं? हम तो फिल्म देखने वाले हैं।" महाराज जी के इतना कहने की देर थी कि मेरे पति उनके चरणों में गिर कर रोने लगे और कहने लगे कि मुझे मेरा प्रभु मिल गया है। मैंने अपने प्रभु को ढूँढ लिया है। महाराज जी ने उन्हें उठाया और उन्हें अपने गले से लगा लिया। उसके पश्चात् महाराज जी ने हमें जल और प्रसाद दिया और कहा कि यह प्रसाद खा लेना और घर में जल के छींटे दे देना सब ठीक हो जाएगा। फिर महाराज जी ने मुझसे कहा कि माता जी दिसम्बर की 7 तारीख को हमारे जन्म दिवस का भण्डारा है। उस दिन आप जरूर आना। मैंने अपनी सहमति जताई और फिर हम दोनों पति-पत्नी महाराज जी का प्यार और आशीर्वाद ले कर घर वापिस आ गए।

जब 7 दिसम्बर का भण्डारा आया तो मैं अपनी उसी रिश्तेदार, जिसके साथ मैं पहली बार महाराज जी के घर गई थी, को साथ लेकर बटाला के लिए चली गई। महाराज जी ने पता नहीं उस दिन हमारे साथ क्या कौतुक किया कि हम दोनों सुबह 9.00 बजे से लेकर शाम के 5:00 बजे तक भूखी प्यासी बटाला में ही घूमती रही मगर हमें महाराज जी का घर नहीं मिला। थक हार कर मैंने उसे कहा कि हम ऐसा करते हैं कि सामने खेत में ट्यूब वैल चल रहा है वहाँ मुँह हाथ धोकर पानी पीते हैं और मेरे भाई

के ससुराल चलते हैं। रात होने वाली है अब हम वापिस घर भी नहीं जा सकती। वह मेरी बात मान गई और हमने उस ट्यूब वेल पर मुँह हाथ धोया पानी पीया और आगे की ओर चल दी। पर महाराज जी की ऐसी कृपा हुई कि जब हम चार-पाँच खेत पार करके आगे गए तो सामने एक मकान दिखाई दिया तो मुझे महसूस हुआ कि तुली साहिब का घर भी ऐसा ही था। हम दोनों उस घर की तरफ बढ़े तो देखा कि सामने बरामदे में महाराज जी संगत के बीच बैठे हुए थे। हमारी खुशी का ठिकाना न रहा और इस अपार खुशी में हमें यह भी याद नहीं रहा कि हम सुबह से भूखे-प्यासे हैं। महाराज जी के दर्शन करके हमारी भूख-प्यास और थकान सब मिट गई। जब हम अन्दर गए तो हमें देखकर महाराज जी बोले, "माता जी, पहुँच गए हो?" फिर अपने सेवकों से कहा कि इन्हें लंगर चखाओ क्योंकि यह सुबह से भूखी-प्यासी फिर रही हैं। हमने लंगर का प्रसाद ग्रहण किया और फिर महाराज जी ने हमें अपने पास बिठाया और बोले, "माता जी, आज रात आप यहीं रूकना और रात का मुशायरा सुनकर सुबह घर वापिस जाना।" हम दोनों ने उनकी बात मान ली। जब मैंने मुशायरे में महाराज जी द्वारा गाए हुए एक-दो गीत सुने तो मेरे मन में यह विचार आया कि बाबा जी, कैसे गीत बोल रहे हैं, (क्योंकि महाराज जी गीतों में अपने प्रभु को साजन, माहीया, प्रीतम कह कर याद कर रहे थे।) ऐसे शब्द तो हमने पहले कभी नहीं सुने। मैं यह बात अभी अपने मन में ही सोच रही थी कि उसी समय महाराज जी ने मुझे अपने पास बुलवा लिया। मैं डरती-डरती महाराज जी के पास गई और हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। महाराज जी बोले, हाँ माता! क्या बात है? मैंने कहा कि कुछ नहीं। उन्होंने कहा, नीचे बैठो हमारे पास और बताओ कि वहाँ बैठ कर क्या सोच रही थी कि माहीया-माहीया बोल रहे हैं। माही क्या होता है? मैंने जवाब में कहा कि मुझे नहीं पता? वह बोले,

"अगर तुझे पता नहीं तो क्यों कह रही थी कि क्या माहीया-माहीया बोल रहे हैं? गुरुओं के शब्द बोलो, यह क्या माहीया-माहीया गा रहे हैं? यही कह रही थी कि नहीं? मैंने 'हाँ' में सिर हिलाया। उन्होंने मुझसे फिर पूछा कि बताओ माहीया कौन है? मैंने मासूमीयत से जवाब दिया कि बाबा जी, पति को माहीया कहते हैं। मेरी बात सुनकर सारी संगत हँस दी और स्वयं महाराज जी भी खिलखिला कर हँसे। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और बोले, "बहुत भोली हो माता, पति माहीया होता है? मगर हमारे लिए तो हमारा सतगुरु, हमारा रब्ब, हमारा पीर-मुर्शिद ही हमारा माहीया है।" मैंने कहा कि अच्छा, तो आप अपने सतगुरु को माहीया कहते हो। वे बोले, "हाँ माता, हम अपने सतगुरु को माहीया कहते हैं। अब तूँ हमारे पास बैठ और हम तुझे जी-भरके माहीया सुनाते हैं।" फिर महाराज जी वही माहीया, साजन, प्रीतम वाले गीत बोलने लगे और बीच-बीच में मुझसे पूछते, "माता, सुन रही हो" और मैं 'हाँ' में जवाब देती रही। काफी रात मुशायरा होता रहा। सुबह तड़के मुशायरा खत्म हुआ और महाराज जी दूसरे कमरे में सोने चले गए। आस-पास रहने वाली संगत घर चली गई और हमारे जैसे जो दूर जाने वाले थे वे वहीं रूक गए। जब सुबह हुई और जाने से पहले हम महाराज जी से मिले और महाराज जी मुझे प्रसाद देकर कहने लगे, "जाओ माता जी, आज से तुम्हारा कारोबार चल जाएगा तुम्हारे बच्चे भी ठीक हो जाएंगे। तुम्हारे सब काम शुभ होंगे।" महाराज जी का आशीर्वाद लेकर हम घर वापिस आ गए।

उसके पश्चात् दो-तीन बार मैं महाराज जी से मिलने गई। एक दिन महाराज जी ने मुझसे कहा कि हम तुम्हारे घर जाना चाहते हैं। मैंने कहा कि बाबा जी, क्या पहले की तरह ही जाना है जैसे पहले यहीं बैठे आप जी ने हमारे घर की चीज़ें गिन दी थी। वह बोले कि नहीं अब वैसे नहीं जाना बल्कि तुम्हारे घर चरण

डालने हैं। मैंने पूछा कि कब चलना है? वह बोले कि तुम अपने पति को साथ लेकर परसों आ जाना, हम तुम्हारे साथ ही चलेंगे। मैं घर आ गई और वापिस तीसरे दिन अपने पति के साथ महाराज जी के घर पहुँच गई। वहाँ जाकर पता चला कि बाबा जी तो जलंधर गए हुए हैं। हम लोग जलंधर दास कुंदन लाल के घर पहुँचे तो वहाँ से पता चला कि बाबा जी कपूरथला चले गए हैं। हम दोनों पूछते-पूछते कपूरथला में दास ओम प्रकाश के घर पहुँच गए। हमें देखकर महाराज जी बोले, "लुधियाना से चले बटाला, बटाला से चले जलंधर और जलंधर से चले तो कपूरथला पहुँचे, आखिर तुमने हमें ढूँढ ही लिया।" मैंने कहा कि आप ही ने तो हमें बुलाया था और हमारे घर जाने के लिए कहा था इसलिए मैं आपको अपने घर ले जाने के लिए आई हूँ। वह बोले, "अच्छा माता जी, हम तुम्हारे साथ चलते हैं।" वहाँ से उन्होंने हमें कार में बिठाया और जलंधर से दास कुंदन लाल और उनकी पत्नी को साथ लिया और तकरीबन 7 बजे हमारे घर पहुँचे। घर पहुँच कर उन्होंने पूरे घर में दृष्टि डाली। हमारा सारा मकान कच्चा था और सिर्फ एक ही कमरा बना हुआ था। महाराज जी कमरे में बैठे। मैंने और मेरी बेटी ने खाना तैयार किया। सेवकों ने खाना खाया परन्तु महाराज जी ने खाना नहीं खाया। मुझसे कहा, "हम दोबारा तुम्हारे घर आएंगें तब हम खाना जरूर खाएंगें। यह हमारा वायदा है।" उसके बाद महाराज जी जाते हुए दोबारा आने की तारीख बता गए। जब वह तारीख आई तो महाराज जी हमारे घर आए और आकर उसी कमरे में जो चारपाई बिछी थी, वहीं पर लेट गए और अन्दर से कुंडी बंद कर ली। मेरी बेटी ने सब्जी बनने के लिए स्टोव पर रखी थी। मैंने उससे स्टोव बंद करने के लिए कहा कि बाबा जी तो अंदर लेट गए हैं, तूँ ऐसा कर कि अभी स्टोव बंद कर दे। सब्जी के बनने में अभी थोड़ी कसर बाकी थी। उसने स्टोव बंद कर दिया कि जब बाबा जी उठेंगे तब

स्टोव जलाकर सब्जी पका लेंगे और गर्म-गर्म परोस देंगे। तकरीबन डेढ़ घण्टे बाद महाराज जी उठे और कमरे का दरवाजा खोला और मुझे कहने लगे, "लाओ माता जी, हमारे लिए रोटी लेकर आओ।" अभी हमने रोटी भी नहीं बनाई थी और सब्जी भी पकने के लिए नहीं रखी थी इसलिए मैंने महाराज जी से कहा कि महाराज जी, अभी बनाकर लाती हूँ तो महाराज जी बोले, "माता जी, डिब्बे में तीन रोटियाँ हैं, वही ले आओ।" मैंने कहा कि अभी सब्जी भी नहीं बनी है। वह बोले, "माता जी, सब्जी भी बन गई है, बड़ी स्वाद बनी है, कटोरी में डालकर ले आओ।" मैं सुबह के बने हुए जो तीन परांठे रखे हुए थे उसमें से दो परांठे और कटोरी में सब्जी डालकर ले आई। महाराज जी ने दोनों परांठे खाने के बाद तीसरा परांठा भी मँगवा लिया और सब्जी भी मँगवाई। सारी सब्जी खत्म हो गई। महाराज जी ने अपनी कटोरी में थोड़ी सब्जी छोड़ दी और हमसे कहा कि यह सब्जी थोड़ी-थोड़ी अपने परिवार में सभी को बाँट दो। हम सभी ने वह सब्जी बाँट कर खाई। उसके बाद महाराज जी हम सभी को आशीर्वाद देकर चले गए।

महाराज जी उस दिन मेरे परिवार पर ऐसी कृपा रहमत कर गए कि मेरे परिवार का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया।

एक बार मैं 7 दिसम्बर के भण्डारे पर गई तो वहाँ महाराज जी ने मुझे सेवा देते हुए कहा कि माता जी, आपने सप्ताह में एक दिन सेवा अवश्य करनी है और आपने 6 महीने तक लगातार डेरे (उस समय तक बटाला डेरा स्थापित हो चुका था) आना है। मैंने उनके मुख से मिली इस सेवा को कबूल कर लिया। हालाँकि महाराज जी मेरी आर्थिक स्थिति से भली-भाँति परिचित थे। उन्हें मालूम था कि हमारा कारोबार बिल्कुल बंद है और मेरे पास लगातार 6 महीने तक प्रत्येक सप्ताह आने के लिए उपयुक्त रुपये नहीं थे। मगर उनके मुख से निकली सेवा को मैं इंकार न कर सकी। घर आकर मैं सोच में पड़ गई कि क्या करूँ? काफी

सोच-विचार करने के बाद मैंने अपनी बेटी से कहा कि मैं अपने घर के बर्तन बेच कर महाराज जी के डेरे जाऊँगी। मगर तू अपने पिता जी को कुछ मत बताना। उन्हें पता चल गया तो वह मुझे घर से निकाल देंगे। वैसे तो उन्हें पता नहीं चलेगा, लेकिन अगर वह बर्तनों के बारे में पूछें तो उनसे कह देना कि बर्तन गुम हो गए हैं। बच्चे गली में खाना खाकर वहीं छोड़ देते हैं और कोई न कोई उठा कर ले जाता है। इस तरह मैंने अपने घर के बर्तन बेचने आरम्भ कर दिए। पहले मैंने अपनी कटोरियाँ बेच दी, फिर गिलास बेच दिए, उसके बाद थालीयाँ बेच दी। उन बर्तनों के बदले में मैं चीनी के बर्तन खरीद लाई जो बहुत सस्ते होते थे। मेरे पति को जब चीनी के बर्तनों में खाना परोसा जाता और वे बर्तनों के बारे में पूछते तो मैं यही कहती कि बर्तन खो गए हैं। जब 6 महीने बीत गए और जब घर में एक ही पतीला बचा तो मैं उसे भी बेच कर अपनी सेवा के आखिरी सप्ताह डेरे पहुँची। पतीले के बदले में घर में एक मिट्टी की हांडी खरीद कर ले आई। जब मैं डेरे पहुँची तो मुझे देखकर महाराज जी बोले, "माता जी, अब क्या होगा?आज तो पतीला भी बेच दिया।" मैंने कहा कि फिर क्या हुआ अगर पतीला भी बिक गया। मिट्टी की हांडी है, उसमें चाय और सब्जी बना लेंगे। मेरी बात सुनकर उन्होंने मुझे गले से लगा लिया और बोले, "माता जी, आने वाले समय में तुम्हारे घर में इतने बर्तन होंगे कि तुम गिन भी नहीं पाओगी। बर्तन रख कर भूल जाया करोगी। आज उनके कहे एक-एक शब्द सच साबित हुए हैं। आज मेरे घर में बर्तनों के टोकरे भरे हुए हैं यदि कोई बर्तन गुम भी हो जाता है तो मुझे पता भी नहीं लगता। बर्तन की तो क्या, आज महाराज जी की कृपा से मेरे घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है। जो-जो उन्होंने वचन दिए वह सारे पूरे हुए हैं। उनकी कृपा रहमत आज भी मेरे घर पर बरस रही है।

दास पुष्पा
लुधियाना, पंजाब

अपनी मशहूरी से परहेज़ करना

लंदन में एक अखबार का कानूनी सलाहकार जॉन केन्ज़िट अपनी बीमारी से बहुत परेशान था। डाक्टरों ने उसे कह दिया था कि उसके दिल की तीन नाड़ियाँ बंद हो चुकी हैं। जिस कारण उसे किसी भी समय दिल का दौरा पड़ सकता है। यह उसकी खुशनसीबी थी कि उसे कहीं से महाराज दर्शन दास जी के बारे में पता चला कि बरमिंघम में एक सन्त है जो अपनी अध्यात्मिक शक्ति से दुनिया के दुःख-दर्द दूर कर देते हैं। ठीक होने की आस लेकर जॉन केन्ज़िट लंदन से बरमिंघम पहुँचा। उस दिन वीरवार का दिन था और वीरवार वाले दिन डेरे की छुट्टी होती थी। उस दिन महाराज दर्शन दास जी संगत के किसी जीव के घर जाते थे या फिर अपने अन्य जरूरी काम करते थे इसलिए उस दिन डेरे में न तो सत्संग कीर्तन होता और न ही संगत से बातचीत होती। जॉन केन्ज़िट को यह नहीं पता था कि वीरवार वाले दिन महाराज जी किसी से बात नहीं करते। वह वीरवार वाले दिन बरमिंघम डेरे के पूछताछ कार्यालय में गया और वहाँ मौजूद सेवक से कहा कि मैं महाराज जी से मिलना चाहता हूँ। पूछताछ कार्यालय में उससे पूछा गया कि क्या आज आपने उनसे मिलने का समय लिया है? उसने कहा कि नहीं। सेवक ने उससे कहा फिर आप की महाराज जी से मुलाकात सम्भव नहीं है। आप यह फोन नंम्बर लेकर महाराज जी के सैक्रेटरी को फोन करके उनसे समय लेकर फिर किसी दिन आइएगा। जॉन ने कहा कि मैं आपकी सारी बात समझ गया हूँ और आपके शब्दों का सम्मान करता हूँ परन्तु मैं बहुत दूर से आया हूँ। यदि आप हुजूर महाराज जी को एक सन्देश भिजवा

दे तो मेरी तसल्ली हो जाएगी। यदि वे मिलने से इन्कार करेंगे तो मैं फिर किसी दिन आ जाऊँगा। पूछताछ कार्यालय पर बैठे हुए सेवक ने इंटरकाम से हुजूर के कार्यालय में फोन किया और हुजूर को उस अंग्रेज के बारे में बताया। हुजूर ने उसे अपने कार्यालय में भेजने का आदेश दिया। कार्यालय में प्रवेश करते ही हुजूर ने मुस्कुरा कर उसकी तरफ देखा और अपने सैक्रेटरी से कहा कि इससे बात करे कि यह क्या चाहता है? हालाँकि हुजूर के लिए कोई भी भाषा समझना व बोलना मुश्किल न था परन्तु सन्त-महात्मा दूसरों को ही वडिआई देते आए हैं। सैक्रेटरी के पूछने पर उसने बताया कि होली मास्टर! डाक्टरों ने बताया है कि मेरी खून की तीन नाड़ियाँ बंद हो गई हैं जिस कारण मुझे कभी भी दिल का दौरा पड़ सकता है इसलिए मुझे ओपन हार्ट सर्जरी करवाने की सलाह दी गई है लेकिन मैं ऑपरेशन करवाने से डरता हूँ क्योंकि इससे मेरी जान जाने का भी खतरा है। मैं आपकी महिमा सुनकर आपके पास आया हूँ। मुझे विश्वास है कि यदि आप अपने श्री मुख से एक बार कह दोगे तो मैं ठीक हो जाऊँगा और मुझे ऑपरेशन की जरूरत नहीं पड़ेगी। महाराज जी ने कहा कि हम सारी बात समझ गए हैं और फिर हुजूर उससे अंग्रेजी में ही बात करने लगे। हुजूर ने उससे पूछा कि जॉन क्या तुम्हें पक्का विश्वास है कि मैं तुम्हें ठीक कर सकता हूँ? जॉन ने हाथ जोड़कर कहा कि हुजूर, मैंने सुना था कि आप दुनिया के दु:ख दर्द काटते हो परन्तु आज आपसे मिलकर और आपका रूप देखकर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि यदि आप कह दोगे कि मैं ठीक हो जाऊँगा तो वाकई मैं ठीक हो जाऊँगा। हुजूर ने खुशी से मुस्कुराते हुए कहा कि जॉन, यदि तुम्हें मुझ पर इतना ही विश्वास है तो तुम आज से ही ठीक होना शुरू हो जाओगे। फिर हुजूर ने एक बादाम और दो मिश्री के दाने उठा कर उसके हाथ में रखे और कहा कि इसे खा लो और कल सुबह जाकर टैस्ट करवा लेना और रिपोर्ट

लेकर मेरे पास आ जाना मेरा दावा है कि टैस्ट में तुम्हारी नाड़ियाँ खुली मिलेंगी। आज से तुम्हारा रोग मैंने समाप्त कर दिया है भविष्य में तामसिक भोजन से दूर रहना और ईश्वर को हर समय याद रखना। प्रसाद खाते ही उसे अनुभव होना शुरू हो गया कि वह ठीक होना शुरू हो गया है। जब अगले दिन उसने टैस्ट करवाए तो डाक्टर भी हैरान हो गए कि ऐसी बीमारी जिसका इलाज केवल ऑपरेशन ही है, एक दिन में कैसे ठीक हो सकती है।

जॉन ने ठीक होकर, जिस अखबार में वह काम करता था उसने हुजूर के बारे में एक विस्तृत लेख छापा। जब यह बात हुजूर तक पहुँची तो आपने उसे बहुत डाँटा और कहा कि तुम्हें हमारा प्रचार अखबार में नहीं करना चाहिए था। हम कोई दुकान खोल कर नहीं बैठे हैं। ठीक तो तुम ईश्वरीय कृपा द्वारा व अपने पूर्ण विश्वास के कारण हुए हो। ध्यान रहे कि आगे ऐसा काम नहीं करना क्योंकि हम लोगों की बीमारियाँ दूर करने नहीं आए बल्कि हम तो ईश्वर के नाम के साथ लोगों को जोड़ने आए हैं। पूर्ण सन्त-महात्मा दुनिया में कुछ देने के लिए आते हैं अपनी मशहुरी के लिए नहीं।

हुजूरी चालक-दास प्रीतम (इंग्लैण्ड)

सचखण्ड नानक धाम
इन्द्रापुरी, लोनी रोड़, लोनी,
जिला गाजियाबाद, (उ.प्र.)
फोन : 09810838598